चिकित्सा चन्द्रोदय

तीसरा भाग।

स्वास्थ्यरक्षा, हिन्दी-अँगरेज़ी [illegible]... हिन्दी-बंगला शिक्षा प्रभृति पुस्तकोंके लेखक और गुलिस्ताँ, भर्तृहरि कृत नीतिशतक, वैराग्यशतक और शृङ्गारशतक प्रभृति अनेक पुस्तकोंके अनुवादक

बाबू हरिदास वैद्य

द्वारा लिखित

—×—

प्रकाशक

२०१, हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस" में
बाबू अमीचन्द गोलछा,
द्वारा मुद्रित।
अगस्त सन् [illegible] ई०
प्रथम बार २०००
अजिल्दका ४)
सजिल्दका ५)

निवेदन।

विगत वर्ष मैंने "स्वास्थ्यरक्षा"-प्रेमियोंके तकाज़े पर तकाज़े आने से, एक घोर मुसीबतमें मुबतिला रहने पर भी, "चिकित्सा-चन्द्रोदय" के दो भाग ईश्वरका नाम लेकर लिख डाले। मुझे ज़रा भी उम्मीद नहीं थी, कि वे हिन्दी-प्रेमियोंके पसन्द आयेंगे और उन का इतना आदर होगा कि, साल भर में ही उन की कापियाँ दुष्प्राप्य हो जायेंगी और साथही अगले भागोंके लिये फिर तकाज़े होंगे। जो हुआ है, आशाके विपरीत हुआ है। मेरे जैसे एक मामूली-से-मामूली लेखककी लिखी पुस्तकों का इतना आदर होना, सचमुच ही आश्चर्य्य की बात है। मैं तो इसे आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र जी की कृपा और सहृदय हिन्दी-प्रेमियोंकी मिहरबानी का ही फल समझता हूँ।

आज जगदीशकी कृपासे पहले और दूसरों भागोंके नवीन संस्करण हो रहे हैं और तीसरा भाग तो पाठकोंकी सेवामें मौजूद ही है। इस भागके लिखनेको भी मुझे काफी समय नहीं मिला। पर प्रेमी पाठकों के सन्तुष्ट करनेके लिए, मैंने इसे लिखा और कई तरह की त्रुटियाँ रह जाने पर भी, शीघ्रही पूरा कर डाला। त्रुटियाँ यही हैं, कि इस भाग में, मैं अभ्रकभस्म, वङ्गभस्म, ताम्रभस्म, सुवर्णभस्म, लौहभस्म और मोतीभस्म प्रभृति के तैयार करने की विधि न लिख सका। यदि औरों की तरह लिखनेका नाम करना चाहता, तो आफ़त काट कर नाम कर देता; पर चूँकि यह ग्रन्थ ऐसे लोगों के लिये लिखा जा रहा है, जो आयुर्वेद से बिल्कुल कोरे हैं और ऐसे लोग बिना अच्छी तरह समझाये चिकित्सा-

सम्बन्धी बातोंको समझ नहीं सकते। इसीसे धातुओं के शोधने, मारने और फूँकनेकी विधि चौथे भाग में लिखूँगा और इस तरह लिखूँगा, कि नितान्त अनभिज्ञ सज्जन भी, बिना गुरुकी सहायताके, अनेक प्रकारके रस और धात्वादिक आसानी से तैयार कर सकेंगे।

इस भाग में अतिसार, संग्रहणी, बवासीर, मन्दाग्नि, अजीर्ण, विशूचिका, कृमिरोग, पाण्डुरोग, सोज़ाक, उपदंश और गठिया प्रभृति रोगोंके निदान, लक्षण और चिकित्सा, अपनी जान में, मैंने इस तरह लिखी है, कि अनाड़ी से अनाड़ी भी यदि इस ग्रन्थ में लिखी बातों को समझ-समझ कर कण्ठ कर लेगा, तो सहजमें इन रोगों में फँसे हुए रोगियों को रोगमुक्त कर सकेगा। साधारण या अधकचरे वैद्य, जो केवल "वैद्य-जीवन" और "अमृतसागर" ख़रीद कर चिकित्सा करने लगते और प्राणियोंको बेमौत मारते हैं, इस एक ग्रन्थको पढ़कर सफलतासे चिकित्सा कर सकेंगे। क्योंकि यह ग्रन्थ विस्तार-पूर्वक और सरल-से-सरल भाषामें लिखा गया है। चिकित्सा-सम्बन्धी ग्रन्थ जितने भी विस्तार से और जितनी भी सरल बोलचाल की भाषा में लिखे जायें, उतना ही अच्छा। मैंने चेष्टा तो ऐसी ही की है, पर मुझे इसमें कहाँ तक सफलता हुई है, इस का निर्णय स्वयं पाठक कर लें।

मैं स्वयं कोई बड़ा भारी आयुर्वेद-आचार्य्य या वैद्य-भूषण अथवा वैद्य-पञ्चानन नहीं, पर जो कुछ मुझे आता है, उस से आयुर्वेदप्रेमियोंकी सेवा करता, मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ और यही समझकर बौनेके चाँद छूने के प्रयासकी तरह दुःसाध्य साधन की चेष्टा कर रहा हूँ। मेरी उत्कट इच्छा है, कि लोग ज़रा-ज़रासी बातोंके लिए डाक्टरोंकी पाकिटें न भरें; अपने देशका धन सात समन्दर पार न भेजें। मुझे आशा है कि, भगवान् कृष्ण मेरी इस इच्छाको पूरी करेंगे। मैं तो उन्हींके बलसे इस ग्रन्थ को लिख रहा हूँ; वरन: मेरी क्या सामर्थ्य, जो आयुर्वेद महोदधिको मथन कर, उसमें से उत्तमोत्तम अमृतोपम योग प्रभृति निकाल कर सरल साँचेमें ढाल सकूँ? अपने तईं तुच्छातितुच्छ समझ कर और श्री

कृष्णचन्द्र का सहारा लेकर, जो काम आरम्भ किया जाता है, मेरी समझ में, वह पूरा हो ही जाता है। अगर आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र कृपा रखेंगें,तो चौथा भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित होगा। बहुत से पाठक अभी से पूछने लगे हैं कि, चौथे भागमें क्या होगा ; इसलिये बता देनेमें कुछ हानि नहीं। चौथे भागमें प्रमेह, राजयक्ष्मा, प्रदररोग और धातु-सम्बन्धी रोगों के निदान, लक्षण और चिकित्सा विस्तारसे लिखी जायगी ; क्योंकि आजकल १०० में ९९ पुरुषोंको प्रमेह या धातुरोग और प्रायः १०० में १०० स्त्रियोंको प्रदर रोगने घेर रखा है। पुस्तकान्तमें अनेक प्रकार की धातुओंको तैयार करने की विधि भी लिखी जायगी। जिस तरह यह तीसरा भाग वैद्य का पेशा करने वाले और न करने वाले दोनों ही तरहके सज्जनोंके काम का है; उसी तरह चौथा भाग भी प्रत्येक मनुष्य के काम का होगा।

यद्यपि इस ग्रन्थसे मेरा स्वार्थसाधन होता है,पर इससे हिन्दी जानने वालीजनताको भी बहुत कुछ लाभ हो रहा है और होगा, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। संस्कृतसे कोरे लोग, इच्छा करने से, सहज में, अच्छे वैद्य बनकर,अपना और पराया भला कर सकेंगें। जो लोग चिकित्सा करना चाहेंगे, चिकित्सा कर सकेंगे ; जो चिकित्सा न करना चाहेंगे, वे स्वयं रोगोंसे बचते हुए अपने कुटुम्बका इलाज आप कर सकेंगे और ऊँट वैद्यों या क्वैकों (Quacks)के धोखेमें न आयेंगे। साधारण लोगोंके इतना ज्ञान रखनेसे,अपढ़ और मूढ़ वैद्य बिना आयुर्वेद पढ़े चिकित्साकी मिट्टी-पलीत न कर सकेंगे। यह लाभ क्या कम है ? इन्हीं सब बातों को सामने रख कर,मैं आयुर्वेदके धुरन्धर विद्वानोंसे अतीव नम्रता-पूर्वक प्रार्थना करता हूँ,कि वे कृपाकर, मुझे इस काममें साहाय्य प्रदान करें। मेरे लिखे ग्रन्थों में जो दोष या त्रुटियाँ देखें, उन्हें पत्रों द्वारा लिख कर मुझे सूचित करें। आगामी संस्करणमें,उन उपकारी बन्धुओंके नाम सहित, भूल-सुधार कर दिया जायगा और मैं यावज्जीवन उनका आभारी रहूँगा। इस साहाय्य-प्रदानसे उन्हें स्वयं कितना पुण्य लाभ होगा, वे स्वयँ सोच सकते हैं।

मैंने इस ग्रन्थके लिखनेमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट, भावप्रकाश, वंगसेन, वृन्दवैद्यक और वैद्यविनोद प्रभृति कोई ३०।८० ग्रन्थों से सहायता ली है। प्राचीन ग्रन्थों के सिवा दो चार आधुनिक ग्रन्थोंसे भी थोड़ी-बहुत सहायता ली है। "वैद्य" मुरादाबाद और "वैद्यकल्पतरु" अहमदाबाद से भी कुछ मसाला लिया है। जिसमें "वैद्य"से तो कई मौक़ों पर ख़ासी मदद ली है; अतः मैं सभी ग्रन्थों के लेखकों और सम्पादक महोदयों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मैं अपने प्रेमी पाठकों को भी, उनकी गुणग्राहकता और क़दरदानी के लिए, धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता; क्योंकि उनके उत्साह-प्रदानसे ही मैं तीन भाग लिख सका हूं। अगर हिन्दी और आयुर्वेद-प्रेमी सज्जन इसी तरह मेरा उत्साह वर्द्धन करते रहेंगे, तो मैं इस उतरती अवस्थामें, दृष्टिदोष होने पर भी, इस ग्रन्थको पूर्ण करनेकी चेष्टा करूँगा। आशा है, इष्टदेव मेरी इच्छा पूरी करेंगे। अगर मैं इस दुनिया से विदा होने के पहले, घर घर में आयुर्वेदका प्रचार देख सकूँगा, तो मेरी प्रसन्नता की सीमा न रहेगी और मरने पर मेरी आत्मा परम शान्ति लाभ करेगी।

विनीत—

चिकित्साचन्द्रोदय

तीसरे भाग में क्या है ?

पहला अध्याय।

अतिसार।

दूसरा अध्याय।

संग्रहणी।

तीसरा अध्याय।

बवासीर।

चौथा अध्याय।

मन्दाग्नि।

पाँचवाँ अध्याय।

अजीर्ण।

छठा अध्याय।

विशूचिका—हैज़ा।

सातवाँ अध्याय।

कृमिरोग।

आठवाँ अध्याय।

पाण्डुरोग।

नवाँ अध्याय।

सोजाक।

दसवाँ अध्याय।

उपदंश।

सूचना—चिकित्साचन्द्रोदय के चौथे भाग में इनको वर्णन होगा :—

१ मूत्रकृच्छ्, २ मूत्राघात, ३ प्रमेह, ४ धातुक्षीणता, ५ वाजीकरण औषधियाँ, ६ स्त्रियों के प्रदर रोग, ७ बाँझ स्त्रियोंकी चिकित्सा, ८ बंगेश्वर, ताम्बा भस्म, अभ्रक और चन्द्रोदय—मकरध्वज प्रभृति के बनाने की सहल तरकीबें।

पहला अध्याय।

दूसरा अध्याय।

तीसरा अध्याय।

चौथा अध्याय।

पाँचवाँ अध्याय ।

छठा अध्याय ।

सातवाँ अध्याय ।

आठवाँ अध्याय ।

नवाँ अध्याय।

दसवाँ अध्याय।

श्रीकृष्णाय नमः।

चिकित्साचन्द्रोदय

तीसरा भाग।

पहला अध्याय

अतिसार-वर्णन।

अतिसार का निदान।

बहुत ही भारी, चिकने, रूखे, गरम, पतले, कड़े, शीतल, संयोगविरुद्ध, स्वभाव-विरुद्ध, देश-विरुद्ध और समय-विरुद्ध पदार्थों के खाने-पीने, भोजन पर भोजन करने, एक भोजन के बिना पचे दूसरा भोजन करने, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करने, स्नेह आदि कर्मों के अतियोग या मिथ्यायोग, स्थावर आदि विष खाने, डरने, शोक करने, ख़राब पानी पीने, अत्यन्त शराब पीने, स्वभाव और ऋतु के विपरीत आहार विहार करने, जल में बहुत देर तक रहने या खेल करने, पाख़ाना पेशाब प्रभृति वेगों को

ज़बरदस्ती रोकने और पक्वाशयको दुष्ट हुई क्रमियों—कीड़ों से मनुष्यों को "अतिसार" रोग होता है।

अतिसार की सम्प्राप्ति ।

ऊपर लिखे हुए कारणों से—रस, जल, रुधिर, मूत्र, पसीना, मेद, कफ और पित्त प्रभृति पतली धातुएँ कुपित होकर, जठराग्नि या पाचकाग्नि को मन्दी करती हैं और स्वयं मल में मिल जाती हैं। पीछे गुदा में रहनेवाली अपान वायु उनको नीचे की ओर धकेलती है; तब वे नदी के वेगकी तरह गुदा में से निकलती हैं। इन सब के इस तरह निकलने को ही "अतिसार" कहते हैं।

अतिसार के पूर्वरूप ।

जिसको अतिसार रोग होनेवाला होता है,—उस के हृदय, नाभि, गुदा, पेट और कूख में तोड़ने की सी वेदना होती है, शरीर दुखी-सा रहता है; गुदा की हवा रुक जाती है; मलावरोध हो जाता है, पेट फूल जाता है और खाया-पिया नहीं पचता। तात्पर्य्य यह है, कि अतिसार होने के पहले ये चिह्न नज़र आते हैं।

अतिसार के भेद ।

अतिसार ६ प्रकार के होते हैं :—

(१) वातातिसार	(२) पित्तातिसार
(३) कफातिसार	(४) सन्निपातातिसार
(५) शोकातिसार	(६) आमातिसार

नोट—इनके सिवा रक्तातिसार, भयातिसार, शोषातिसार, छर्दातिसार और

प्रवाहिका प्रभृति औरभी भेद हैं। रक्तातिसार में खून के दस्त आते हैं, परन्तु यह पित्तातिसारका भेद माना जाता है। भय और शोक से पैदा हुए अतिसार "आगन्तु अतिसार" कहलाते हैं। ये दोनों अतिसार वातोल्वण अतिसारों के समान होते हैं। भय और शोक से वायु शीघ्र ही कुपित होकर, इन दोनों अतिसारों को पैदा करती है। इन दोनों अतिसारों के पूर्व्व लक्षण न होने पर भी, ये यकायक पैदा हो जाते हैं। प्रवाहिका भी अतिसार का एक भेद है। प्रवाहिका और अतिसार में बहुत थोड़ा भेद है। इन सब के लक्षण हम आगे लिखेंगे।

वातातिसार के लक्षण।

"चरक" में लिखा है—वात-प्रकृति प्राणी अगर हवा और धूप में अधिक रहता है, बहुत ही शारीरिक परिश्रम करता है, बहुत ही रूखा, थोड़ा या एक ही तरह का रस सेवन करता है, सदा तेज़ शराब पीता है, अधिक मैथुन करता है और मल मूत्र आदि वेगों को रोकता है; तो उस की वायु कुपित होकर पाचक अग्नि को उपहत—नष्ट कर देती है। अग्नि के शान्त होने पर, कुपित वायु पेशाब और पसीनों को मलाशय में ले जाकर, उन्हें मल में मिला कर मलको पतला करके "अतिसार" पैदा करता है।

"माधव-निदान" में लिखा है,—वात से पैदा हुए अतिसार में कुछ-कुछ ललाई लिये, फेनयुक्त, रूखा, आम मिला हुआ काचा और थोड़ा-थोड़ा मल बारम्बार उतरता है। मल उतरते समय आवाज़ होती है और दर्द भी होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—वातातिसार वाले के पेट में दर्द चलता है, पेशाब रुक जाता है या कम होता है; आँतों में गड़गड़ आवाज़ होती है; गुदा बाहर निकलती सी जान पड़ती है; कमर, ऊरु और जाँघों में थकान सी मालूम होती है; दस्त थोड़ा-थोड़ा आता है; मल में झाग और रूखापन होता है; मल की रंगत में कलाई या श्यामता होती है और दस्त होते समय वायुकी आवाज़ भी होती है।

नोट—वातातिसार रोगी के पसीने और पेशाब, अपनी-अपनी राहों से न निकल कर, ज़ियादातर गुदा-मार्ग से ही निकलते हैं; इसी से अतिसार-रोगी को पेशाब और पसीने कम आते हैं।

पित्तातिसार के लक्षण ।

"चरक" में लिखा है,—पित्त-प्रकृति वाले प्राणी अगर खट्टे, नमकीन, कड़वे, खारी, गरम और तीक्ष्ण पदार्थों को ज़ियादा खाते हैं अथवा अग्नि, धूप और गरम हवा का ज़ियादा सेवन करते हैं और क्रोध तथा ईर्षा करते हैं; तो उनका पित्त कुपित हो जाता है। कुपित पित्त, पतलेपनके कारण, पाचक गरमी को नष्ट करके, पक्काशय में जा कर,—अपने उष्णत्व, द्रवत्व और सरत्व गुणों के कारण—मल को पतला करके, अतिसार पैदा करता है।

"माधव-निदान" में लिखा है,—पित्तातिसार में पित्त की वजह से पीला, नीला और धूसर रंग का मल उतरता है तथा प्यास, बेहोशी और दाह होता है एवं गुदा पक जाती है।

"चरक" में लिखा है,—पित्तातिसार में हल्दी सा, नीला, काला, पित्त मिला हुआ और बदबूदार मल निकलता है, प्यास लगती है, दाह होता है, पसीने आते हैं, बेहोशी होती है, शूल चलते हैं और मलद्वार यानी गुदा का पाक होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—मल बदबूदार और गरम हो, दस्त ज़ोर से हों, दस्तों का रंग पीला, नीला या लाल हो तथा वह मांसके धोवन-जैसे, छिछड़ेदार हों, पसीने आवें, मूर्च्छा और दाह हो, गुदा पक जाय और ज्वर हो—ये लक्षण पित्तातिसार के हैं।

नोट—पित्तातिसार में यदि अधिकतर पित्तकारक पदार्थ सेवन किये जाते हैं, तो घोर रक्तातिसार हो जाता है। रक्तातिसार में मल-मिले खून के दस्त होते हैं।

कफातिसार के लक्षण।

भारी, मीठे, शीतल और चिकने पदार्थों के सेवन करने, अति भोजन करने, निश्चिन्त होकर दिन में सोने और आलस्य-वश होने के कारण से, कफ-प्रकृति वाले प्राणी का कफ कुपित हो जाता है और वह अपने भारी, मधुर, चिकने और शीतल स्वभाव से "अतिसार" पैदा करता है।

"माधव-निदान" में लिखा है,—कफातिसार वाले प्राणी का मल सफेद, गाढ़ा, चिकना, कफ-मिला हुआ, बदबूदार और शीतल उतरता है तथा रोएँ खड़े हो जाते हैं।

"चरक" में लिखा है,—कफातिसार में चिकना, सफेद, लिबलिबा, ताँतूदार और थोड़ा-थोड़ा मल निकलता है। इस में प्रवाहिका, उदर, गुदा, पेड़ू प्रभृति में भारीपन, कभी-कभी बँधा मल उतरना और कभी पतला मल उतरना, रोम-हर्ष, वमन सी आंती जान पड़ना, निद्रा, आलस्य, अवसाद और अन्नद्वेष—ये लक्षण होते हैं।

"सुश्रुत" में लिखा है,—कफातिसार में तन्द्रा, निद्रा, भारीपन, जी मिचलना या मुँह में पानी आना, अग्निमांद्य, दस्त आना और फिर भी शंका बनी रहना; सफेद, गाढ़ा और कफ मिला दस्त आना; दस्तके साथ आवाज़ न होना; भोजनमें अरुचि और रोमाच; ये लक्षण होते हैं।

सन्निपातातिसार के लक्षण।

"चरक" में लिखा है,—अति शीतल, चिकनी, रूखी, गरम और कड़ी चीज़ों के खाने, विषम भोजन करने, विरुद्ध भोजन करने, अपनी प्रकृति के विरुद्ध भोजन करने, समय के बाद भोजन

करने, थोड़ा भोजन करने, खराब शराब पीने, दूषित जल पीने, बहुत शराब पीने, संचित मल को न निकालने, बारम्बार जुलाब लेने, अग्नि सूर्य और हवा तथा जल के अत्यन्त सेवन करने, बहुत सोने, न सोने, वेग रोकने, ऋतुओं के बदलने, ताक़त से ज़ियादा काम करने, डरने, शोक करने अथवा कृमि, शोष, ज्वर और बवासीर से, अति दुर्बल होने के कारण, मन्दाग्नि वालों के, तीनों दोष कुपित होकर, अग्नि को अत्यन्त नष्ट कर देते और पक्वाशय में जाकर "सब दोषों के लक्षणों वाला अतिसार" करते हैं।

"माधव-निदान" में लिखा है,—सन्निपातज अतिसार में सूअर की चरबी के समान या मांस के धोवन के जैसा एवं वात, पित्त और कफ के अतिसारों के लक्षणों वाला मल उतरता है। त्रिदोष से हुआ अतिसार कष्टसाध्य होता है।

"चरक" में लिखा है,—सन्निपात के अतिसार में रक्त आदि धातु अत्यन्त दूषित हो जाते हैं। इससे, दूषित धातुओंके स्वभावके अनुसार, अतिसार के रंगों में भेद होता है। शोणित—खून आदि धातुओंके बहुत ही बिगड़ जाने से पीला, हरा, नीला, मँजीठ के रंगका, मांसके धोवन-जैसा, लाल, काला, सफ़ेद, सूअर की चरबी के समान सफ़ेद, पीड़ा-सहित या पीड़ा-रहित, बहुत या थोड़ा मल निकलता है। कभी मल में गाँठें होती हैं और आम मिला रहता है और कभी पका हुआ मल आता है। रोगी का मांस, खून और बल अत्यन्त क्षीण हो जाता है, अग्नि मन्द हो जाती है और मुँहका ज़ायका एकदम से जाता रहता है। ऐसे रोग को "कृच्छ्रसाध्य" समझना चाहिये।

"सुश्रुत" में लिखा है,—जिस अतिसार में तन्द्रा हो, बेहोशी हो, अग्निमांद्य हो, मुखशोष हो, प्यास बहुत हो, दस्तों का रङ्ग किसी एक रङ्ग का न हो, और सब दोषों के लक्षण तथा उपद्रव हों, उसे "सन्निपात-अतिसार" कहते हैं। यह कष्टसाध्य होता है, किन्तु बालक और बूढ़े का तो यह अतिसार असाध्य ही होता है।

शोकातिसार के लक्षण।

भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्र या धन प्रभृति के नाश होने से जब मनुष्य शोक करता है, तब मनुष्य की अग्नि मन्द हो जाती है। शोक के कारण आँख, नाक और गले वगैर: से गिरने वाला जल और शोक से पैदा हुई गरमी—ये दोनों, कोठेमें जाकर, मनुष्यके खून को बिगाड़ कर, उसके स्थान से चलायमान कर देते हैं ; तब वह खून, गुदा की राह से,विष्ठा और दुर्गन्ध सहित या रहित, चिरमिटी के रङ्ग के समान लाल निकलता है, उसे ही "शोकातिसार" कहते हैं। यह शोका-तिसार बड़ी कठिनाई से आराम होता है ; क्योंकि, बिना शोक दूर हुए, केवल दवा से इसमें लाभ नहीं होता; इसी से इसको कष्टसाध्य कहते हैं।

"चरक" में लिखा है,—भय और शोक से पैदा हुए दो तरह के "आगन्तु अतिसार" होते हैं। इन दोनों के लक्षण वात-प्रधान अति-सार के लक्षणों से मिलते हैं। भय और शोक के कारण, वायु शीघ्र ही कुपित होती है। इनमें वात हरण करने वाली चिकित्सा करनी चाहिये और रोगी को प्रसन्न रखना चाहिये तथा उसे तसल्ली देनी चाहिये।

भयातिसार के लक्षण।

भय की वजह से—वात, पित्त और कफ क्षुभित होकर मल को दूषित करते हैं; तब तत्काल, विशेषकर वात और पित्त के लक्षणों वाला, गरम और पानी में तैरने वाला मल, गुदा की राहसे, प्रवाह के रूप में, बाहर निकलता है,—उसको "भयातिसार" कहते हैं। उसमें डर मिटने से रोगी सुखी होता है।

नोट—शास्त्र में लिखा है—"रागद्वेषभयाद्यैश्च ते स्युरागन्तवो गदाः।" अर्थात् राग,द्वेष और भय से जो रोग होता है, उसे "आगन्तुज" कहते हैं। इस कथन के अनुसार "भयातिसार" आगन्तुज है। इस अतिसारमें वात, पित्त और कफ मलको दूषित करते हैं और पीछे भय के कारण से ये वात, पित्त, कफ और मल चलायमान होते हैं। इस अतिसार में दुष्ट वायुका सम्बन्ध पीछे होता है, क्योंकि "भयसे वायु होती है," इस वजह से भयातिसार में वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

आमातिसार के लक्षण।

खाये हुए पदार्थों के न पचने से, चलायमान हुए वात आदि दोष, कोठे की रस रक्त आदि धातुओं और मलमूत्र आदि मलों को चलायमान करके, बारम्बार, मरोड़ी के साथ, अनेक तरह की विष्ठा गुदा के बाहर निकालते हैं,—इसी को "आमातिसार" कहते हैं। यही छठा अतिसार है।

नोट—जिस तरह भारी पदार्थ खाने आदि से दोष दूषित होते हैं ; उसी तरह आम से भी दोष दूषित होते हैं और वे ही अतिसार करते हैं ; किन्तु आम अतिसार को पैदा नहीं करता ; यानी और अतिसारों की तरह आमातिसार भी दोषों से ही होता है। फिर भी ; चिकित्सा के सुभीते के लिये "आमातिसार" अलग कहा है। सब तरहके अतिसारोंमें मल रोकनेकी दवाएँ कही गई हैं ; किन्तु इस आमातिसार में मल रोकने की दवा देने की मनाही है। आमातिसार में दस्त रोकने वाली दवा देने से संग्रहणी, अफारा, शूल, गुल्म, सूजन, उदर-रोग और ज्वरादि अनेक प्रकार के विकार पैदा हो जाते हैं। इसलिये, अतिसारका इलाज करते समय, इस बातकी जाँच अवश्य करनी चाहिये, कि आमातिसार है या पक्वातिसार है।

आमातिसार के लक्षण—वातादि दोषों से मिला हुआ मल यदि जल में डालनेसे डूब जाय तथा उस में बहुत ही बदबू हो और वह फटा हुआ हो, तो समझना चाहिये, कि अतिसार अभी आम यानी कच्चा है—पका नहीं है।

पक्वातिसारके लक्षण—अगर मल जल में न डूबे, फटा हुआ और बदबूदार न हो तथा मनुष्य का शरीर हलका हो, तो समझना चाहिये कि, अतिसार पक गया है।

रक्तातिसार के लक्षण।

पित्तातिसारवाला रोगी या पित्तातिसार होनेवाला मनुष्य, अगर अत्यन्त पित्तकारक वस्तुएँ खाता-पीता है, तो उसे भयङ्कर "रक्तातिसार" हो जाता है।

नोट—कभी-कभी, बिना पित्तातिसार के भी,अत्यन्त पित्तकारक आहार विहारों से पित्त या रक्त के कुपित होने के कारण "रक्तातिसार" हो जाता है।

प्रवाहिका के लक्षण।

अत्यन्त वातकारक पदार्थों के सेवन करने से कुपित हुई वायु, संचित कफ को मल में मिलाकर बार बार गुदा के बाहर निकालती है; तब मरोड़ी के साथ थोड़ा-थोड़ा मल निकलता है। इसे ही "प्रवाहिका" कहते हैं।

जिस प्रवाहिका में शूल चलता है, उसे वायुकी प्रवाहिका कहते हैं। यह रूखे पदार्थों के सेवन करनेसे होती है। जिस प्रवाहिका में दाह होता है, उसे पित्त की प्रवाहिका कहते हैं। यह तीक्ष्ण और गरम पदार्थों के सेवन करने से होती है। जिस प्रवाहिका में कफ की अधिकता होती है, उसे कफ की प्रवाहिका कहते हैं। यह चिकने पदार्थों के सेवन करने से होती है। जिस प्रवाहिका में खून निकलता है, उसे रुधिर की प्रवाहिका कहते हैं। यह भी, पित्तकी प्रवाहिकाकी तरह,तीक्ष्ण और गरमपदार्थोंके सेवनसे ही होती है।

नोट—प्रवाहिका अतिसार का ही एक भेद है। भेद इतना ही है कि, अतिसार में अनेक प्रकार के पतले धातु निकलते हैं और प्रवाहिका में केवल कफ निकलता है। कफ तो उपलक्षण है, पित्त और खून भी निकलते हैं। इसी को डाक्टरी में डिसेन्ट्री और हिकमत में पेचिश कहते हैं। इसमें आँव और खून के दस्त मरोड़ी देकर होते हैं; क्योंकि आँतों में घाव होने से यह रोग होता है।

अतिसार के उपद्रव।

सूजन, शूल, ज्वर, प्यास, श्वास, खाँसी, अरुचि, वमन, मूर्च्छा और हिचकी—ये अतिसार के उपद्रव हैं। जिस अतिसार-रोगी में ये सब लक्षण हों, वैद्य उसका इलाज न करे। लोलिम्बराज महोदय कहते हैं :—

तृट्श्वासकासज्वरशोफमूर्च्छाहिक्कान्नविद्वेषवान्तिशूलैः।
युक्तोतिसारी स्मरतु प्रसह्य गोविन्द दामोदरमाधवेति॥

जिस अतिसार रोगी को प्यास, श्वास, खाँसी, ज्वर, सूजन, बेहोशी, हिचकी, अन्नमें अरुचि, वमन और शूल—ये उपद्रव हों, वह हठ से हे गोविन्द, हे दामोदर, हे माधव कहे। मतलब यह है कि, ऐसा रोगी नहीं जीता।

असाध्य अतिसारों के लक्षण।

जिसका मल पकी जामुन के समान, यकृतपिंड के समान, सूक्ष्म, घी के समान, तेल-सरीखा, चरबी और मज्जा के समान, दाल के पानी के समान, दूध और दही के समान, मांस के धोवन के समान, काला नीला और लाल रङ्ग का, तरह तरह के मिले रङ्गों का, अनेक रङ्गों का, बहुत काला, चिकना, मोर की पूँछ के चँदोवे के समान, छिन्नविच्छिन्न, सघन, सड़े हुए मुर्दे की सी गन्ध के समान, मस्तक के मगज़ के समान, भारी, बदबूदार, और बहुत गरम हो तथा रोगीको प्यास, दाह, अरुचि, श्वास और हिचकी हों; पसलियों और हड्डियों में शूल-पीड़ा हो; मूर्च्छा, बेचैनी और मोह हो; गुदा की आँटें पक गये हों और रोगी बकवाद करता हो—ऐसा अतिसार-रोगी असाध्य है। ऐसे मरीज़ का इलाज वैद्य को न करना चाहिये।

* * * * *

जिस अतिसार-रोगी की गुदा मल निकलने के बाद भी बन्द न होती हो, रोगी क्षीण हो गया हो, शूल चलते हों, पेट पर अफारा हो, गुदा के पकाने वाले पित्त के रहने पर भी, शरीर शीतल हो और जठराग्नि नष्ट हो गई हो—उस रोगी का भी वैद्य को इलाज न करना चाहिये।

* * * * *

जिसके हाथ पैरोंकी अँगुलियाँ और सन्धियाँ पक गई हों, पेशाब रुक गया हो और मल अत्यन्त गरम हो,—वह रोगी मर जायगा।

* * * * *

जो अतिसार-रोगी, क्षय-रोगी और ग्रहणीरोगी मांस और अग्नि-बल से हीन हो जाते हैं, वे नहीं जीते।

* * * * *

नोट—जैसे-जैसे लक्षण ऊपर लिख आये हैं, अगर ऐसे-ऐसे लक्षण बालकों और बूढ़ों के अतिसारों में हों, तो उन अतिसारों को असाध्य समझना चाहिये। जवानोंको भी यदि, धातुओं के दुष्ट होने से, अतिसार हो ; तो उसे असाध्य समझना चाहिये।

अतिसार-मुक्त रोगीके लक्षण।

जिस मनुष्य को पेशाब करते समय दस्त न हो, अपान वायु—गुदा की हवा—साफ निकले और अग्नि दीप्त हो तथा कोठा हलका हो—उसे अतिसार से मुक्त हुआ समझो ; यानी इन लक्षणों के होने पर समझलो कि, अतिसार आराम हो गया।

अतिसार में मल-परीक्षा।

बहुतसे रोगोंमें मल-मूत्रके देखनेसे रोगका बहुत-कुछ निश्चय हो जाता है। खासकर अतिसारमें, मल-परीक्षाकी बड़ी ज़रूरत रहती है। जो वैद्य यह नहीं जानता कि, किन-किन रोगोंमें कैसे दस्त होते हैं, वह

रोगीका ठीक इलाज नहीं कर सकता। जैसे; हैज़ेमें पतले दस्त होते हैं और अतिसारमें भी पतले दस्त होते हैं। घोर अजीर्णमें भी चाँवल के धोवन-जैसे दस्त होते हैं और हैज़ेमें भी चाँवलके धोवन-जैसे दस्त होते हैं। जो वैद्य इन दस्तोंका बारीक भेद न जानता होगा, वह धोखा न खायगा तो क्या ठीक इलाज कर सकेगा? हरगिज़ नहीं। इसीसे हम नीचे दस्तोंके कुछ भेद लिख देते हैं। पाठक उन्हें अच्छी तरह समझकर याद कर लें :—

(१) अतिसार, संग्रहणी, विशूचिका, घोर अजीर्ण और कृमि-रोग प्रभृतिमें पतले दस्त होते हैं, पर इनके दस्तोंमें फ़र्क़ है।

अतिसार रोगमें मल पानी-जैसा पतला होता है और हैज़ेके भी दस्त पतले होते हैं। अतिसारके पतले दस्तोंमें मल होता है; पर हैज़ेके दस्तोंमें मल नहीं होता। अतिसारके दस्त लाल, पीले, काले, धूमले प्रभृति अनेक रङ्गोंके होते हैं; पर हैज़ेके दस्त चाँवलके धोवन के जैसे ही होते हैं। हैज़ेके दस्तोंमें मलका न होना और उनका रङ्ग चाँवल के धोवन का सा होना—यह ख़ास पहचान है।

घोर अजीर्णमें भी चाँवलोंके धोवन-जैसे दस्त होते हैं और हैज़ेमें भी वैसेही दस्त होते हैं। यद्यपि हैज़ेका पैदा करनेवाला अजीर्ण है; तो-भी, ऐसी दशामें, पेशाबसे इन दोनोंका भेद मालूम हो जाता है; यानी हैज़ेमें पेशाब, बहुधा, बन्द हो जाता है।

अतिसारमें दस्त पतले होते हैं और कृमि रोगमें भी प्रायः दस्त पतले होते हैं एवं कृमि रोगसे भी अतिसार होता है; पर कृमि रोगवालेका जी मिचलाया करता है।

अतिसारमें दस्त पतले आते हैं और संग्रहणीमें भी; पर इन दोनोंके दस्तोंमें बड़ा भेद है। संग्रहणीमें कच्चा अन्न, बिना पचे, योंका यों निकलता है। इस रोगके दस्तोंमें खूराकका कच्चा भाग रहता है। ग्रहणी नामक आँत का यह क़ायदा है, कि वह कच्चेको ग्रहण करती और पके को निकाल देती है; पर जब ग्रहणी ख़राब हो जाती है, जब ग्रहणी-रोग

हो जाता है, तब वह कच्चे अन्नको ग्रहण करती और कच्चे को ही निकाल देती है। इस रोगमें भी मरोड़ीके साथ दस्त आते हैं और बीच-बीचमें बन्द भी हो जाते हैं।

अजीर्णवालेका मल बदबूदार और ढीला होता है। पर बहुत ही बढ़े हुए अजीर्णमें मल चाँवलोंके धोवन या काँजी के समान होता है।

नोट—अलग-अलग दोषों के कोप से हुए अतिसारोंके दस्तों के लक्षण प्रत्येक प्रकारके अतिसारमें लिख आये हैं, अतः उनके फिर लिखनेकी ज़रूरत नहीं।

मरनेवाले रोगीका मल बहुत काला, बहुत सफेद, बहुत पीला, बहुत लाल या अत्यन्त गरम होता है। कोई-कोई कहते हैं, बहुत ही बदबूदार, लाल, कुछ सफेद, काला और मांसके धोवन-जैसा होता है।

जिसका मल सड़ा हुआ, बदबूदार या मोरके पङ्खके चँदोवे-जैसा होता है, वह रोगी असाध्य होता है।

नोट—काला दस्त कलेजेके रोग या पित्त के विकार से भी होता है। अनेक बार आमले, गूलर या लोह से बनी दवाओं से भी काला दस्त होता है। काला दस्त होते ही घबराना न चाहिये; बल्कि पता लगाना चाहिये, कि क्यों काला दस्त हुआ है।

रक्तातिसार में दस्तों में ख़ून आता है। बवासीर और रक्तपित्तमें भी गुदासे ख़ून गिरता है। भेद यही है, कि बवासीरमें दस्त क़ब्ज़से होता है और दस्तके पहले या पीछे धारमें ख़ून गिरता है। रक्तपित्त रोगमें भी दस्त के आगे या पीछे धार में ख़ून गिरता है; किन्तु रक्ता-तिसार में, ख़ून—आँव या मल के साथ मिल कर आता है। साफ़ शब्दोंमें यों समझिये कि, अगर दस्तके साथ मिलकर ख़ून आवे, तो रक्ता-तिसार या पेचिश समझो। अगर दस्त क़ब्ज़से हो और दस्तके आगे-पीछे ख़ून गिरे तो बवासीर समझो।

नोट—अगर दस्तोंमें ख़ून और पीव अत्यधिक गिरें, तो समझो कि कलेजा पककर आँतों में फूटा है।

अतिसार और संग्रहणीमें नाड़ी-परीक्षा।

पादे च हंसगमना करे मंडूकसंप्लवा।
तस्याग्नेर्मन्दता देहे त्वथवा ग्रहणी-गदे॥
भेदेन शान्ता ग्रहणीगदेन निर्वीर्यरूपा त्वतिसारभेदे।
विलम्बिकायां प्लवगा कदाचिदामातिसारे पृथुताजडा च॥

जिसके पाँवकी नाड़ी हंसके समान और हाथकी नाड़ी मेंडकके समान चलती है, उसके शरीरमें मन्दाग्नि या संग्रहणी रोग समझना चाहिये। संग्रहणीका दस्त होनेके बाद नाड़ी शान्तवेगा हो जाती है। अतिसार रोग में,दस्त होनेके बाद, नाड़ी सर्वथा बलहीन हो जाती है। विलम्बिका में नाड़ी मेंडक की तरह चलती है। इसी तरह आमातिसार में नाड़ी स्थूल और जड़वत् चलती है। अतिसारमें नाड़ी ऐसी मन्दी हो जाती है, जैसी शीतकाल —जाड़े—में जोंक हो जाती हैं।

नोट—नाड़ी देखने की तरकीबें और भिन्न-भिन्न रोगों और दोषों में नाड़ी की चालें कैसी होती हैं, यह विषय हमने "चिकित्सा-चन्द्रोय" प्रथम भागके पृष्ठ २०८—२२४ में खूब बढ़ा कर लिखा है। पाठक वहाँ देख लें। यहाँ हमने केवल अतिसार और संग्रहणी की नाड़ी की चाले लिखी हैं; क्योंकि आमातिसार, अतिसार और संग्रहणी तीनों दस्तों के रोग हैं, और इनमें थोड़ा-थोड़ा अन्तर है। पर ध्यान रहे, केवल नाड़ी-परीक्षासे रोग-परीक्षा हो नहीं सकती। देखिये,संग्रहणी और मन्दाग्निमें हाथकी नाड़ी मेंडक के समान चलती है, विलम्बिका और विशूचिका में भी नाड़ी मेंडकके समान चलती है। केवल मल, केवल मूत्र या दोनों ही के रुक जाने या इच्छा से रोक लेने पर भी नाड़ी मेंडककी चाल से चलती है। फिर भी; और परीक्षाओंके साथ नाड़ी-परीक्षा करना भी ज़रूरी है; इससे भी बड़ी मदद मिलती है।

डाक्टरी-मत से अतिसार के लक्षण।

डाएरिया के लक्षण।

अँगरेज़ी में अतिसार को "डाएरिया" (Diarrhœa) कहते हैं। एलोपैथी चिकित्सा में इस के चार भेद माने हैं :—

(१) फ्लौस डाएरिया*
(२) म्योकस डाएरिया
(३) सेरस डाएरिया
(४) सिम्पेथेटिक डाएरिया

पहलेमें ; पतले दस्त होते हैं, कुछ गाढ़ा और पीला मल निकलता है। दूसरे में ; गाढ़ा और पतला गाँठ लेकर मल निकलता है। तीसरे में ; पानी के समान पतले दस्त होते हैं। चौथे में ; पतले और गाढ़े भिन्न-भिन्न रंगों के दस्त होते हैं।

साधारणतया इस रोगमें दस्त होते हैं, क़य होती हैं, श्वासमें दुर्गन्ध आती है, पेट फूल जाता है और उस में पीड़ा होती है, शीत लगता है और कमज़ोरी हो जाती है। जीभ का रंग मैला सा हो जाता है।

डाएरिया के कारण।

अत्यन्त गरम खाना खाना, मिर्च वगैरः तीक्ष्ण चीज़ खाना, उपवास के बाद गरम पदार्थ खाना, क़ायदे से आहार विहार न करना, शोक और भय प्रभृति डाएरिया या अतिसारकी उत्पत्तिके कारण हैं।

बालकों को दाँत निकलने के समय, तथा गर्भवती और प्रसूता को भी यह रोग होता है।

अगर अतिसार-रोगी, पथ्य पर ध्यान न देकर, अपथ्य सेवन करता है, तो वह धीरे-धीरे दुर्बल होता जाता है, उसका चेहरा पीला हो

*इसी को वैद्यक में "पक्वातिसार" कहते हैं।

जाता है, शरीरमें सूजन आ जाती है, बेहोशी होने लगती है और जीभ सफेद हो जाती है। इस दशामें रोगीको असाध्य समझना चाहिये।

नोट—दस्तोंको शीघ्रही न बन्द करना चाहिये। अगर एकदम पतले दस्त होते हों, तो शीघ्र ही बन्द करने का उपाय करना चाहिए। चिकनी और देर में पचने वाली चीजें न खिलानी चाहियें।

डिसेण्ट्री के लक्षण।

जिसे वैद्यकमें "प्रवाहिका" कहते हैं,उसे ही अँगरेज़ीमें "डिसेण्ट्री" (Dysentry.) और हिकमत में पेचिश कहते हैं। डाक्टरों ने इसके तीन दर्जे माने हैं।

पहले दर्जे में—म्योकसमेंबर परदे में यानी बड़े आँतों में सूजन हो जाती है; इसलिये मरोड़ी होकर पतले दस्त आते हैं।

दूसरे दर्जे में—खासिडस नामक पर्देमें ज़ख्म हो जाते हैं; इसलिये उस समय आँव और खून के दस्त आते हैं।

तीसरे दर्जेमें—वही परदा स्याह और निर्बल हो जाता है; उस समय हरे पीले वग़ैरः तरह-तरह के दस्त आते हैं।

इस रोगमें—पेटमें सूई चुभानेकी सी वेदना होती है, ज़रा-ज़रा सी देर में पाखाने जानेकी इच्छा होती है, भूख बन्द हो जाती है, किसी क़दर प्यास लगती है, पेट पर अफारा आ जाता है और रोगी के शरीर में बदबू आती हैं। ये मुख्य लक्षण है।

यह रोग अगर दवा करने पर भी दिन-दिन बढ़ता ही जावे; तो असाध्य समझना चाहिये! पहले दर्जे में यह रोग सुखसाध्य रहता है, दूसरे में कष्टसाध्य और तीसरे में असाध्य हो जाता है।

डिसेन्ट्री के कारण।

अत्यन्त गरमी, गरम और खुश्क पदार्थ, कच्चे फल, कच्चे अन्न और देर से पचने वाले पदार्थ खाना, इस रोग के कारण हैं। मले-

रिया से भी यह रोग पैदा होता है। जब यह रोग मलेरियासे होता है, तब यह घर-घर में फैल जाता है।

नोट—वैद्यक में "कुटजावलेह" इसकी उत्तम दवा है। इसके सिवा और भी बहुत सी दवाएँ हैं।

हिकमत से अतिसार का बयान।

इसका हिकमत में वैद्यककी तरह बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णन है। हम नवसिखिये वैद्यों की जानकारी के लिये चन्द ख़ास-ख़ास बातें लिखते हैं। जिसे वैद्यक में "अतिसार" कहते हैं, उसे हिकमत में "इसहाल" और "इतलाक़" कहते हैं। इस रोग में बार-बार दस्त आते हैं। इसके हम तीन विभाग करते हैं :—

(१) साधारण (२) इतलाक ख़ूनी और (३) पेचिश।

साधारण इतलाक़—अतिसार में पतले दस्त आते हैं। इसे अपने वैद्यक के वातातिसार, पित्तातिसार और कफातिसार के अन्तर्गत समझना चाहिये।

इतलाक ख़ूनी को वैद्यक में रक्तातिसार कहते हैं। इसमें ख़ून के दस्त होते हैं, उनका रंग किसी क़दर लाल होता। इसको "अतिसार जिगरी" भी कहते हैं। यह अतिसार कलेजेसे होता है। असल में, इसमें माँस के धोवन-जैसे दस्त आते हैं।

पेचिश को अपने यहाँ का आमातिसार या प्रवाहिका समझना चाहिये। इस रोग में, आँतों में ज़ख़्म हो जाते हैं। ज़ख़्मों की वजह से, मरोड़ी होकर, आँव या आँव और ख़ून के दस्त होते हैं; साथ ही नाभि में दर्द भी होता है। इसे बोल-चाल की भाषा में "पेचिश" कहते हैं; पर हकीम लोग "ज़हीर" कहते हैं। यह रोग सादिक़ और क़ाबिज़ दो तरह का होता है।

नोट—अगर थोड़ा-थोड़ा दस्त हो और नाभि के नीचे दर्द हो, तो समझना

चाहिये कि, सुद्दा है। रोग के पहले, कोई कच्चा अन्न या कड़ी चीज़ खाने या कुल्की से अन्न की नाली में सुद्दा हो जाता है। ऐसी दशा में, गाय का दूध चीनी मिलाकर, दिनमें ३।४ बार, पिलाना चाहिये। अगर बारम्बार हाजत हो, पर दस्त न हो तो हुकना* या वस्ति करनी चाहिये।

जिससें अनाज के दाने अथवा इसबगोल-जैसी कोई चीज़ खाई जाय और वैसा ही मल निकले, उसे "सादिक़" कहते हैं। जिसमें अनाज के दाने मलके साथ न निकलें, उसे "क़ाबिज़" कहते हैं।

सादिक़ ज़हीर में दस्त रोकने वाली दवा देनी चाहियें, किन्तु क़ाबिज़ ज़हीर में, पहले ही, मल रोकने वाली दवा देना ख़तरे से ख़ाली नहीं। इसमें संग्राहक या क़ाबिज़ दवा देनेसे सुद्दे पड़ने और दर्द होने का डर है। वैद्यकमें भी, आमातिसारमें मलरोधक—मल रोकने वाली—दवा देना मना है।

एक यूनानी ग्रन्थ "मीज़ान तिब्ब" में लिखा है,—मेदे में विकार होने, जिगरमें ख़राबी पहुँचने और आँतोंमें गड़बड़ी होने से कितने ही प्रकार के दस्त होते हैं। हम उन सबका सविस्तर वर्णन करें, तो एक और पोथा हो जायगा; इसलिये हम अपने नौसिखिये वैद्य और गृहस्थ-भाइयोंकी जानकारी के लिए चन्द ज़रूरी बातें लिखते हैं। इन बातोंके जानने से, उन्हें रोग परीक्षा और चिकित्सामें कुछ-न-कुछ मदद ज़रूर मिलेगी।

मेदे की ख़राबी से दस्त।

(१) अगर नजला गिरने से दस्त होते हैं, तो वह सोनेके बाद होते हैं। इस दशामें, दस्त बन्द न करके, मवाद निकालना चाहिए और साथ ही नजला मिटाने और भेजे (मस्तिष्क) को पुष्ट करनेके उपाय करने चाहिएँ।

*सुद्दा=गाँठ। हुकना=गुदा में दवा की पिचकारी लगाना।

(२) अगर खाने-पीनेकी गड़बड़ी से दस्त हों, तो हलका और कम खाना खाना चाहिये। साथ ही पचावका भी उपाय करना चाहिये।

(३) अगर रगों में मवाद होने से दस्त आयेंगे, तो दस्त तो बहुत आयेंगे, पर शरीर मोटा-ताज़ा ही रहेगा—दुबला न होगा। इस दशा में फस्द खोलना, बदन मलवाना, पसीने निकालना और लङ्घन कराना अच्छा है।

(४) अगर जिगर की कमज़ोरी से सफेद या हरे दस्त हों, तो जिगर और आमाशयको पुष्ट करनेवाला पथ्य और दवा देनी चाहिये।

नोट—इस हालतमें "जवारिश मस्तगी" अच्छी है।

जिगर के बिगाड़ से ६ प्रकारके दस्त होते हैं। वे जिगरका फोड़ा फूटने, जिगरके कमज़ोर होने, खून के अधिक होने, जिगर पर गरमी पहुँचने और जिगरमें खूनके जल जाने प्रभृति कारणोंसे होते हैं। उनमें से किसी में पीप आती है, किसी में मांस के धोवन-जैसे दस्त आते हैं, किसीमें खूनके दस्त और किसीमें गाढ़ी कीच से दस्त आते हैं।

नोट—अगर जिगरी दस्त—मांस के धोवन-जैसे होते हों, तो बीजों समेत गुलके देना अच्छा है।

अगर खूनकी अधिकता से दस्त होते हों, तो जबतक कमजोरी न बढ़े, दस्त बन्द न करने चाहिएँ। आरम्भ में फस्द खोलकर थोड़ा-थोड़ा खून निकालना और हाथ पैर और छातियोंको कसकर बांध देना उचित है। अगर दस्त बन्द करनेकी जरूरत हो, तो कुर्स, कहरुवा और कुलफे के बीजोंका शीरा बारतङ्गके पानीसे बना कर देना चाहिये। भोजन हलका और थोड़ा देना चाहिये।

अगर दस्त सफरावी या पित्तके होंगे, तो जिगर पर गरमी होगी। इस दशामें, बिना मवाद निकाले, दस्त बन्द करने न चाहिएँ।

अगर जिगरमें खून या और किसी मवादके जल जाने से दस्त हों, तो सफेद चन्दन, अर्क़ गुलाबमें घिस कर, जिगर पर लगाना चाहिये और दाहिने हाथकी फस्द असीलम खोलनी चाहिये।

अगर दस्त गाढ़े कीच से हों, तो समझना चाहिये कि, या तो जिगर

का फोड़ा फूटा है या जिगरका सुद्दा खुल गया है अथवा जिगरमें मवाद जल गया है। इस दशा में भी, जबतक कमज़ोरी न बढ़े, दस्त बन्द न करने चाहिएँ ।

जिगर और मेदे या आमाशय के दस्तों का अन्तर।

जिगरी दस्तों में बड़ी बुरी दुर्गन्ध आती है। ख़ाली पेट में कम दस्त आते हैं, पीड़ा नहीं होती और रोगी हर दिन कमज़ोर होता जाता है; पर मेदे या आमाशयके दस्तों में ये लक्षण नहीं होते। लेकिन जब जिगर के दस्तों को बहुत दिन हो जाते हैं, तब मेदे से भी दस्त आने लगते हैं। उस समय मरोड़े और जिगरके चिह्न मिल जाते हैं। उस दशा में, जिगर और मेदा दोनों का, विचारकर के, इलाज करना चाहिए।

आँतों से दस्तों में ख़ून आना।

आँतोंसे दस्तोंमें ख़ून दो तरह से आता है:—(१) आँतों के छिल जानेसे, और (२)ख़ूनकी अधिकता से आँतोंकी किसी रगका मुँह खुलजानेसे।

अगर आँतों के छिल जाने का कारण पित्त होगा, तो पित्त के दस्त आयँगे और उन में छिलके निकलेंगे। इस के बाद छिलकों सहित ख़ून और आँव गिरेंगे। सारे लक्षण गरमी के पाये जायँगे।

नोट—इस हालतमें खट्टी और काबिज़—ग्राही—औषधियाँ देनी चाहिएँ। अगर मवाद ज़ियादा आने लगे, तो उसे निकाल देना चाहिये। घाव बन्द करनेको लुआब ईसबगोल, लुआब बीदाना या अन्य लसदार दवाएँ देनी चाहियें। कुलफे का शीरा गिले अरमनीके साथ पिलाना और "सफ़ूफ़ मिकलियासा" देना बहुतही मुफ़ीद है।

अगर बलग़म या कफसे दस्त होंगे, तो पहले कफ के दस्त आयँगे। बहुधा ज़ुकाम या नजले के पीछे ऐसा होता है।

नोट— इस दशामें पहले कारण को रोकना चाहिये; यानी ज़ुकाम या नजले का उपाय करना चाहिए और घाव भरनेवाली दवाएँ देनी चाहियें। जैसे रेहाँ के बीज

वारतङ्ग और बनतुलसी प्रभृति । काली हरड़ घी में भून कर कूट पीस कर छान लो और इसमें से ३ माशे वही हरड़ का चूर्ण बराबर का सफेद कन्द या मिश्री मिला रोगी को खिलाओ, यह नुसखा अच्छा है।

अगर यह रोग वात या वादी अथवा सौदासे होगा, तो दस्तोंमें मरोड़ी चलेगी एवं वादी, रुधिर और छिलके निकलेंगे।

नोट—इस दशा में पहले रोग के कारण को रोकना चाहिए। इस के बाद तिल्ली को पुष्ट करने और मवाद को नरम करने वाले बीज और चूर्ण देने उचित हैं।

अगर तिल्ली के सख़्त होने और मवाद या मल की खुश्की से रोग होगा, तो पहले क़ब्ज़ होगा और मल कड़ा निकलेगा।

नोट—इस दशा में मल को तर और नरम करने वाली दवाएँ देनी चाहिएँ। जैसे ; ईसबगोल का लुआब और शर्बत बनफशा तथा रोगन बादाम वगैरः। अगर इतने पर भी मरोड़ें न मिटें, तो काबिज़ दवाएँ देनी चाहिएँ ; परन्तु जब तक मवाद न निकल जाय, आँतें सूखे मल से रहित न हो जायँ, तब तक काबिज़ यानी दस्त रोकनेवाली दवा न देनी चाहिए।

अगर हरताल, नौसादर और चूना प्रभृति विषैली चीज़ों के खाने से मरोड़ी हो, तो वमन करानी चाहिए एवं ताज़ा दूध और हरीरा पिलाना चाहिए।

अगर जुलाब लेनेसे मरोड़ी हो जाय, तो शीतल दवाएँ देनी चाहिएँ। माठे में लोहा बुझा कर वही माठा पिलाना चाहिये अथवा चाँवलों के साथ लोहा-बुझा माठा पिलाना चाहिये।

अगर आँतों की रग के खुल जाने से खून के दस्त आते होंगे, तो उन में मरोड़े, बवासीर और जिगर के दस्तों के लक्षण न पाये जायँगे और पीड़ा भी न होगी। परन्तु पेचिश या आँव खून के, मरोड़ी के साथ लगनेवाले, दस्तों में पीड़ा अवश्य होगी।

नोट—अगर खून ज़ियादा निकल जाय और रोगीमें ताक़त हो, तो फ़सद बासलीक खोलनी चाहिये। फिर बन्द करने के लिये क़ुर्स, कहरुवा प्रभृति दवाएँ देनी चाहिएँ। गिले अरमनी पौने दो माशे—शर्बत हुब्बुल्लास या शर्बत अञ्जबार के साथ देना सब से अच्छा है। गिले अरमनी, झाऊ और अनारके छिलके—सब को बराबर-

बराबर लेकर, कूट छान कर, गोलियाँ बना लो । इनमेंसे सात माशे गोलियाँ या चूर्ण खाना इस रोग में अच्छा है । इस के सिवा पेट पर बारे लगाना भी अच्छा है । जहाँ तक हो सके, इस रोग में अफ़ीम न देनी चाहिये ।

आँतोंसे पीव आना ।

जब आँतों में मरोड़से घाव पड़ जाते हैं या पककर सूजन फूट जाती है ; तब आँतोंसे गुदा द्वारा पीव आने लगती है। ऐसा रोग होनेसे पहले पेचिश या सूजन होती है।

एक प्रकार के दस्त और होते हैं। उन में कभी आँव आते हैं और कभी आँवोंके साथ खून भी आता है। इसको ज़हीर क़ाबिज़ कहते हैं। इस रोग में ईसबगोल आदि के पिलानेसे आँव नहीं आते।

नोट—इस रोग में मल या मवाद को नर्म करनेवाली दवायें खाने और हुकने के काम में लानी चाहियें। इस रोग में गरम पानी बहुत लाभदायक साबित हुआ है। क़ाबिज़ दवाएँ देने से इस रोग में रोगी के मरने का भय रहता है। इस रोग में हुकना और ग़ाफा बहुत लाभदायक है।

अगर नीचे की आँत में, गरम सूजन से, यह रोग होता है ; तो उस जगह बोझ सा मालूम होता है। इस में कभी-कभी तप—ज्वर होता है और पेशाब कठिनाई से होता है।

नोट—इस रोग में फस्द खोलना, कमर के नीचे पछने लगाना, थोड़ा खाना और शीतल दवाएँ लेना अच्छा है ; क्योंकि इन से खून की गरमी नाश होती है।

अगर मवादका गिरना बन्द हो जाय ; तो खैरु, मेथी, बनफशा, बाबूना और करमकल्ले के पत्ते—इनको औटा कर, पेट और गुदा को धारना चाहिये। अगर वमन हो सके, तो बहुत ही अच्छा हो।

अगर गुदा में बहुत ही ज़ियादा सरदी पहुँचने से यह रोग हो, तो उसे सेकना या गरम जल से धारना चाहिये अथवा ईंट को गरम करके उस पर बैठना चाहिये और सात माशे हालों भून कर निहार पेट—ख़ाली पेट में फाँकने चाहिएँ।

अगर सवारी या किसी कड़ी चीज पर बैठनेसे यह रोग हो ; तो "रौग़न मोम" मलना चाहिये।

अगर खाली पेट में खटाई खाने से यह रोग हो गया हो, तो "मिश्री का शर्बत" पिलाना चाहिये।

अतिसार में पथ्यापथ्य।
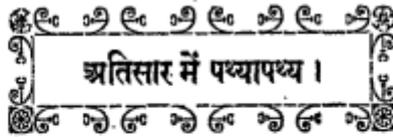
अतिसार में अपथ्य।

अतिसार-रोगी को स्नान, नदी में घुसना, तेल की मालिश, भारी और चिकने भोजन, कसरत और अग्नि का सन्ताप,-इन सबको छोड़ देना चाहिये।

अतिसार-रोगी को पसीना नहीं निकलवाना चाहिये, सुरमा प्रभृति न आँजना चाहिये, बहुत पानी न पीना चाहिये, स्नान न करना चाहिये, स्त्री-प्रसङ्ग न करना चाहिये, रातमें जागरण न करना चाहिये, हुक्का प्रभृति न पीना चाहिये, नस्य न सूँघनी चाहिये, तेलकी मालिश न करानी चाहिये, मलमूत्र आदि वेगों को न रोकना चाहिये, रूखे पदार्थ और अपनी आत्माके प्रतिकूल या विरुद्ध भोजनसे बचना चाहिये। इनके सिवा निम्न-लिखित पदार्थ भी अतिसार-रोगी को अपथ्य हैं:—गेहूँ, उड़द, जौ, बथुआ, मकोय, चौलाकी फली, कन्दोंके साग, शहत, सहँजना, आम, सुपारी, काशीफल या पेठा, तूम्बी, बेर, भारी अन्न और भारी जल, पान, ईख, गुड़, मदिरा, पोईका साग, दाख, लहसन, आमला, दूषित जल, दहीका तोड़, बासी पानी, नारियल, स्नेहन-कर्म, कस्तूरी, पत्तोंके साग—सूआ, पालक, मेथी वगैरः, चार—जवाखार, सज्जीखार आदि दस्तावर पदार्थ, ककड़ी, खीरा, नमकीन और खट्टे पदार्थ एवं क्रोध। अतिसार-रोगीको इन सबसे परहेज़ करना मुनासिब है।

नोट—यों तो अपथ्य-सेवन सभी रोगोंमें हानिकारक होता है; इधर कुपथ्य सेवन किया और उधर रोग बढ़ा; लेकिन और रोगों में कुपथ्य से कभी-कभी हानि

कम होती या देर से होती है ; पर अतिसार में इधर कुपथ्य सेवन किया और उधर तकलीफ बढ़ी। इसलिये अतिसार में अपथ्य से खूब ही बचना चाहिये।

अतिसार में पथ्य ।

वमन, लंघन, निद्रा, पुराने साँठी चाँवल, चाँवलों का यूष, खीलों का माँड, मसूर का रस, अरहर की दाल का रस, खरगोश, बबा, हिरन और सफेद तीतर का मांस-रस, सब तरह की छोटी मछलियाँ, तेल, बकरी या गाय का घी, दूध, दही और माठा तथा दही या दूध से निकाला हुआ मक्खन, नये केले का फल और फूल, शहद, जामुन, गजपीपर, अदरख, सोंठ, कटाई, कैथ, बेलगिरी, खट्टा और मीठा अनार, ताड़फल, पाढ़,चूका, भाँग, मँजीठ, जायफल,हाउ-बेर, जीरा, कुड़ेकी छाल, धनिया,बकायन, कषेले पदार्थोंके रस, अग्नि दीपक हलके अन्न और पीनेके पदार्थ, नाभिसे दो अङ्गुल नीचे और ऊपर अर्द्धचन्द्राकार दागना—ये सब अतिसारमें पथ्य या हितकर हैं।

नोट—पुराने अतिसार में दूध अमृत है। १ भाग दूध और तीन भाग पानी मिलाकर औटाना चाहिये ; जब दूध मात्र रह जाय, पिलाना चाहिये। वातविबन्ध, मलरोध, शूलयुक्त प्रवाहिका, रक्तपित्त और प्यासवाले को दूध पिलाना अच्छा है। हिकमत में भी लिखाहै, अगर थोड़ा-थोड़ा दस्त हो और नाभिके नीचे दर्द हो, तो रोगी को गाय का दूध चीनी मिलाकर पिलाना चाहिये। वैद्य को नये पुराने अतिसारका विचार करके दूध देना चाहिये। नये अतिसारमें दूध हानिकारक है, पर बहुत पुराने में लाभदायक है।

अतिसार रोग में जल ।

औटाने पर दसवाँ भाग, सोलहवाँ भाग या सौवाँ भाग रहा हुआ पानी, शीतल होने पर, पाचन, ग्राही, अग्निदीपक और दोषों के नाश करने वाला होता है। जल जितना ही औटाया जाता है, उतनाही वह ज्वर और अतिसार वाले के हक़ में अच्छा होता है।

अगर अतिसार वालेको दाह और प्यास ज़ोर से हों, तो धनिया और सुगन्धवाला को जल में औटाओ। आधा पानी रहने पर उतार लो। पीछे उसी जल को छान कर और शीतल करके रोगी को पिलाओ,इससे तृषा और दाह युक्त अतिसार में बड़ा लाभ होता है।

इसी तरह सुगन्धवाला और सोंठकी पानीमें औटाकर, आधा जल रहने पर उतार लो और छानकर तथा शीतल करके पीने को दो।

इसी तरह नागर मोथा और पित्तपापड़े का जल औटा कर पिलाओ अथवा नागर मोथा और सुगन्धवाला जलमें औटाकर, उस पानी को छानकर और शीतल करके पिलाओ।

अतिसारों में यवागू।

पक्वातिसार ।

अरलूकी छाल, प्रियंगू, मुलहटी और अनार की कोंपल—इन सब को पीसकर और दही में डालकर पतली यवागू बना कर, अतिसार वाले को दो। इससे सब तरह के पके हुए अतिसार निस्सन्देह नाश होते हैं।

वातातिसार ।

कैथा, बेल, नोनियाँ, (चाँगेरी), माठा और अनार—इनके द्वारा बनाई हुई पेया वातातिसार में हित है। पंचमूल के काढ़े से पकाई हुई पेया भी वातातिसार में हित है।

पित्तातिसार ।

चन्दन, नागर मोथा, पटोलपत्र, सुगन्धवाला और सोंठ—इनके काढ़े से पकाई हुई पेया, इमली या माठे के साथ सेवन करने से, पित्तातिसार में लाभ होता है। यह पेया पाचक और संग्राहक है। धनिया, सुगन्धवाला और पाठा—इनके काढ़े से सिद्ध किया हुआ भोजन भी पित्तातिसार में हितकारी हैं। साथ ही धनिया और

सुगन्धवाले के साथ औटाया हुआ जल देना चाहिये। पित्तातिसार में पहले लंघन कराने चाहियें, पीछे रोगी के मिज़ाज के माफ़िक़ यवागू, मंड या तर्पण देना चाहिये।

रक्तातिसार।

बकरी के एक सेर दूध में एक सेर पानी मिलाओ, पीछे उसमें सोंठ, कमल, सुगन्धवाला और पृष्ठपर्णी डालकर पेया बनाओ। इस पेया से रक्तातिसार में बड़ा लाभ होता है।

कफातिसार।

दुर्गन्ध करंज, त्रिकुटा, बेलगिरी, चीता, पाढ़, अनार और हींग-- इनके काढ़े से यूष बनाकर पीने से कफातिसार नष्ट होता है।

त्रिदोषातिसार।

शालिपर्णी, पृष्ठपर्णी, कटाई, कटेरी, खिरेंटी, गोखरू, बेलगिरी, पाढ़, सोंठ और धनिया—इनके काढ़े द्वारा पेया बनाकर सेवन करने से त्रिदोषातिसार अथवा सब अतिसारों में लाभ होता है।

वातपित्तातिसार।

लघुपंचमूल, पीपल और धनिया—इनके काढ़े से बनाया हुआ आहार वातपित्तातिसार में पथ्य है।

वातकफातिसार।

धनिया, सोंठ, नागरमोथा, सुगन्धवाला और बेलगिरी—इनका काढ़ा पाचन और दीपन है। इस काढ़े के योग से पकाया हुआ आहार वातकफातिसार में पथ्य है। धनिया और सोंठ के काढ़ेमें पकाया हुआ आहार भी वातकफातिसार वाले को हित है।

कफपित्तातिसार।

शालिपर्णी, बेलगिरी, खिरेंटी और पृश्निपर्णी—इन चारोंके काढ़ेसे

पेया बनाकर और उसमें अनार का रस तथा इमली का रस डालकर देने से कफपित्तातिसार में लाभ होता है।

भूख से हुए दस्त।

जिसे क्षुधाकी व्याकुलता से दस्त होने लगें, उसको वातनाशक दीपन औषधियों के द्वारा बनाई हुई पेया देनी चाहिये।

अतिसारमें लंघन और अन्यान्य पथ्य।

कच्चे या आम अतिसार में लङ्घन कराना सब से अच्छा है; पर लङ्घन अँधाधुन्ध न कराने चाहियें; रोगी की सामर्थ्य हो तो लङ्घन कराने चाहियें। अगर रोगी कमज़ोर हो; तो उपवास या लङ्घन न कराकर, हल्का और शीघ्र-पाकी पथ्य देना चाहिये। अल्पाहार भी लङ्घन ही है। पानी में पकाया साबूदाना, अरारूट, बारली, पानी में घोला हुआ धान की खीलोंका सत्तू और भात का माँड़,—ये सब हलके पथ्य हैं। इनके देनेसे हानि नहीं। यद्यपि अतिसार में पतली चीज़ें देना मना है, पर यवागू या उपरोक्त पदार्थों की मनाही नहीं है। आमातिसार या अपक्व अतिसार वाले को लङ्घन कराकर, यवागू या यूष प्रभृति हलके पदार्थ देने चाहियें। साथ ही आमको पचानेवाली, अग्निदीपक, मल और अन्न को पचाने और मल को रोकने वाली दवा देनी चाहिये।

कफातिसार में लङ्घन और पाचन-क्रिया करना उचित है।

नोट—हिंगाष्टक चूर्णमें हरड़ और सज्जीखार मिलाकर फँकाना कफातिसार रोगी को मुफीद है। अथवा हरड़, दारुहलदी, बच, मोथा, सोंठ और अतीस को १ पाव जलमें औटाकर १ छटांक जल रहने पर रोगी को दो।

यद्यपि अतिसारोंमें सब से अच्छा इलाज लङ्घन है, परन्तु पित्तातिसार और रक्तातिसार में लङ्घन कराना अनुचित और हानिकारक

है। इन दो के सिवा और अतिसारों में, रोगी में सामर्थ्य होने की हालत में, लङ्घन कराना सर्व्वोत्तम चिकित्सा है।

नोट—अगर लङ्घन कराने से प्यास बढ़ जाय ; तो धनियाँ, सोंठ, मोथा और पित्तपापड़ या सुगन्धवाला को जल में औटा कर शीतल कर लो और छान कर वही जल थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। अथवा धनिया और बाला—इन दो को ही जल में औटाकर पीने को दो। इस जल से प्यास, दाह और अतिसार तीनों शान्त हो जाते हैं।

पक्कातिसार में पुराने बढ़िया चाँवलों का भात, मसूर की दाल, केले की तरकारी, परवल का साग, धनिया, सफ़ेद ज़ीरा, हल्दी और सेंधानोन डाल कर दो। ज़रासा चूने का पानी डालकर दूध देना भी अच्छा है।

बहुत ही पुराने अतिसारमें केवल दूध देना ही अच्छा है। अगर पुराने अतिसार वाला चाहे तो मुरब्बा बेल, भुना हुआ कच्चा बेल, अनार, सिंवाड़े और कसेरू देना हितकारी है। इन चीज़ोंसे बल बढ़ता, तृप्ति होती और रोग भी नाश होता है। पुराने अतिसार-रोगी को ज्वर न हो; तो दही भात भी दे सकते हैं। पेचिश को तो दही भात और मिश्रीका भोजन ही, बहुधा, आराम कर देता है। पर जो पथ्य दो, वह दाह न करने वाला, हल्का और थोड़ा दो।

रक्तातिसार में बकरी का दूध बहुत ही लाभदायक है।

अतिसार की चिकित्सा में चिकित्सक के ध्यान देने योग्य बातें।

(१) अतिसार आम है या पक्क है ; यानी आमातिसार है या पक्कातिसार है, इस बात का विचार किये बिना "अतिसार" की चिकित्सा हो नहीं सकती ; अतः सभी अतिसारों में पहले इस

बात का निश्चय करना चाहिए कि, अतिसार आम है य पक्क है अर्थात् कच्चा है या पक्का।

नोट—अगर मल जलमें डालनेसे डूब जाय और फटा हुआ सा हो, तो समझना चाहिये कि, अतिसार आम—कच्चा है ; पका नहीं। अगर जल में डालने से मल न डूबे, फटा हुआ सा और बदबूदार न हो तथा रोगीका शरीर हलका हो, तो समझना चाहिये कि अतिसार पक गया।

(२) आम अतिसार वालेको शीघ्र ही दस्त बन्द करने वाली—ग्राही—औषधि न देनी चाहिये ; क्योंकि, बिना समय हुए, अपक्क या कच्चे मल को रोक देने से दण्डक, अलसक, अफारा, संग्रहणी, बवासीर, भगन्दर, सूजन, पीलिया, तिल्ली, गोला, प्रमेह, उदर रोग और ज्वरादि अनेक विकार हो जाते हैं।

नोट—यदि बालक और बूढ़ेको आम अतिसार हुआ हो, रोगी वातपित्त-प्रकृति वाले, धातुक्षीण वाले, कमज़ोर और अनेक दोषों से युक्त हों और उन के शरीरों से ढेर मल निकल चुका हो—तो ऐसे रोगियोंको,आम अतिसार होने पर भी,मल रोकने वाली—ग्राही—औषधि देकर, दस्त बन्द कर देने चाहियें ; क्योंकि ऐसे रोगी आम के पचानेवाली दवा देने से मर जाते हैं। वजह यह है, कि पाचक औषधि से और भी दस्त आते हैं और रोगी कमज़ोर हो कर मर जाता है।

(३) बलवान् अतिसार में रोगी को लंघनोंके सिवा और दवा न देनी चाहिये ; क्योंकि लंघनों से दोष शान्त होते और पचते हैं।

नोट—अगर एक ही समय में "ज्वर" और "अतिसार" दोनों पैदा हों, तो उस रोग को घोर "ज्वरातिसार" कहते हैं। यह रोग बड़ी कठिनाई से आराम होता है। इस ज्वरातिसार में लङ्घन न कराने चाहिएँ। हारीतने कहा है :—

न पित्तेन विना सोऽपि जायते शृणु पुत्रक।
तस्य नो लङ्घनं प्रोक्तं ज्वरे चैवातिसारके॥

हे पुत्र! सुन, बिना पित्तके ज्वरातिसार नहीं होता, इसवास्ते "ज्वरातिसारमें" लङ्घन कराना मना है।

(४) पूर्वरूप की अवस्था में प्रायः सभी अतिसार आम—कच्चे या अपक्क होते हैं ; इसलिये पूर्वरूप में अथवा अतिसार के आरंभ में

"लंघन" कराना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है । लंघन हो चुकने पर, हलका और पतला भोजन देना चाहिये । सुश्रुत पाचन औषधियों के योग से बनी हुई "यवागू" देने की आज्ञा देते हैं ।

नोट—पीछे पृष्ठ २५।२६ में, हम अतिसार-रोगियोंके देने योग्य "यवागू" लिख आये हैं । अगर पूर्व रूप की अवस्थामें, आम अतिसार हो और साथ ही शूल और अफारा भी हो, तो रोगी को पीपल और सेंधानोन जल में मिला कर पिलाना और वमन करानी चाहिये तथा लङ्घन आदि से उपचार करना चाहिये । वमनके बाद, हलके भोजन—पथ्यूष और यवागू में पिप्पल्यादि पाचन द्रव्यों को मिला देना चाहिये । अगर इस तरकीबसे आम न शान्त हो ; यानी न पके तो "हरिद्रादिक" या "वचादिक" क्वाथ पिलाना चाहिये ।

(५) जिसको शूल के साथ, बहुत बार, थोड़ा-थोड़ा दस्त होता हो या दोष इकट्ठे हो रहे हों, तो "हरड़" देकर मल निकाल देना चाहिये । "चरक" में लिखा है :—

> कृच्छ्रं वाबृहतान्दद्यादभयां संप्रवर्त्तिनीम् ।
> तया प्रवाहिते दोषे प्रशाम्यत्युदरामयः ॥

स्वयं निकलते हुए मल की पहले उपेक्षा कर देनी चाहिये । आमातिसार में दस्त बन्द करने वाली दवा न देनी चाहिये; क्योंकि ऐसा करने से दण्डक अलसक प्रभृति अनेक रोग होने का खटका रहता है । अगर मल कष्ट से निकलता हो, तो अन्यान्य दस्तावर दवाओं की अपेक्षा "हरड़" देना अच्छा है । इस के देने से सब दोष बह जाते हैं और पेट का रोग अच्छा हो जाता है । हरड़ और पीपल दोनों को पानी में पीस, निवाया कर, पिलाने से भी दूषित मल निकल जाता है ।

नोट—अगर रोगी को अत्यन्त पतले और बहुत से दस्त होते हों, तो आरम्भ में उसे क्य करानी चाहिये और इस के बाद लङ्घन और पाचन से काम लेना चाहिये ।

(६) जिस रोगी की अग्नि दीप्त हो और उसे वेदना—पीड़ा-रहित, बहुत दिनोंका, अनेक रंगोंवाला पका हुआ अतिसार हो,—

उसे "पुटपाक" देकर आराम करना चाहिए। ऐसे अतिसार में "पुटपाक" खूब चमत्कार दिखाता है।

नोट—"पुटपाक" किसे कहते हैं और वह कैसे बनता है,इस बातको हमारे अनेक पाठक न जानते होंगे, इसलिये हम "पुटपाक" की विधि बतलाये देते हैं :—रोग-नाशक ताज़ा दवा लाकर, सिल पर रख कर, पीस लो। पीछे गोला सा बना, उस पर बड़ या जामुन के पत्ते लपेटकर, धागों से कस दो। इसके बाद; उस गोले पर कपड़ा लपेट, उस पर दो अंगुल मिट्टी चढ़ा दो। शेष में आरने या जंगली कण्डे सिलगा कर, आग में उस कपड़-मिट्टी किये गोले को रख कर पका लो। जब वह भुरते की तरह पक कर लाल हो जाय तब निकाल कर शीतल कर लो। शीतल होने पर, मिट्टी अलग कर, गोले को एक रेजी के कपड़े में रख, ज़ोर-ज़ोर से मल और दवा कर रस निकाल लो। इसी को "पुटपाक-रस" कहते हैं। इस रसकी मात्रा ६ माशे से ३ तोले तक है। इस में शहद १० माशे मिलाया जाता है। यदि चूर्ण या अर्क प्रभृति मिलाना हो, तो ६ माशे मिलाते हैं। हम अतिसार नाशक कई पुटपाक आगे लिखेंगे। पुटपाक के सम्बन्ध में हम पहले और दूसरे भागों में भी लिख चुके हैं।

(७) "सुश्रुत" में लिखा है कि, जिस रोगीकी अपान वायु बन्द हो—हवा न खुलती हो, दस्त न होते हों या रुक-रुक कर थोड़े-थोड़े होते हों, शूल—दर्द और मरोड़े चलते हों, रक्तपित्त और प्यास हो, उस रोगी को दूध पिलाना मुनासिब है। बहुत पुराने अतिसार में "दूध" अमृत का काम करता है।

नोट—तीन भाग पानी में एक भाग दूध मिला कर खूब औटाना चाहिए। इस दूध के पिलाने से अतिसार-रोगी के शेष रहे दोष या तो निकल जाते हैं या नष्ट हो जाते हैं। अतिसार में ऐसा दूध परम पथ्य समझा जाता है। वातविवन्ध, मलरोध, शूल-युक्त प्रवाहिका, रक्तपित्त और प्यास वाले को यह दूध उत्तम है। हिकमत के ग्रन्थों में भी लिखा है—अगर थोड़ा-थोड़ा-दस्त होता हो और नाभि के नीचे पीड़ा हो, तो रोगी को गाय का दूध चीनी मिला कर पिलाना चाहिए। इस बात को भी याद रखना चाहिये कि, ऐसी हालत में, खूब साफ अरण्डी का तेल पिलाने से भी लाभ होता है। एक पाव दूध में चार या पाँच तोले अरण्डी का तेल देना चाहिये।

(८) शालपर्णी, पृश्निपर्णी, बड़ी कटेली, छोटी कटेली, खिरेंटी,

गोखरू, वेल, पाठा, सोंठ और धनिया—इन के योग से बना हुआ आहार सब तरह के अतिसारों में लाभदायक होता है। तिलों का काल्क और मूँगका यूष भी हितकारी होता है।

ज्वर और अतिसार में "यवागू" प्यास को शान्त करती, वस्ती—पेड़ू को साफ करती तथा हल्की और दीपन है।

नोट—(१) कफ-रोग और सन्निपात ज्वर के सिवा, और सभी रोगों में मूँग हितकारी है।

नोट—(२) पेट की आँतों को दुरुस्त रखने के लिये "मसूर" अच्छी चीज है। जिन को कच्चे पक्के दस्त होते हों; पेट फूला रहता हो, गुड़गुड़ शब्द होता हो और बारम्बार दर्द होता हो, उन को मसूर की दाल सेवन करना हित है।

नोट—(३) शास्त्रोंमें शूल-रोगीको दो दलों के अन्न जैसे मूँग आदि, क्षयरोगी को स्त्री-प्रसङ्ग, अतिसार-रोगी को पतले और खट्टे पदार्थ और ज्वर-रोगी को सभी पदार्थ त्यागनेकी आज्ञा है; फिर सुश्रुत वगेरः आचार्य्य अतिसार रोगीको "यवागू" क्यों दिलाते हैं, यह सवाल पैदा होता है। इसका उत्तर यह है कि. वहाँ पतले से मतलब "घी दूध आदि" से है; यवागू और यूप की मनाही नहीं है।

(९) अगर अतिसार या प्रवाहिका रोग रूखेपन से पैदा हुए हों; तो स्निग्ध—चिकनी क्रिया करनी चाहिये और अगर चिकनाईसे हुए हों, तो रूखी क्रिया करनी चाहिये।

(१०) भय से पैदा हुए अतिसार में रोगी को धैर्य या तसल्ली देकर निर्भय करना चाहिये और शोक से पैदा हुए अतिसार में शोक-नाशक क्रिया करनी चाहिये।

(११) विष, बवासीर या कीड़ों से हुए अतिसार में दोनों का इलाज करना चाहिए; यानी विष के कारण से हुए अतिसार में विष और अतिसार दोनों की शान्ति का उपाय करना चाहिए।

(१२) अगर अतिसार के साथ क्षय, मूर्च्छा—बेहोशी और प्यास वगेरः उपद्रव हों; तो ऐसी चिकित्सा करनी चाहिए, जिस से अतिसार और क्षय वगेरः सभी आराम हों। विरोधी चिकित्सा न करनी चाहिये; यानी ऐसा इलाज न करना चाहिए, जिससे एक रोग घटे तो दूसरा बढ़े।

(१३) अगर वातादिक दोष मिले हुए हों, तो ज्वर और अतिसार में पहले "पित्तका" उपचार करना चाहिए। इनके सिवा और सब रोगों में "वायु" का उपचार करना उचित है। कहा है :—

समवाये तु दोषाणां पूर्वं पित्तमुपाचरेत् ।
ज्वरे चैवातिसारे च सर्वत्रान्यत्र मारुतम् ॥

(१४) ज्वर और अतिसार में जो अलग-अलग दवाइयाँ कही गयी हैं, वे ज्वरातिसार में सेवन नहीं करानी चाहियें; क्योंकि ज्वर में कही हुई दवाएँ अतिसार को बढ़ाती और अतिसार में कही हुई ज्वर को बढ़ाती हैं। क्योंकि ज्वर नाशक दवाएँ मलको अनुलोमन करतीं और अतिसारनाशक औषधियाँ मलको रोकती हैं; इसलिये "ज्वरातिसार" में विशेष चिकित्सा से काम लेना चाहिये। ज्वरातिसार बिना पित्तके नहीं होता, अतः ज्वरातिसार-रोगी को लङ्घन न कराने चाहिएँ। ज्वरातिसार में भी शीघ्र ही मल रोकने वाली दवा न देनी चाहिए। मलके स्वयं प्रवृत्त होने पर कुछ उपेक्षा करनी चाहिये; क्योंकि अतिसारके स्वयं निःशेष होनेसे, उसके साथ ज्वर भी निःशेष हो जाता है।

(१५) पित्तातिसार में—निदान, उपशय और लक्षणों से—अगर आम का अनुबन्ध मालूम हो, तो बलानुसार लङ्घन और पाचन देना चाहिये। यदि रोगी को प्यास ज़ोर से लगती हो, तो मोथा, पित्त-पापड़ा, खसकी जड़, अनन्तमूल, लालचन्दन और नेत्रबाला—इनके साथ औटाया हुआ जल शीतल करके देना चाहिये।

पित्तातिसार-रोगीको लङ्घनके बाद, भोजनके समय, खिरैंटी, नाग-बला, मुद्गपर्णी, शालपर्णी, भटकटैया, कटेरो, शतावर और गोखरूके काढ़े से यवागू अथवा मंड आदि बनाकर देना चाहिये।

दीप्त अग्निवाले प्राणी का पित्तातिसार बहुत जल्दी आराम होता है। ऐसे मौक़े पर बकरी का दूध देने से बल और वर्ण की वृद्धि होती है।

पित्तातिसार-रोगी बलवान हो, अग्नि दीप्त हो, और दोष ज़ियादा हों; तो दूध के साथ जुलाब देना चाहिये, इससे फिर अतिसार नहीं होता।

(१६) अगर बहुत दिनों तक अतिसार के रहनेसे गुदा कमज़ोर हो जाय, तो गुदा में कोई चिकनाई लगानी चाहिए। अगर काँच निकल आवे तो सेंक वगैर: से उसे ठीक कर देना चाहिये अथवा तेल या घी की मालिश करके उसे भीतर घुसा देना चाहिये।

(१७) यद्यपि हम लिख आये हैं कि, बिना पके और बढ़े हुए अतिसारको न रोकना चाहिये; तथापि इस बात को न भूलना चाहिये कि, चीण, वृद्ध, गर्भवती और बालकके बढ़े हुए अतिसारको तत्काल रोक देना चाहिये; अर्थात सब लोगों के बिना पके—आम अतिसार को फौरनही मत रोको; किन्तु बालक, वृद्ध, चीण और गर्भवती के बढ़े हुए अतिसार को फौरन रोक दो। कहा है :—

न स्तम्भयेदतीसारमपक्वं वृद्धिमागतम्।
विना क्षीणस्य वृद्धस्य गर्भिण्या बालकस्य च।

(१८) रोगी की जीभ ज़रूर देखते रहो। जीभ से रोगी के आराम होने और आराम न होने का पता लग जाता है।

अगर जीभ पर मैला जमा हो, तो पाचन-शक्ति में गड़-बड़ी समझो। अगर जीभ बड़ी मुश्किल से बाहर निकले और फिर रोगी की इच्छानुसार भीतर न जा सके, तो समझो कि रोगी अत्यन्त निर्बल और दुखी है। अगर रोग का जोर हो और उसमें जीभ काँपे तो खतरा समझो। अगर हैजा, होजरी और फेफड़े के रोगों में जीभ का रंग शीशा-धातु के समान हो जाय, तो खराब अलामत समझो। अगर मुँह पक जाय और जीभ शीशे के रंग की सी हो जाय, तो रोगी की मृत्यु समझो। मृत्यु-समय की जीभ खरदरी, भागदार, लकड़ी-जैसी कड़ी और गति-रहित हो जाती है। संक्रामक ज्वरों; माता, होजरी, आँतों के रोगों और बहुत तेज़ चढ़े बुखार में जीभ सूख जाती है। जीभका कड़ा होना मौत की निशानी है। प्रत्येक रोग में जीभ सूख कर फिर तर होने लगे, तो समझो कि रोग आराम हो रहा है।

—:*:—

सामान्य चिकित्सा ।

अतिसार की चिकित्सा पर सामान्य नियम ।

सबसे पहले, सभी तरह के अतिसारों में, आम और पक्व अतिसार की जाँच करके दवा तजवीज करनी चाहिए। अतिसार आम—कच्चा हो तो मल रोकने वाली—ग्राही औषधि न देनी चाहिए। उधर पृष्ठ २८—३४ में लिखे हुए नियमों पर ध्यान रखकर दवा देनी चाहिये।

आमातिसार की चिकित्सा ।

पथ्यादि क्वाथ ।

(१) हरड़, दारुहल्दी, बच, नागरमोथा, सोंठ और अतीस—इन का काढ़ा आमातिसार को नष्ट करता है।

पाठादि चूर्ण ।

पाढ़, हींग, अजमोद, बच, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन सब को कूट पीस कर चूर्ण बना लो। पीछे इस को सेंधा नोन डालकर गरम जल से पीओ। इस चूर्ण से पीड़ा-सहित आमातिसार नष्ट हो जाता है।

हरीतक्यादि कल्क ।

(३) हरड़, अतीस, हींग, कालानोन, बच और सेंधानोन—इन

सबको एकत्र पीस कर लुगदी सी बना लो। इस लुगदी को गरम जल के साथ पीने से आम पकता और अतिसार नाश हो जाता है। अगर इस नुसखे से आमातिसार शान्त न हो, तो फिर सैकड़ों योगों —नुसखों से भी नाश होना कठिन है। इसको "हरीतक्यादि कल्क" कहते हैं। परीक्षित है।

वत्सादि क्वाथ ।

(४) इन्द्रजौ, अतीस, बेलगिरी, नागरमोथा, सुगन्धवाला और कचूर,—इनका काढ़ा बहुत दिनों के आमातिसार तथा रुधिर-विकार और शूल को नाश करता है।

शुंण्ठी पुटपाक ।

(५) सोंठ को अरण्ड के रस में पीस कर गोला सा बना लो। पीछे उस गोले पर बड़ या जामुन के पत्ते लपेट कर सूत से मज़बूती के साथ कस दो। इसके बाद उस पर कपड़ा चढ़ा, दो अङ्गुल मट्टी चढ़ा दो और धूप में सुखा लो। पीछे जङ्गली या आरने कण्डे जला कर, उनके अङ्गारों में उस गोले को रख कर, भुरते की तरह पका लो। जब वह गोला पक जाय, निकाल लो। शीतल होने पर, उसे फोड़ कर, लुगदी को निकाल लो और मोटे गज़ी के कपड़े में रख कर रस निकाल लो अथवा योंही पीस कर सेवन करो। इससे आमातिसार और शूल नष्ट हो जाता है। यह पाचन और अत्यन्त दीपन है।

नोट—पुटपाक रस की मात्रा ६ माशे से तीन तोले तक की है।

धान्यादि पञ्चक क्वाथ ।

(६) धनिया, सुगन्धवाला, बेलगिरी, नागर मोथा और सोंठ—इन पाँचों का काढ़ा आम, शूल और विबन्ध को नाश करता तथा पाचन और दीपन है।

नोट—अतिसार नाश करने में यह क्राथ बहुत ही उत्तम है। इसी के सम्बन्ध में रसिक शिरोमणि अद्वितीय विद्वान् पण्डितवर लोलिम्बराज महोदय कहते हैं :—

अयि प्रिये प्रीतिभृतां मुरारौ,
किं बालक श्रीधनधान्य विश्वैः।
यस्याप्यतिसार रुजो न तस्य
किं बालक श्री धनधान्य विश्वैः॥*

हे प्यारी! जो श्रीकृष्ण से प्रीति रखते हैं, उन्हें पुत्र, लक्ष्मी, धन, धान्य और संसारी जाल से क्या मतलब? इसी तरह जिन्हें अतिसार रोग नहीं है, उन्हें नेत्र-वाला, बेलगिरी, नागरमोथा, धनिया और सोंठ से क्या प्रयोजन; यानी जिन्हें अतिसार हो, वे इन्हें सेवन करें। इन औषधियों से अतिसार आराम होता है।

धान्यादि चतुष्क क्राथ

(७) धनिया, सुगन्धवाला, बेलगिरी और नागरमोथा—इन चारों का काढ़ा, पित्त की अधिकता में, देने से खूब लाभ होता है। अगर खूनी अतिसार हो और रुधिर का धर्म पित्त के समान हो, तो-भी यही काढ़ा देना चाहिये।

नोट—पित्तातिसार पर यह काढ़ा बहुत अच्छा है।

गरीबी नुसखे।

(८) सोंठ, मिर्च, पीपर, हींग, बच, कालानोन और हरड़—इन का चूर्ण, गरम जल के साथ, लेने से आमातिसार नष्ट होता है।

* * * * *

(९) बच, बेलगिरि, पीपल, सोंठ, पटोल-पत्र, कूट, अजवायन और बायविडङ्ग—इन सबको एकत्र पीस कर, गरम जल के साथ, पीने से आम नष्ट होता है।

---

* इस श्लोक की खूबी को मुलाहिज़ा फरमाइये। पहली पंक्ति में बालक=पुत्र। श्री=लक्ष्मी। धन=दौलत। धान्य=धान्य। विश्व=संसार या प्रपञ्चजाल। दूसरी लाइन में वही बालक=नेत्र वाला। श्री=बेलगिरी। धन=मोथा। धान्य=धनिया। विश्व=सोंठ।

*   *   *   *   *

(१०) कची और भुनी हुई सोंठ—अरण्ड के रस में पीस कर—, खाने से आमातिसार मय शूल के नाश हो जाता है। इसी को पुट-पाक की विधि से पका कर भी खाते हैं।

नोट—सोंठ के पुटपाक की विधि उधर पृष्ठ ३६ में लिखी है।

पक्कातिसार की चिकित्सा।

समंगादि चूर्ण ।

(११) लजवन्ती—छुईमुई, धायके फूल, मँजीठ और लोध—इन चारों के चूर्ण की एक मात्रा, शहत में मिला, चाँवलों के धोवन के साथ, सेवन करने से पक्कातिसार नष्ट होता है।

नोट—तीन तोले साफ किये हुए पुरानों चाँवलों को अधकचरा कर, पाँच छटाँक शीतल जल में, रात के समय, मिट्टी के बासन में भिगो दो ; सवेरे मल छान कर जल निकाल लो और चाँवल फेंक दो। यही 'चाँवलों का धोवन" या "तंडुल-जल" है। ज़रूरत होने से, यह जल एक घण्टा मात्र चाँवल भिगोने से भी तैयार हो जाता है।

शाल्मली वेष्टकादि चूर्ण ।

(१२) मोचरस, लोध, अनार के फल की छाल और अनार के वृक्ष की छाल—इन चारों का चूर्ण, शहत में मिला, चाँवलों के धोवन के साथ, लेने से पक्कातिसार नाश होता है।

आम्रास्थादि चूर्ण ।

(१३) आम की गुठली की मींगी, लोध, बेलगिरी और फूल-प्रियंगू—इन चारों का चूर्ण, शहत में मिला, चाँवलों के धोवन के साथ, लेने से पक्कातिसार नाश होता है।

(१) गंगाधर क्वाथ

(१४) जल-चौलाई, अनार के पत्ते, जामुन के पत्ते, सिंघाड़े के पत्ते, सुगन्ध वाला, नागरमोथा और सोंठ—इन सब का काढ़ा पीने से गङ्गा के समान बहता हुआ अतिसार भी आराम हो जाता है ।

(२) गंगाधर चूर्ण

(१५) मोचरस, नागरमोथा, सोंठ, पाढ़, सोनापाठा और धाय के फूल—इन छै दवाओं को कूट पीस चूर्ण बना, मथित* के साथ, लेने से अत्यन्त वेग से होने वाले दस्त भी बन्द हो जाते हैं ।

(३) गंगाधर चूर्ण ।

(१६) नागरमोथा, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, धाय के फूल, और लोध—इन छै दवाओं का चूर्ण गुड़ में मिला, मथित* नामक माठे के साथ, सेवन करने से गंगा के समान वेगवाला अतिसार भी आराम हो जाता है ।

(४) वृद्ध गंगाधर चूर्ण ।

(१७) नागरमोथा, सोनापाठा, सोंठ, धाय के फूल, लोध, सुगन्धवाला, बेलगिरी, मोचरस, पाढ़, इन्द्रजौ, कुड़े की छाल, आम की गुठली, लजवन्ती और अतीस—इन १४ दवाओं का चूर्ण, शहद में मिला, चाँवलों के धोवन के साथ, लेने से अतिसार, प्रवाहिका और संग्रहणी,—ये तत्काल आराम होते हैं । यह चूर्ण गंगा के समान बहते हुए दस्तों को भी रोक देता है ।

अंकोल कल्क ।

(१८) अङ्कोल की जड़ पीसकर चाँवलों के जल और शहद के

* जो दही काड़े में छान लिया जाता है और जिसमें जल नहीं मिलाया जाता, उसे "मथित" कहते हैं ।

साथ पीने से अतिसारका वेग उसी तरह आराम हो जाता है, जिस तरह पुल से जल का प्रवाह रुक जाता है ।

कुटजाष्टकावलेह ।

(१८) कौरैया की जड़ की छाल ताज़ा ५ सेर लाकर १६ सेर जल में काढ़ा करो। जब दो सेर जल रह जाय, तब छान कर फिर आग पर चढ़ा दो। जब पानी पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, उसमें पाढ़, सेमर का गोंद, धाय के फूल, नागर मोथा, अतीस, लजवन्ती और नरम वेलगिरी—इन सब का चार-चार तोले चूर्ण डाल कर अवलेह बना लो।

सेवन विधि—इस अवलेहको पानी, गायके दूध या बकरीके दूध अथवा चाँवलों के माँड़ के साथ देने से अतिसार, संग्रहणी, रक्तप्रदर, रक्तपित्त और खूनी बवासीर—ये रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—औषधियों के काढ़े या फाँट को छानकर, फिर आग पर औटाने से जो रस तैयार होता है, उसे 'अवलेह' या 'लेह' कहते हैं। अवलेहकी मात्रा ४ तोलेकी है। पर आज-कल वैसे बलवान आदमी कम हैं। अतः ६ माशे से २ तोले तक की मात्रा ठीक है। इसमें अगर खाँड़ डालनी हो; तो चूर्णसे चौगुनी और अगर गुड़ डालना हो; तो दूना डालना चाहिये। दूध, ईखका रस,पञ्चमूलके काढ़ेका यूष, और अडूसे का काढ़ा—ये अवलेहके अनुपान हैं। जैसा रोग हो,वैसाही अनुपान देना उचित है;

अवलेह ठीक पका या नहीं, इस की पहचान यही है कि, उसमें ताँतू से छूटते हैं और पानी में डालने से डूब जाता है; अँगुलियों से दबाने पर कड़ा और चिकना मालूम होता है। इस में एक और ही तरह की अपूर्व गन्ध, वर्ण और स्वाद हो जाता है।

आमलों की आलवाल ।

(२०) रोगी को लिटाकर, आमलों को जल के साथ सिल पर पीस कर लुगदी सी बना लो। उस लुगदी का रोगी की नाभि के चारों ओर थामला या घेरा सा बना दो। पीछे उस घेरे में तत्काल अदरख का रस भर दो। इस उपाय से नदी के समान दुर्जय अतिसार भी आराम हो जाता है।

कुटज पुटपाक ।

कीड़ों की न खाई हुई, कच्ची और मोटी कुरैया की आधा पाव ताज़ा छाल ले, सिल पर रख, चाँवलों के धोवन में घोट, गोला सा बना लो। फिर उस गोले पर जामुन के पत्ते लपेट कर उसे डोरोंसे कस दो। इसके बाद उस पर गेहूँ का सना हुआ आटा लपेट दो और इसके भी बाद उस पर दो अँगुल मोटी तह मिट्टी की चढ़ा दो और आरने या जङ्गली कण्डों की आग तैयार कर, उसीमें उस गोले को रख कर, भुरते की तरह पकाओ। जब पक कर गोला कुछ सुर्ख़ हो जाय (बहुत लाल न हो), आग से निकाल, शीतल कर, गोले को फोड़ कर, मिट्टी और आटा वगैरः दूर करके, उसे मोटे गज़ी के कपड़े में रख, ज़ोर से निचोड़ लो। यह "कुटज पुटपाक" सब तरह के अतिसारों पर प्रधान औषधि है। हमारा अनेक बार का का परीक्षित है। १०० में ८० को आराम करता है। मात्रा जवान की ६ माशे से दो तोले तक की है। एक मात्रा में थोड़ा सा "शहद" डालकर पीना चाहिये।

बेलका पुटपाक ।

(२२) ऊपर की तरह, आधपाव बेलगिरी लेकर, चाँवल के धोवन में कूट पीस, गोला बना, बड़ या जामुन के पत्ते लपेट, डोरे से बाँध, दो अङ्गुल मिट्टी चढ़ा, धूप में सुखा लो और ऊपर की विधि से आरने कण्डों में पका लो। पीछे आग से निकाल, मिट्टी अलग कर, कपड़े में रस निचोड़ लो। इसकी मात्रा जवान को २ से ३ तोले तक है। एक मात्रा में चार या पाँच माशे "मोचरस" मिला कर, दोनों समय, सवेरे-शाम, सेवन करने से दुःसाध्य अतिसार भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

वत्सकावलेह ।

(२२) पहले ताज़ा उत्तम कुड़े की छाल साढ़े बारह सेर लाकर,

चौंसठ सेर जल में, क़लईदार कड़ाही में,औटाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। फोक को फेंक दो और छने हुए जल को फिर उसी कड़ाही में चढ़ा औटाओ। औटते समय उस में नागरमोथा, जवाखार, विड़नोन, इन्द्रजौ, संचर नोन, सेंधानोन, धायके फूल और पीपर—इन आठों में से प्रत्येकके दो दो तोले पिसे-छने चूर्णको मिला दीजिये। जब गाढ़ा होकर कलछी के लगने लगे, उतार लो और शीतल होने पर "शहद" मिला कर रख दो। इसकी मात्रा जवान के लिये १ तोले की है। इसके सेवन से दुःसाध्य अति-सार, मरोड़ी, बवासीर, संग्रहणी, भगन्दर, श्वास, प्रमेह और वमन प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं। यह भी परीक्षित है।

दाड़िम पुटपाक ।

(२४) साबत अनार पर बड़ के या जामुन के पत्ते लपेट कर डोरे से बाँध दो और ऊपर से दो दो अङ्गुल मिट्टी लपेट कर सुखा लो। पीछे जङ्गली कण्डों की आग में उसे पकाओ। जब पक जाय, निकाल कर शीतल कर लो और मिट्टी दूर कर, उसको कपड़े में रख, ज़ोर से दबा-दबा कर रस निचोड़ लो। इस रस में "शहत" मिला कर पीने से सब तरह के अतिसार, आम के दस्त, खून के दस्त, पतले दस्त और बदबूदार दस्त सभी आराम हो जाते हैं। मात्रा २ से ३ तोले तक है। शहद ६ माशे से १० माशे तक मिलाना चाहिये।

छिन्नादि क्वाथ

(२५) गिलोय, पाठा, खस, बेलगिरी, नागरमोथा, नेत्रवाला, सोंठ, पद्माख, लाल चन्दन, कुड़े की छाल, धनिया, चिरायता और अतीस—इन दवाओं का काढ़ा, शीतल करके, पीने से ज्वर, प्यास, अरुचि, दाह, ग्लानि, उबकाई, मरोड़ी और सूजनयुक्त अतिसार आराम होता है।

नोट—यह नुसख़ा परीक्षित है। पर हमने ऐसे ही रोगियों को दिया था, जिन को अतिसार के सिवा ज्वर, सूजन और दाह प्रभृति उपद्रव भी थे।

लौह पर्पटी ।

(२६) शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गंधक १ तोला और लौह-भस्म १ तोला तैयार रखो।

पहले पारे और गन्धकको घोटकर कज्जली बनाओ। पीछे उसमें लोह-भस्म मिला दो और घोटो। इसके बाद उस घुटी हुई कज्जली को, लोहेकी छोटीसी कड़ाहीमें डालकर, मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब वह लेई सी हो जाय, उसे गरम-गरम ही केलेके पत्ते पर फैलादो और ऊपरसे दूसरा केलेका पत्ता रखकर दबा दो और गोबर से ढक दो। दो घण्टे बाद, गोबर और ऊपरका पत्ता हटा, पापड़ी सी उठालो। यही "लौह-पर्पटी" है। मात्रा ४ चाँवलकी है; धीरे-धीरे मात्रा एक रत्ती तक बढ़ा सकते हो। अनुपान शीतल जल या धनिया अथवा ज़ीरेका काढ़ा। समय,—सवेरे शाम। इससे संग्रहणी, अतिसार और मन्दाग्नि —ये रोग नाश होते हैं।

स्वर्ण पर्पटी

(२७) हिङ्गलूसे निकाला पारा या शुद्ध पारा १ तोला, शुद्ध गन्धक २ तोला, सोनेके वर्क ३ माशे और लौह भस्म ३ माशे ले लो। पहले पारे और सोनेके वर्कों को घोटो। बादमें गन्धक मिलाकर घोटो और अन्त में लौह-भस्म डाल कर घोटो। जब सब घुट जायँ, लोहे की कड़ाही में घुटे हुए मसालेको रखकर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब पतली चाशनीसी हो जाय, केलेके पत्ते पर फैलाकर, ऊपरसे दूसरा केलेका पत्ता रखकर दबाओ और ऊपर के पत्ते पर गोबर रख दो। दो घण्टे के बाद उठाकर शीशी में भर लो। मात्रा—४ चाँवल से १ रत्ती तक। अनुपान—शहद। समय—सवेरे शाम।

रोग नाश—इस पर्पटी से भी अतिसार आराम होते हैं। पेट फूलना, कच्चे पक्के दस्त होना और संग्रहणी ये सभी नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

नोट—यह हमारी आज़माई हुई नहीं। राजवैद्य श्रीमान् किशोरी दत्तजी शास्त्री, कानपुर, की पुस्तकसे लेकर हमारे एक वैद्य-मित्र ने आजमाई थी। आप कहते हैं कि, इसके उत्तम होने में संशय नहीं।

दूसरी स्वर्ण पर्पटी ।

(२८) हिङ्गलूसे निकाला पारा २ तोले, शुद्ध आमलासार गन्धक २ तोले और सुवर्ण-भस्म १॥ माशे लाकर रख लो।

पहले पारे और गन्धक को खरल में डाल घोटो और कज्जली बनालो। बाद में सोने की भस्म उसी में डाल घोटो। जब तीनों एक-दिल हो जायँ, लोहे की बड़ी कटोरी या छोटी सी कड़ाही में उस घुटी कज्जलीको रख कर, कोयलोंकी मन्दी-मन्दी आग पर चढ़ा दो। जब कज्जली लेई सी पतली हो जाय, उसे पूरे केले के पत्ते पर रख कर, ऊपर से दूसरा केलेका पत्ता रख कर खूब दबा दो; पीछे उसपर गोबर रख दो। दो तीन घण्टे बाद पापड़ी सी को उठाकर शीशी में भर लो। इसके सेवन से अतिसार, संग्रहणी और क्षयरोग अवश्य नष्ट हो जाते हैं। मात्रा १ रत्ती से १ माशे तक। मात्रा धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिये। अगर रोगी निर्बल हो, तो चार चाँवल भर ही देना अच्छा होगा। अनुपान—शहद, दही या नागर पानका रस। शहद के साथ देकर हमने बहुत लाभ उठाया है।

नोट—अगर स्वर्ण भस्म न हो, तो उतने ही सोनेके वर्क डालनेसे भी काम चल जायगा। यह "स्वर्ण पर्पटी" हमारी कितनी ही वार की आज़माई है। देश, काल और पात्र का विचार करके देने से यह शीघ्र ही अपना चमत्कार दिखाती है।

कुटज वाटिका ।

(२९) कौरैया की जड़ को धोकर छाल निकाल लो। पीछे आग

पर उबाल कर उस का रस तैयार करो। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। छने हुए जलको फिर कड़ाही में डाल चूल्हे पर चढ़ाओ। जब रस ढीला सा गाढ़ा हो जाय, तब उसमें नीचे लिखी हुई दवाएं पीसकर मिला दो:—सोंठ,कालो मिर्च,पीपर,जायफल,माजूफल, जावित्री, लौङ्ग, वायविडङ्ग, मरोड़फली, नर्म वेलकी गिरी और नाग-केशर—सबको मिलाकर चलाओ और झट उतार लो। बादमें चने-समान गोलियाँ बना लो। सेवन-विधि—अतिसार और संग्रहणी में ये गोलियाँ छाछ में हींग मिलाकर उसी से देनी चाहियें। अथवा मीठे दही, सोंठ के काढ़े या घी के साथ भी दी जा सकती हैं। छोटे बालकोंको भी यह दवा बड़े कामकी है। इन गोलियोंसे अतिसार, संग्रहणी, पाण्डु और जीर्णज्वर—ये आराम होते हैं। पाण्डुरोग में ये गोलियाँ गोमूत्रके साथ दी जा सकती हैं। परीक्षित हैं।

नोट—कौरैयाकी छाल ५ सेर लेकर कूट लो और २५ सेर जल में औटाओ। जब सवा छै सेर जल रह जाय, उतार कर छान लो। छने हुए काढ़ेको फिर आग पर चढ़ा कर गाढ़ा करो। गाढ़ा होने पर, उसमें ऊपर लिखी हुई दवाओंका चूर्ण एक-एक तोला पिसा-छना मिला दो और चला कर उतार लो। पीछे गोलियाँ बना लो।

जातीफलादि वटी।

(३०) जायफल ६ माशे, छुहारा ६ माशे, और शोधी हुई अफीम ६ माशे,—इन तीनोंको खरलमें डाल, पानीके रसके साथ खूब घोटो। घुट जानेपर रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। दिनभर में, दो या तीन गोलियाँ, माठेके साथ, खाने से भयानक अतिसार भी, सात दिनमें, आराम हो जाता है। परीक्षित हैं।

कर्पूरादि वटी।

(३१) शुद्ध कपूर, शुद्ध सिङ्गरफ, शुद्ध अफीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ और जायफल,—इन सबको छै छै माशे लेकर, खरलमें डाल,अदरखके रसके साथ घोटो। घुट जानेपर रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंके सेवनसे सब तरहके अतिसार, ज्वरातिसार, रक्तातिसार, अधिक पतले दस्त, पुराने दस्त, मरोड़ी के दस्त, पेट में गुड़गुड़ होना प्रभृति निश्चय ही आराम होते हैं। मात्रा १ या २ गोली। समय—सवेरे शाम या जब उचित समझा जाय। परीक्षित हैं।

नोट—ये गोलियाँ अनेक वार आज़माई हैं। अमीरों को ये गोलियाँ मुफ्त बाँटनी चाहिएँ।

चन्द्रकला वटी ।

(३२) भुना सुहागा १ माशे, शुद्ध सिंगरफ २ माशे और अफीम ४ माशे—इनको खरलमें घोटकर, गोलमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। अगर दस्त रातको अधिक होते हों, तो एक-एक गोली "शहद" मिलाकर खिलाओ। अगर दिनमें ज़ियादा दस्त होते हों, तो "नीबूके रस" में गोली खिलाओ। ऐसे दस्तोंके लिये ये गोलियाँ परीक्षित हैं।

विजयावलेह ।

(३३) एक भाग भाँग, एक भाग जायफल और दो भाग इन्द्रजौ—इन तीनों को कूट-पीस कपड़-छनकर, "शहद" में मिला रख दो। इस अवलेह के चाटनेसे सब तरह के आतिसार नाश होते हैं।

बिल्वादि चूर्ण ।

(३४) बेलगिरी, मोचरस, लोध, धायके फूल, आमकी गुठलीकी मींगी और अतीस—इन छहोंको बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बनाकर, सेवन करनेसे, समुद्रके वेगके समान दस्त भी बन्द हो जाते हैं। इसकी मात्रा ३ माशे से ६ माशे तक है। एक खूराकमें दवा से आधी मिश्री मिला फाँक जाना चाहिये और ऊपर से दो एक घूँट जल पी लेना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—इन्हीं ६ दवाओं का अवलेह भी बनता है। एक मात्रा दवा "शहत" में भी चाटी जा सकती है।

अतिसारगजकेसरी चूर्ण ।

(३५) इन्द्रजौ, मोथा, धायके फूल,कच्चो बेलगिरी, लोध, सोंठ और मोचरस—इन सातोंको कूटपीस और छानकर चूर्ण बना लो। इसकी भी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। यह भी दवाकी मात्राकी आधी मिस्री मिला कर सेवन किया जाता है और ऊपरसे दो चार घूँट जल पीना होता है।

नोट—यह नुसखा शास्त्रोक्त है। शास्त्रों में गुड़ और माठे के साथ सेवन करने की विधि लिखी है। यह भारी से भारी अतिसारों को आराम करता है। सैकड़ों वार का परीक्षित है।

खदिरादि वटी ।

(३६) कत्था, सोंठ, शुद्ध अफीम, काली मिर्च, जायफल और बबूल के पत्ते—इन सबको बराबर-बराबर लेकर कूट पीस लो। दूसरी ओर बबूल की ताज़ा छाल लेकर उसका काढ़ा बना लो। खरल में ऊपरका पिसा हुआ मसाला डाल, बबूल की छाल के तैयार किये हुए काढ़े के साथ खूब घोंटकर, चने-बराबर गोलियाँ बना लो। जवान आदमी एक बारमें दो गोलियाँ तक जल के साथ खा सकता है। सेवेरे, दोपहर और शामको गोलियाँ सेवन करनी चाहिएँ। इनके सेवन से सब तरह के अतिसार, पेट फूल कर दस्त होना और दस्तों में दुर्गन्ध आना प्रभृति निश्चय ही आराम होते हैं। परीक्षित हैं।

अतिसारान्तक चूर्ण ।

(३७) सौंफ, सोंठ, आम की गुठलीकी मींगी, सफेद ज़ीरा भुना हुआ, अनारके फूल, खसखसकी डोड़ी—ये सब बराबर-बराबर लाकर कूट पीसकर छान लो। फिर इस चूर्णके वज़नसे दूनी मिस्री पीस कर मिला दो। इस चूर्णसे सब तरहके अतिसार निश्चय ही नाश हो जाते हैं। जवानके लिये तीन माशेकी मात्रा है। हर दो-दो घण्टे पर एक-एक मात्रा फाँक कर, ऊपरसे दो-चार घूँट ताज़ा जल पी लेना चाहिये।

नोट—दवा के ऊपर उतनासा जल पीना चाहिये, जितने से दवा गले से नीचे उतर जाय; क्योंकि अधिक जल पीना अतिसारों में मना है। रक्तातिसार और आम-खून के दस्तों में हमने इस नुसखे की परीक्षा की है।

वैद्यक और यूनानी ।

सर्व अतिसार नाशक नुसखे ।

परीक्षित ग़रीबी नुसखे

(३८) भाँगरे का रस दही के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं ।

*   *   *   *   *   *

(३८) तालमखाने दही में मिलाकर खाने से अतिसार आराम होता है। परीक्षित है ।

*   *   *   *   *   *

(४०) रातके समय भाँगको भूनकर "शहद" में लेनेसे नींद आती और अतिसार, संग्रहणी तथा मन्दाग्नि नाश होती है। परीक्षित है।

*   *   *   *   *   *

(४१) कुरैया की छाल लाकर काढ़ा बनाओ। जब आँठवाँ भाग रह जाय, उतार कर सल छान लो और "अतीस" का चूर्ण मिलाकर पिलाओ। इससे सब तरहके अतिसार नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

*   *   *   *   *   *

(४२) कौरैयाकी जड़की छाल और अतीस,—इन दोनोंको कूट-पीस कर छान लो। इस चूर्ण को शहद के साथ देनेसे भी सब तरह के अतिसार नाश होते हैं। परीक्षित है।

*   *   *   *   *   *

(४३) रत्ती भर अफीम बकरी के दूध में घोल कर पीने से अतिसार और अजीर्ण नाश होते हैं।

*   *   *   *   *   *

(४४) दशमूल के काढ़े में सोंठ मिलाकर पीनेसे अतिसार, सूजन, संग्रहणी, खाँसी, अरुचि, कण्ठरोग और हृद्रोग आराम होते हैं। परीक्षित है।

नोट—सरिवन, पिथवन, कटेरी, बड़ी कटाई, गोखरू, वेल, अरणी, अरलू, (टेंटु) गम्भारी और पाडरी—यही दशमूल की दश दवाएँ हैं। पहले पाँच वृक्षों की जड़ों को "लघु पंचमूल" और पिछले पांचों की जड़ों को "वृहत्पंचमूल" कहते हैं।

* * * *

(४५) पाढ़ और आम के वृक्ष की भीतरी छाल को, गायके दही में पीस कर, पीने से अतिसार, पीड़ा और दाह तत्काल आराम होता है।

* * * *

(४६) ठीकरे में ज़रा सी अफ़ीम भून कर खाने से हर तरहका पक्वातिसार नाश होता है।

* * * *

(४७) श्योनाक की छाल और सोंठको, चाँवलों के जल के साथ, सेवन करने से पक्वातिसार नाश होजाता है।

* * * *

(४८) आम की कोंपल और कैथे के गूदे को, चाँवलों के जलमें, पीस कर सेवन करने से पक्वातिसार नाश हो जाता है।

* * * *

(४९) बबूल के पत्तों का रस पीने से सब तरह के दुस्तर और भयानक अतिसार आराम हो जाते हैं।

* * * *

(५०) धतूरे के फलों का रस पीने से सब तरह के अतिसार नाश होते हैं।

* * * *

(५१) भाँग को तवे पर भूँज कर, उसका चूर्ण, शहत के साथ, रात के समय, खाने से अतिसार, संग्रहणी, मन्दाग्नि और नींद न आने का रोग—ये सब नाश होते हैं। कई बार परीक्षा किया है।

(५२) प्याज़को कूट कर रस निकाल लेने और पीछे उसमें ज़रा सी "अफ़ीम" मिला खाने से अतिसार में अवश्य लाभ होता है।

* * * *

(५३) कुड़े या कुरैया की छाल का स्वरस पिलाने से अथवा इसी का रस पुटपाक की विधि से निकाल कर, शहद मिलाकर पीने से, निश्चय ही, अतिसार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(५४) जायफल खाने से अतिसार आराम हो जाते देखा है। अगर अतिसार के साथ प्यास, वमन और नींद न आने का रोग हो, तो वह भी आराम हो जाता है।

नोट—नींद न आती हो, तो ज़रासा जायफल घी में घिस कर पलकों पर आँज दो; फौरन नींद आवेगी। परीक्षित है।

* * * *

(५५) दो माशे जावित्री दहीकी मलाई या गाय के दही के साथ, सात दिन तक लगातार, खाने से भयानक अतिसार में भी लाभ होता है। आमातिसार में शीघ्र ही फायदा होता है। परीक्षित है।

* * * *

(५६) चार माशे सोंचरस पीसकर और उसमें मिश्री मिलाकर खाने से पुराना अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

* * * *

(५७) सेमल की ताज़ा छाल लाकर, उसे सिल पर पीस कर, कपड़े में छान कर, रस निचोड़ लो। इस रस के पीने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

नोट—सेमल की छाल या जड़ घिस कर पिलाने से भी अतिसार नाश होता है। परीक्षित है।

* * * *

(५८) अफ़ीम १ माशे और केशर १ माशे,—दोनोंको मिलाकर

१६ गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली मट्ठा में मिलाकर खाने से अतिसार और अजीर्ण दोनों में लाभ होता है।

* * * *

(५८) अजमोद, मोचरस, सोंठ, और धायके फूल—इन चारों को कूट-पीस कपड़-छन कर, गाय के माठे के साथ, सेवन करने से सब प्रकार के दस्त आराम होते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(६०) नागरमोथा, इन्द्रजौ, बेलगिरी, पठानी लोध, मोचरस और धायके फूल—इनका चूर्ण गुड़ और गाय के माठे के साथ लेने से सब प्रकार के दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(६१) अनार दाना १६ तोला, मिश्री १६ तोला, पीपर ४ तोला, पीपलामूल ४ तोला, अजवायन ४ तोला, काली मिर्च ४ तोला, धनिया ४ तोला, सफेद ज़ीरा ४ तोला, सोंठ ४ तोला, बंसलोचन ८ माशे, दालचीनी ८ माशे, इलायची ८ माशे और नागकेशर ८ माशे—इन सब दवाओं को कूट-पीस कपड़-छन कर, बर्तन में रख दो। इस चूर्णके सेवन से सब तरह के अतिसार नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(६२) शुद्ध कुचला, अफीम और सफेद गोल मिर्च—इन तीनों को तोले-तोले भर लेकर, कूट पीस कर छान लो। इसके बाद इस चूर्ण को खरल में डालकर, अदरख के रस के साथ खूब घोटो। घुट जाने पर रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सोंठ के चूर्ण और गुड़ के साथ खाने से आमातिसार और हैज़ा निश्चय ही नाश होते हैं। परीक्षित है।

नोट—कुचलेके बीजों को तवे पर घी डालकर इस तरह भूनो, कि जलने न पावें।

बादमें ऊपरका छिलका उतार डालो । पीछे बीजोंको बीचों-बीचसे चीरकर, अन्दरकी जिभली निकाल डालो । इस काम के बाद कुचले को शुद्ध समझो ।

दूसरी तरकीब कुचला शोधनेकी यह है कि, कुचलेके बीजोंको गोमूत्रमें उबालकर, छिलका और अन्दरकी जिभली निकाल डालो । बिना इस तरह शोधे, कुचला काम में न लाना चाहिये । यह एक प्रकारका ज़हर है । क़ायदेसे सेवन किया जाय, तो अमृत है । सम्भोग-शक्ति बढ़ाने में तो वह अव्वल दर्जे की चीज़ है ।

* * * *

(६३) शुद्ध सिंगरफ, लौंग, अफ़ीम और मिश्री—सब को बराबर-बराबर लेकर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो । इन गोलियोंके दिन में तीन दफा या दो दफा, जलके साथ, लेनेसे अतिसार नाश हो जाता है ।

* * * *

(६४) शुद्ध-कपूर, अफ़ीम और भुनी हींग—इन तीनों को पीस कर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो । एक-एक गोली सवेरे-शाम और दोपहर को या दो ही समय निगलवा कर, ऊपरसे चाँवलों का धोवन पिला दो । इससे दस्त, पेट का दर्द और क़य होना —ये सब आराम होते हैं । परीक्षित है ।

* * * *

(६५) कसौंदी की जड़ ६ माशे, चार तोले चाँवलों के धोवन में पीस कर, पीने से बालक और बूढ़ोंके दस्त फ़ौरन बन्द हो जाते हैं । वैसे यह नुसख़ा नये-पुराने सभी अतिसारों में फ़ायदेमन्द है ।

* * * *

(६६) लोहेकी कटोरी या तवे पर ज़रासा "घी" डालकर, "हरड़" भून लो और उसमें से तीन या चार माशे दस्त वालेको खिलाओ; दस्तोंमें ज़रूर लाभ होगा । कमज़ोर रोगीको तो बहुत ही उत्तम दवा है ।

* * * * *

(६७) कुटज या कुरैया की ताज़ा छाल चार तोले लाकर, आध

सेर जल में औटाओ। जब आधपाव जल रह जाय, चूल्हे से उतार, मल-छान कर पिला दो। अवश्य दस्त बन्द हो जायँगे।

*　*　*　*　*

(६८) आम की गुठली की गिरी १ तोला और बेलगिरी १ तोला—दोनों को आध सेर पानी में औटाओ, जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, उतार कर शीतल कर लो। पीछे मल-छान कर, उसमें शहत ६ माशे और मिश्री ३ माशे मिलाकर पी जाओ। इससे कय और दस्त दोनों बन्द हो जाते हैं।

*　*　*　*　*

(६९) कैथ का बीज ३ माशे भून कर खाने से पुराना अतिसार आराम हो जाता है।

*　*　*　*　*

(७०) गूलर का दूध १ माशे, बताशे में भर कर, ८।१० दिन खानेसे दस्त बन्द हो जाते हैं।

*　*　*　*　*

(७१) आमले की पत्ती, बबूल की पत्ती, और आम की पत्ती—इन तीनों को लाकर, अलग-अलग, बिना पानी डाले, सिल पर कूट-पीस कर कपड़े में रस निकालो। इन तीनों पत्तों का स्वरस दो-दो माशे तैयार करके, उसमें ६ माशे शहद मिलाकर, पीने से सब तरह के दस्त बन्द हो जाते हैं।

*　*　*　*　*

(७२) जावित्री, जायफल, नागकेशर, लौंग और अफीम—इन पाँचों को चार चार माशे लेकर, महीन पीस कर, जल के साथ खरलकर, रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना, छाया में सुखा लो। फिर सफेद ज़ीरा ४ रत्ती और सोंठ ४ रत्तीको पीस कर रखलो। इसी चूर्णके साथ ऊपर की गोली फाँक जाओ और ऊपर से चार पाँच तोले शीतल जल पी जाओ। इससे भयानक प्यास वाला अतिसार एवं मात्रा

में ही आराम हो जाता है। यह योग अनेक वार का परीक्षित है; कभी फेल नहीं होता।

* * * * *

(७३) छिलेहुए मसूर भून कर खाने से भी अनेक बार दस्त बन्द हो जाते हैं। मसूर की दाल रोज़-रोज़ खाने से पेट में गुड़-गुड़ शब्द होना, पेट फूलना, दर्द होना और कच्चे पक्के दस्त होना— ये सब आराम होते हैं। आँतों को ठीक आर्डर में रखने में मसूर सबसे बढ़कर है।

* * * * * *

(७४) भुने हुए मूँग और भुने हुए चाँवल, दोनों बराबर-बराबर, लेकर काढ़ा बनाओ। काढ़ा हो जाने पर, उसे चूल्हे से उतार शीतल कर लो। पीछे उसमें शहद ६ माशे और मिश्री ३ माशे मिला रोगी को पिला दो। इससे प्यास, दाह, पेट की जलन और दस्त आराम हो जाते हैं।

* * * * * *

(७५) चाँवलों का माँड़ दिन में कई दफा पिलाने से भी दस्त आराम हो जाते हैं।

* * * * * *

(७६) बेलगिरी या कच्चे बेल को जल में उबाल कर, शहत के साथ कुछ दिन सेवन करनेसे सब तरहके अतिसार और प्रवाहिका रोग नष्ट होते हैं। परीक्षित है।

* * * * *

(७७) अधपके बेल को आग में भून कर उस का गूदा, मिश्री और अर्क़ गुलाब के साथ मिला कर, सवेरे ही ख़ाली पेट में, खानेसे सब तरह के दस्त आराम होते हैं। परीक्षित है।

* * * *

(७८) बेल का मुरब्बा आमाशय-सम्बन्धी रोगों में बहुत हित-कारी होता है। अतः हम उस के बनाने की सीधी विधि लिखते

हैं :—पहले वेल के फल लाकर, उनका गूदा निकाल लो और उस गूदे को हाँड़ी या कलईदार बर्तन में चढ़ा, ज़रा जोश दे दो। जब गूदा कुछ गल जाय, तब उसे खाँड की चाशनी में डाल, चला दो। शीतल होने पर, अमृतबान या काँच के बर्तन में भर कर रख दो। दो महीने बाद खोलो। अगर वह अच्छी तरह गल गया हो, तो सेवन करो। इस से दस्तों में बहुत लाभ होता है।

* * * * *

(७८) बबूल के कोमल पत्ते ज़ियादा जल में पीस कर पीने से अतिसार आराम होता है।

नोट—जब गुदा की सम्वरणी वलि की कमज़ोरी से रोगी का पाख़ाना, अज्ञात अवस्था में, निकल जाय, उस समय बबूल के काढ़े की पिचकारी लगाना लाभदायक है। इससे आँतों में ताक़त आती और आँतों की झिल्लीमें चिकनापन होता है।

* * * * * *

(८०) इलायची, जायफल, दालचीनी, सोंठ,—इनको समान भाग लेकर, सब को एकत्र पीस कर और सब की बराबर मिश्री मिला कर, ३।४ माशे की मात्रा से, दिनमें दो बार सेवन करने से अतिसार आराम हो जाते हैं। यह नुसख़ा अतिसार को निराम या पक्व अवस्था में देते हैं।

* * * * * *

(८१) ज़ीरा सफ़ेद, काला ज़ीरा, छोटी इलायची, दालचीनी और घी में भुनी भाँग—प्रत्येक दवा चार चार माशे लेकर, सब को पीसो और ज़रूरत के माफ़िक़ "सेंधा नोन" मिला दो। इस में से ३ माशे चूर्ण, दिन में २।३ बार, फाँकने से अतिसार आराम हो जाता है।

* * * * * *

(८२) इलायची, सौंफ और मस्तगी—इन तीनोंको समान भाग लेकर, सब की बराबर मिश्री मिला कर, खानेसे अतिसार और उपद्रव दूर होते हैं।

(८३) बेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, धाय के फूल, सोंठ और मोचरस,—इन को बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीस कर, चूर्ण बना लो। अथवा इन छहों दवाओंका काढ़ा बनाकर और मिश्री मिला कर पी जाओ। इस के पीने से सब तरह के अतिसार और उपद्रव शान्त होते हैं। परीक्षित है।

नोट—यद्यपि हमने अनेक नुसखे लिखे हैं, और जो लिखे हैं, वे क़रीब-क़रीब आज़मूदा हैं, पर जब किसी से लाभ न हो; तब "कुटजपुटपाक" ज़रूर तैयार करो। सब प्रकारके अतिसारों के नाश करने में "कौरैया पुटपाक" सब का राजा है। पुटपाक-विधि से रस निकाल कर और शहद मिलाकर पीने से अवश्य लाभ होता है। पुटपाक-विधि हमने इसी अध्याय में कई जगह लिखी है। पानी जितना ही जियादा औटाकर दोगे, उतना ही लाभ होगा।

यूनानी नुसखे।

(८४) मुनक्का बीजों समेत ७ दाने, आम की गुठली की मींगी १ दाना और अफीम ४ रत्ती—इन सब को कूट पीस कर, जल के साथ, सात गोलियाँ बना लो। हर रोज़ एक गोली खाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(८५) भुनी हुई सोंठ, मांई, पठानी लोध, सफेद राल, धाय के फूल, इन्द्रजौ, मीठी बेलगिरी, मोचरस, आम की गुठली की मींगी, भुना खुरसा और काली मिर्च—इन ग्यारह दवाओं को कूट पीस, जल के साथ, जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे, दोपहर और शाम को, एक-एक गोली जल के साथ खानेसे अतिसार नष्ट हो जाते हैं।

* * * * * *

(८६) भुनी हुई भाँग, बेर की पत्तियाँ और नरकचूर—बराबर-बराबर लेकर, चने-समान गोलियाँ बना, सवेरे शाम एक-एक गोली खा जाने से अतिसार नष्ट हो जाता है।

(८७) गेतरज, नागरमोथा, लोध, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, और धाय के फूल—इन सातों को कूट पीस और छान लो। इस चूर्ण की मात्रा ३ से ६ माशे तक है। सवेरे, दोपहर और शाम को एक-एक मात्रा फाँक कर, ज़रासा जल पीने से सब तरह के अतिसार नष्ट हो जाते हैं।

* * * *

(८८) भुनी हुई सोंठ, भुनी हुई सौंफ और बड़ी इलायची का छिलका—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस कर चूर्ण कर लो। यह चूर्ण क़ाबिज़—ग्राही और पाचक है। सवेरे-शाम हथेली-हथेली भर चूर्ण फाँक, ऊपर से ज़रा सा जल पीने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(८९) मस्तगी, कालीमिर्च, बंसलोचन, अनारदाना, आम की गुठली की गिरी, मुलहटी, मांई, धायके फूल और माजू—इन ९ दवाओं को बराबर-बराबर लाकर, कूट पीस और छान कर, खरलमें डाल, पोस्त के डोड़ों के जल के साथ घोटो। घुट जाने पर गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक एक दाम भर गोली साँठी चाँवलों के जल के साथ खाओ। पथ्यमें मूँग और भात खाओ। इससे अतिसार और खूनी बवासीर आराम हो जाते हैं।

* * * *

(९०) जिस तरह बालकों के दस्तों को "अतीस" आराम करता है; उसी तरह बड़ों के दस्तों को भी नाश करता है। जवान को ६ माशे से १ तोला तक "अतीस" जल में पीस कर देना चाहिये। अगर इस में मात्रा के माफ़िक़ "गुलनार" भी मिला दिया जाय; तो औरभी लाभ हो।

* * * *

(९१) रूमी मस्तगी, अनार की कली, बच, बंसलोचन, आम

की गुठली की गिरी, लोध, मुलहटी, धाय के फूल, मोचरस, कुड़े की छाल, जायफल, बबूल की कली और मांई—ये सब एक-एक तोला लो। सफेद कत्था २६ तोला और कुम्हड़े के बीजों की गिरी ५२ तोला लो—इन सब को कूट पीस कर छान लो। पीछे पोस्त के डोडोंका काढ़ा तैयार कर लो। ऊपर के पिसे-छने चूर्ण को खरल में डाल, ऊपर से पोस्त के डोडों का जल डाल-डाल कर घोटो। खूब घुट जाने पर, चार चार माशे की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे-शाम चाँवलों के धोवन के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं। ये गोलियाँ अनेक बार की परीक्षित हैं। पथ्य दही भात है।

* * * * * *

(८२) करेले के पत्तों का स्वरस ३ माशे, अनार के पत्तों का स्वरस ३ माशे और बकरी का दूध १ तोला—इन तीनों को एक मिट्टी या पत्थरके बर्तनमें मिला लो। इस रसमें रूई का फाहा भिगो-भिगोकर नाभि पर रखनेसे सब तरहके अतिसार आराम हो जाते हैं।

नोट—ईश्वर की महिमाका पार नहीं; उसने एक से एक बढ़ कर जड़ी बूटी पैदा की हैं। हुरहुज के बीजों का तेल नाभि पर लगाने से दस्त लग जाते हैं और वह तेल त्रिकस्थान चूतड़ों के ऊपर की तीन हड्डियों के जोड़ पर लगा देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * * * *

(८३) मोचरस, माँई, राल सफेद, बेलगिरी, आम की गुठली की मींगी, धाय के फूल, पोस्त का डोडा और सफेद ज़ीरा—ये सब बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस कर कपड़े में छान लो। इस में से चार माशे चूर्ण, हर दिन, काला नमक और काली मिर्च मिले गाय के माठे के साथ खाने से सब तरह के अतिसार आराम होते हैं। परीक्षित है।

(८४) सूखे आमले, वंसलोचन, छोटी इलायची और धनिया —ये सब समान भाग लो। इन को कूट-पीस-छान कर, सब के वज़न की बराबर मिश्री मिला लो। इस में से ६ माशे सवेरे और ६ माशे शाम को सेवन करने से अतिसार और रक्तातिसार आराम हो जाते हैं।

* * * *

(८५) एक जायफल लेकर, उस में चाकू से छेद करो। उस छेद में चार रत्ती अफीम भर दो। पीछे एक काग़ज़ी नीबू के दो टुकड़े करके, एक टुकड़े में उस अफीम-भरे जायफल को रख दो। ऊपर से दूसरा नीबू का टुकड़ा रख कर, उस पर कपड़-मिट्टी कर दो। पीछे आरने या जंगली कण्डों की आग में उसे पकने को रख दो। जब पक कर लाल हो जाय, आग से निकाल कर, मिट्टी और नीबूको अलग करके, जायफलको खरल में डाल कर घोटो और १० या १२ गोलियां बना लो। चार-चार घण्टे पर, एक-एक या दो-दो गोली खाने से अतिसार आराम हो जाते हैं। दस्त बन्द होते ही दवा बन्द कर दो। बालक को यह दवा न देना।

* * * *

(८६) शुद्ध सिंगरफ, सुहागे की खील, जायफल, छुहारा और अफीम—ये सब समान भाग ले, इन में ज़रा सा कपूर डाल, सबको खरल में रख, पानके रसके साथ घोटो और रत्ती-रत्ती-भरकी गोलियाँ बना लो और धूप में सुखा कर शीशी में रख दो। एक-एक गोली चार-चार घण्टे बाद, जलके साथ, खाने से अतिसार आराम हो जाता है।

* * * *

(८७) अफीम साढ़े तीन माशे, अकरकरा सात माशे, भाज के फल चौदह माशे, सामक चौदह माशे और हुब्बुलास १४ माशे—सब

को खरल में डाल, बबूल की गोंद के रस में घोटो और एक-एक माशे की गोली बना सेवन करो ; तो एक घण्टे में दस्त बन्द हो जायँगे।

नोट—ग्रन्थ में दो माशे की गोली लिखी है ; पर हमारी समझ में एक माशेकी काफी है।

बिना दवा खाये दस्त आराम।
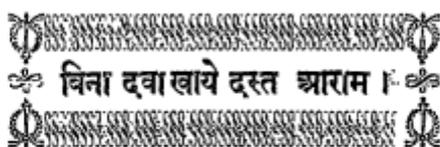
(९८) छटाँक भर या आधी छटाँक आँवले लाकर खूब महीन पीसो ; पीछे उस पीसे आमलों के चूर्णको घी में पीस कर चटनी सी बना लो। दस्तवाले रोगीको चित्त या सीधा सुलाकर, उसकी नाभिके चारों ओर, उस घी में पिसे आमलोंका थामड़ा या दीवार सी बना दो। दीवार ज़रा ऊँची रहे तो अच्छा। दीवारके बीच के गड्ढे में अदरख़ का ख़रस भर दो और उसे कम-से-कम दो घण्टे तक ऐसे ही रहने दो। रोगी लेटा रहे। इस उपाय से सम-न्दर के समान बहते हुए दस्त भी आराम हो जायेंगे। यह नुसख़ा "मुजर्रबात अकबरी" का है और हमारा कई बार का आज़माया हुआ है। यह दस्त बन्द करने वाली सभी दवाओं का बाद-शाह है।

नोट—आमलोंको, घी न होने पर, जलमें भी पीस लेते हैं।

* * * *

(९९) आम की छाल दही के तोड़ में पीस कर नाभि के चारों ओर लगाने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(१००) बड़का दूध नाभि में भर देने और चारों ओर लगा देने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(१०१) आमलोंको घी में भूँज कर और पानीमें पीस कर नाभि

के चारों ओर लगा दो। साथ ही ज़रा सी अफीम अदरख़ के रस में घोट कर, दो तीन बूँद, नाक में टपका दो। परमात्मा की दया से फौरन दस्त बन्द हो जायेंगे।

(१०२) कलौंजी के बीज ४ माशे, खतमी ४ माशे, सोंठ ४ माशे, गाव-ज़ुबाँ ४ माशे और मरोड़फली ४ माशे—इन सब को एकत्र कूट कर १ छटाँक पानीमें पकाओ। जब आधा पानी बाक़ी रह जाय, तब उसमें एक तोला मिश्री डाल कर, प्रातःकाल और सन्ध्याके समय पिलाओ। इस से फौरन दस्त बन्द हो जाते हैं।

गर्भवतीके दस्तोंके लिये नुसख़े।
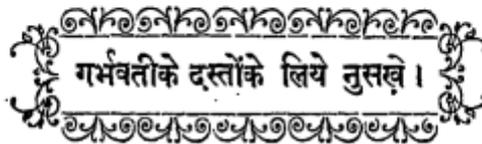
(१०३) केवल बकरी के दूध का सेवन करने से गर्भिणी का अतिसार दूर होता है।

* * * *

(१०४) ४ माशे ईसबगोल को, २ तोला जलमें भिगो कर, थोड़ी मिश्री डाल कर, भोजन के मध्य में, खाने से गर्भिणी का अतिसार दूर होता है।

* * * *

(१०५) आम की पुरानी गुठली की मींगी, बेलगिरी, लोध और धनिया—यह चारों औषधियाँ समान भाग लेकर, सबका एकत्र चूर्ण बनाकर और चूर्ण की बराबर मिश्री मिला कर, उस में से २-२ माशेकी मात्रासे, दही में मिला कर, सेवन करने से गर्भावस्था का अतिसार दूर होता है।

* * * *

(१०६) सूखे आमले, मस्तगी, धनियाँ और छोटी इलायची,—

सबको समान भाग लेकर, एकत्र पीस कर, ३-३ माशे की मात्रा, बेल के शर्बत के साथ खाने से विशेष लाभ होता है।

* * * *

(१०७) भुनी भाँग ४ रत्ती, बड़ी इलायची ६ रत्ती, ज़ीरा १ माशे काला जीरा १ माशे, अनार दाना १ माशे, सोंठ १ माशे और धनिया ३ माशे,—इन सबको एकत्र पीस कर,इस में से दो-दो माशे गाय के मीठे मट्ठे के साथ खाने से सब प्रकार के दस्त बन्द होते और अग्नि दीपन होती है।

बाल अतिसार नाशक नुशख़े।

(१०८) कौरैयाकी जड़ और मुगलाई अरण्ड (रतनजोत) की जड़, छाछ के पानी में घिस कर, थोड़ी हींग मिलाकर, देनेसे बालक का भयङ्कर अतिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर बदहज़मी के दस्त हों, तो ख़ाली कौरैया की जड़ छाछ के पानी में घिसकर थोड़ी हींग मिलाकर देने से लाभ होता है।

* * * *

(१०९) अगर छोटे बालकको मरोड़ीके दस्तोंकी आशङ्का हो; तो जन्म-घूँटीमें मरोड़फली घिसकर दो। अगर मरोड़ी चलती हों, तो साठे में मरोड़फली की जड़ घिस कर दो। परीक्षित है।

* * * *

(११०) काकड़ासिङ्गीका एक या डेढ़ माशे चूर्ण "शहत" के साथ देने से अतिसार आराम हो जाता है।

* * * *

(१११) बाग़ में पैदा हुई कपास के ताज़ा फूलों को गरम राख में भून कर, रस निकालो और बालक को पिलाओ। इस से बालक का अतिसार नाश हो जाता है।

नोट—बहुत छोटा बच्चा हो, तो माता कपासके फूलोंको मुँह में चबाकर उनका रस बालक के मुख में डाल सकती है।

नोट—लघु ब्राह्मी के पत्तोंका रस, इसी तरह निकाल कर, बालकों को पिलाने से भी बालकों का अतिसार नाश हो जाता है। लघु ब्राह्मी का वृक्ष सदा गन्दी ज़मीन में रहता है और बागों में भी होता है। इसका बड़ा विस्तार फैलता है पत्ते दो दो अङ्गुल चौड़े और चूहे के कान-जैसे होते हैं। इसके ताज़ा पत्ते रोज़ सवेरे खिलाने से बालकों की जीभ का मोटापन और कड़ापन नाश होकर तुतलाना मिट जाता है।

* * * *

(११२) बालक को बारम्बार पतले दस्त होते हों; तो असल केशर के एक या दो चाँवल घी में मिला कर चटाओ। इस उपाय से दस्त बन्द हो जायँगे। परीक्षित है।

* * * *

(११३) केशर, अफ़ीम और हींग—इन तीनों को समान-समान लेकर, पानीमें पीस कर, बाजरे-जितनी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे और शाम को माँ के दूध में या शहद में घिसकर चटाने से बालक का बहुत पुराना अतिसार नाश हो जाता है। परीक्षित है।

* * * *

(११४) खसखस के दानोंको जलमें पीस, हलवा बना, खिलानेसे बालकों के आँव मरोड़ी के दस्तों में बहुत लाभ होता है।

* * * *

(११५) खसखस के दानों को गाय के दूधमें पीस, उसमें थोड़ा सा दूध और मिश्री मिलाकर पकाना चाहिये। जब गाढ़ी-गाढ़ी सी खीर हो जाय, तब उसे चूल्हे से उतार, शीतलकर, बालकोंको चटानी चाहिये। इससे दस्तों की बीमारी आराम हो जाती है और ताक़त आती है।

नोट—कम-उम्र बालकोंको थोड़ी खीर देनी चाहिये। चार या ६ महीनेसे नीचेके बालक को तो देनी ही न चाहिये।

(११६) सौंफ को जल में भिगो दो। ४ पहर बाद पानीको छान लो। उसमें जल से चौगुनी चीनी मिला; क़लईदार बर्तन में शर्बत पका लो। इसके ज़रा-ज़रा चटाने से बालकों के दस्त, पेटका दर्द, मन्दाग्नि और पेशाब का लाल होना आराम हो जाता है।

* * * *

(११७) अनार की कली १ माशे, बबूलकी हरी पत्ती १ माशे, घी में भुनी सौंफ १ माशे, ख़सख़स या पोस्त के दानों की राख २ माशे,— इन सब को एक में मिला, पीस-कूट लो। दो-दो या तीन-तीन रत्ती यही दवा, माँके दूध में, देने से बालक के दस्त आराम हो जाते हैं। यह दवा सवेरे, दोपहर और शामको देनी चाहिये।

* * * *

(११८) बेलगिरी १ माशे और सफेद कत्था १ माशे,—दोनों को महीन पीस कर रख लो। चार-चार रत्ती माँ के दूध के साथ देने से बालक के दाँत निकलने के समय के दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(११९) अतीस चार-चार रत्ती माँके दूध में घिस कर दिन में दो या तीन बार देने से बालक के दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(१२०) बड़का दूध ६ माशे नाभि में भर देने से भी बालकके दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(१२१) आमकी छाल १ तोला लाकर, दही या सिरकेमें चन्दन की तरह घिस कर, सूँडी के चारों ओर गाढ़ा-गाढ़ा लेप करने से बालक के दस्त बन्द हो जाते हैं।

* * * *

(१२२) बेलगिरी को सौंफके अर्क़में घिस कर, बालक को चटाने से बालक के लाल हरे दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१२२) बेलगिरी, सोंठ, जायफल, नागकेशर और बड़ी इलायची—सब को बराबर-बराबर लाकर, पीस कूट कर छान लो। इस चूर्ण को खरल में डाल, ऊपर से खसखस का काढ़ा डाल-डालकर घोटो। पीछे चने-समान गोलियाँ बना लो। बालक की उम्र के मुताबिक़, १ या आधी गोली, माँ के दूध में, घिस कर पिलाने से हरे और लाल दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

* * * * * *

(१२३) बेल की जड़ के काढ़ेमें मिश्री मिलाकर पिलानेसे बालक का आम गिरना बन्द हो जाता है।

* * * * * *

(१२४) अलसी के भुने बीज किसी तरह भी खाने से खांसी और दस्त बन्द हो जाते हैं।

नोट—सामान्य चिकित्सा में अतिसार की एक ही दवा सब तरह के अतिसारों को आराम करती है। उस में वातातिसार है या पित्तातिसार है या रक्तातिसार है, इस तरहकी परीक्षा करनेकी आवश्यकता नहीं ; पर विशेष चिकित्सामें अतिसारकी क़िस्म जाननी पड़ती है अर्थात् यह वातातिसार है या रक्तातिसार है इत्यादि। फिर वातातिसार का नुसख़ा पित्तातिसार रोगी को नहीं दे सकते। ऐसा करने से रोग के बढ़ने और रोगी की जान ख़तरे में पड़ने का भय है। हाँ, इस चिकित्सा से रोग आराम जल्दी होता है ; पर रोग की क़िस्म, दोषों के अंशांशोंका जानना और फिर वैसी ही दवा तजवीज़ करना आवश्यक है। यह काम अच्छे अनुभवी और विद्वान् वैद्य ही कर सकते हैं।

नीचे हम वातातिसार प्रभृति प्रत्येक प्रकारके अतिसारों पर नुसख़े लिखेंगे। रोग-परीक्षा में भूल न होने से हमारे लिखे नुसख़े रामवाण या तीरे हदफ़ का काम करेंगे, पर रोगपरीक्षा ठीक होनी चाहिये। भूलसे अगर पित्तातिसार कफातिसार समझ लिया जायगा और रोगी को गरम दवा दे दी जायगा, तो "रक्तातिसार" हो जायगा—दस्तों में ख़ून आने लगेगा ; वजह यह है कि, कफातिसार में गरम दवा दी जानी चाहिये और पित्तातिसार में शीतल। जब कि उल्टी चिकित्सा होगी, तो फल भी उल्टा ही होगा। अतः हर तरह से अतिसार का भेद समझ और निश्चय करके दवा तजवीज करना अच्छा होगा। अगर ऐसा किया जायगा, तो इधर दवा दी जायगी और उधर लाभ होगा। क्योंकि हम इस पुस्तक में जो नुसख़े या योग लिखने जा रहे हैं, उनमें से ६० फी सदी मुजर्रब या परीक्षित हैं ; बिना आज़माये नुसख़े बहुत ही कम हैं। जो अनेक बार आजमाये हैं, उन के सामने "परीक्षित है" ये दो शब्द लिखे हैं। जिन के सामने ये दो शब्द नहीं लिखे हैं, वे भी हमारे या और वैद्यों के एकाध बार के परीक्षित हैं।

वातातिसार नाशक नुसखे।

(१२५) वच, अतीस, नागरमोथा और इन्द्रजौ—इन का काढ़ा वातातिसार नाशक है।

(१२६) इन्द्रजौ, नागरमोथा, लोध, बेलफल, आमकी गुठली और धायके फूल—इन सब का चूर्ण, सवेरेके समय, भैंस की छाछके साथ पीने से प्रबल वातातिसार आराम हो जाता है। इसको "कलिङ्गादि क्वाथ" कहते हैं। परीक्षित है।

(१२७) दुर्गन्ध करञ्ज, पीपल, सोंठ, खिरेंटी, धनिया और हरड़—इनका काढ़ा, संध्या समय, पीने से वातातिसार अवश्य ही नाश हो जाता है।

(१२८) हालिमका चूर्ण शक्कर के साथ खानेसे बादी के दस्त आराम हो जाते हैं।

—*—

पित्तातिसार नाशक नुसखे।

(१२९) बेलगिरी, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सुगन्धवाला और अतीस—इनके काढ़े से आमयुक्त पित्तातिसार नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१३०) रसौत, अतीस, कुड़ेके बीज और छाल, धायके फूल और सोंठ—इन को कूट पीस कर चूर्ण बना लो। समय पर, शहदमें मिलाकर चाँवलों के जल के साथ सेवन करो। इस चूर्णसे भयङ्कर पित्तातिसार नष्ट हो जाता है। यह चूर्ण अग्नि को दीप्त करता और शूल को फौरन नाश करता है। परीक्षित है।

(१३१) लजवन्ती, धायके फूल, बेलगिरी, कालानोन, बिड़नोन

और अनार का छिलका—इन को एकत्र पीसकर, चाँवलों के जलके साथ, शहद मिला कर, पीने से पित्त का अतिसार और पित्त का उदर रोग नाश होता है। परीक्षित है।

(१३१ क) दारुहल्दी, धमासा, बेलगिरी, सुगन्धवाला और लाल-चन्दन,—इन का काढ़ा भी पित्तातिसार को नाश करता है।

नोट—पित्तातिसार-रोगी की गुदा में जलन प्रभृति अनेक उपद्रव हो जाते हैं, उन के उपाय और सभी ग्रन्थकारोंने पित्तातिसार के नीचे ही लिखे हैं; पर हमने गुदा की जलन, वेदना, काँच निकलना प्रभृति को आराम करनेवाले नुसखे इसी अध्याय में लिखे हैं। हाँ, रक्तातिसार नाशक नुसखे ज़रा आगे चलकर ही पृष्ठ ७२—८०में दीपन लिखे हैं।

—※—

कफातिसार की चिकित्सा।

नोट—कफातिसार में पहले लङ्घन कराने, फिर पाचन तथा आमातिसार नाशक औषधि देनी चाहिये।

(१३२) चव्य, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, कुड़ेकी छाल, इन्द्रजौ और हरड़—इनका काढ़ा कफातिसारको नाश करता है।

(१३३) भुनी हींग, कालानोन, सोंठ, मिर्च पीपल, हरड़, अतीस और वच—इनका चूर्ण, गरम जलके साथ, खानेसे कफातिसार नष्ट होता है।

(१३४) चव्य, अतीस, कूट, कच्चे बेल का गूदा, सोंठ, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ और हरड़—इनका काढ़ा वमन और कफातिसार नाशक है।

(१३५) हरड़, चीता, कुटकी, पाढ़, बच, पीपलामूल, कुड़ेकी छाल और सोंठ,—इनका काढ़ा आमातिसार नाशक है।

(१३६) हरड़, नागरमोथा, सोंठ, बेलगिरी और काकड़ासिङ्गी—

इन के काढ़ेसे कफातिसार आराम होकर बल और वर्णकी वृद्धि होती है।

(१३७) चीता, पीपलामूल, पीपल और गजपीपल—इनके काढ़ेसे भी कफातिसार नाश होता है।

(१३८) कालीमिर्च, पीपल, सोंठ, लौंग और अकरकरा—ये सब बराबर-बराबर चार-चार माशे और अफीम ८ माशे लो ; पीछे इनको पीस कूट कर, अदरखके रसमें खरल करके, चने-समान गोलियाँ बना लो। दिन में दो या तीन बार एक-एक गोली खानी चाहिये। इन गोलियों से कफातिसार नाश होता है।

(१३९) सौंफ को घी में इतनी भूनो कि लाल हो जाय; पीछे उसे कूट पीसकर छान लो और बराबर की चीनी मिला लो। इसमें से सात माशे शीतल जल के साथ खाओ। इस से कफातिसार आराम होता, कोठा बलवान होता और गुदा की हवा निकल जाती है।

—*—

वातपित्तातिसार नाशक नुसखे।

(१४०) कायफल, मुलेठी, लोध और अनार का छिलका—इनका कल्क बनाकर, चाँवलों के जलके साथ, सेवन करनेसे वातपित्तातिसार नाश होता है।

(१४१) इन्द्रजौ, बच, नागरमोथा, देवदारु और अतीस—इन का कल्क, चाँवलों के जलके साथ, सेवन करनेसे वातपित्तातिसार आराम हो जाता है।

नोट—मल में झाग हों, खून ज़ियादा आवे, अत्यन्त वेदना हो और अनेक रङ्ग के दस्त आवें—तो समझो कि, वातपित्तातिसार है।

वातकफातिसार नाशक नुसखे।

(१४२) बायबिड़ङ्ग, बच, बेलगिरी, पाढ़, धनिया और कायफल —इन का काढ़ा वायु और कफसे उत्पन्न हुए अतिसारको नाश करता है।

(१४३) कायफल, मुलेठी, लोध और अनारका छिलका—इन सब का चूर्ण बनाकर, चाँवलों के पानी के साथ, पीनेसे वातकफातिसार नाश होता है।

(१४४) चीता, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, कुड़े की छाल, इन्द्रजौ और हरड़—इन का काढ़ा वातकफातिसार को नाश करता है।

नोट—दस्त पतले हों, झाग हों, आमगन्ध हो, आवाज हो, वेदना हो, आम सहित गुड़गुड़ाहटके साथ मल उतरे ; तथा तन्द्रा, मूर्च्छा, भ्रम एवं क्रम हो और सन्धि, कमर, घुटने, जाँघ, पीठ और हड्डियों में शूल हो—यही 'वातकफातिसार" के लक्षण हैं।

पित्तकफातिसार नाशक नुसखे।

(१४५) नागरमोथा, अतीस, चुरनहार, बच और कुड़ेकी छाल —इनके काढ़े में "शहद" डालकर पीनेसे पित्तकफातिसार नाश होता है।

(१४६) लोध, चन्दन, मुलेठी, दारुहल्दी, पाढ़, सागोन, कमल और स्योनाक की छाल—इन सबको चाँवलों के जल में पीस कर गोला बना लो। पीछे पुटपाक की विधि से पका कर और आग से निकाल कर, उसमेंसे रस निकाल लो। रसको शहद मिलाकर सेवन करनेसे कफपित्तातिसार आराम होता है।

नोट (१)—पुटपाक की विधि और मात्रा वगैरः पीछे के पृष्ठ ३१में लिखी है।

नोट २)—काढ़े के समान पतला, मन्द वेगवाला, मन्द पीड़ा युक्त, भारी, सेमल के गोंद के समान लिबलिबा, कमल के पत्ते की समान चिकना, शङ्ख के समान सफेद, लाल-लाल बूँदों सहित मल उतरे,भूख और प्यास बहुत लगे ; तो "पित्तकफा तिसार" समझना चाहिये।

सन्निपात अतिसार नाशक नुसखे

(१४७) पञ्चमूल, खिरेंटी, बेलगिरी, गिलोय, नागरमोथा, सोंठ, पाढ़, चिरायता, सुगन्धवाला और इन्द्रजौ —इन का काढ़ा त्रिदोषज अतिसार, ज्वर, वमन, शूलके उपद्रव सहित श्वास और दुस्तर खाँसी को नाश करता है।

नोट—सामान्य रीति से, पित्तके रोग में लघु पंचमूल और वातकफ के रोग में बृहत्पंचमूल लेना चाहिये।

(१४८) हरड़, सोंठ, नागरमोथा और पुराना गुड़—ये चारों बराबर-बराबर लेकर गोलियाँ बना लो। इन चतु: सम नामक गोलियोंसे सब तरह के अतिसार, आमातिसार, अफारा, मलबन्ध, हैज़ा, कृमिरोग और अरुचि,—ये सब नाश होकर अग्नि दीप्त होती है।

(१४९) नीली कुड़े की छाल १६ तोले लाकर, चाँवलों के पानी में पीस कर, गोलासा बना लो। पीछे उस गोले पर जामुनके पत्ते लपेट कर ऊपर से डोरा बाँध दो। इसके बाद उस पर गेहूँका आटा लपेट दो। इसके बाद उस पर मिट्टी का लेप कर दो। शेष में, उस गोलेको आरने कण्डोंकी आगमें पकाओ ; जब लाल हो जाय, निकाल लो। पीछे शीतल होने पर, उसमेंसे दवा निकाल, कपड़ेमें रस निचोड़ लो और उस रस को "शहत" के साथ सेवन करो। इसे "कुटजपुटपाक" कहते हैं। इससे सब तरहके अतिसार, पुराने अतिसार और रक्तातिसार नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१५०) कुड़ेकी छालका काढ़ा बनाकर, कपड़ेमें छानकर, शीतल कर लो। पीछे उसमें काढ़ेका आठवाँ भाग "अतीसका चूर्ण" मिलाकर सेवन करो। इससे त्रिदोषातिसार नष्ट होता है।

रक्तातिसार नाशक नुसख़े।

नोट—ऊपर लिखे हुए अतिसारोंके सिवा "रक्तातिसार" एक अलग अतिसार है। इस अतिसारमें ख़ूनके दस्त होते हैं। कभी केवल ख़ूनके दस्त होते हैं और कभी मल के साथ ख़ून आता है। और अतिसारोंके पुराने होने पर भी ख़ून आया करता है। यह अतिसार पित्तज अतिसार होने अथवा उस के होने के कुछ दिन पहले पित्त कुपित करने वाले पदार्थ खाने पीने से होता है। इसमें रोगी को बड़ा कष्ट होता है।

वत्सकादि काथ।

(१५१) कुड़ेकी छाल, अतीस, बेलगिरी, नगरमोथा और ख़स—इन पाँचों का काढ़ा शूल या वेदना-सहित रक्तातिसार को नाश करता है।

नोट—कोई-कोई इस काढ़ेमें "ख़स" की जगह "नेत्रवाला" डालते हैं। हमारा परीक्षित है। इससे ख़ून, आँव और मरोड़ी तीनों आराम होते हैं। रसिक-शिरोमणि पण्डितवर लोलिम्बराज महोदय कहते हैं:—

> वाले बाललता प्रवाल ललिताका रांघ्रिहस्ताधरे।
> मल्ली माल्यलसत्कुचक्षितिधरेरत्नज्वलन्मेखले॥
> चंचत्कुण्डलमण्डलेविजयतेरक्तामशूलान्वितातीसारं।
> कुटजाब्द विश्वकविषे दीप्यैः कषायः कृतः॥

हे बाले! हे षोड़शी! कोमल लता के नये-नये पत्तोंके समान सुर्ख़ हाथ पैरों और होठों वाली! तेरे पर्वत-जैसे कुचों पर चमेली के हार पड़े हुए हैं, तेरे गालोंपर प्रकाशमान कुण्डल झूल रहे हैं और रत्नों से शोभायमान मेखला पड़ी है। ऐ सुन्दरी! कुड़ेकी छाल,

नागरमोथा, वेलगिरी, अतीस और नेत्रवाला—इनका काढ़ा रक्त, आम और शूल वाले अतिसार को जीतता है।

रसाञ्जनादि चूर्ण।

(१५२) रसौत, अतीस, कुड़े की छाल, धायके फूल, सोंठ और इन्द्रजौ—इन छहोंको कूट-पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्णको शहद मिलाकर, चाँवलोंके धोवनके साथ, सेवन करनेसे "रक्तातिसार" निश्चय ही आराम होता है। यह भी हमारा परीक्षित है।

पथ्यादि चूर्ण।

(१५३) हरड़, वच, अतीस, संचर नोन, हींग और इन्द्रजौ—इनको कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। इस चूर्णके सेवन करनेसे आम, मलबन्ध और गुदाके शूल-समेत रक्तातिसार नाश होता है। परीक्षित है।

कुटजादि क्वाथ।

(१५४) इन्द्रजौ, अतीस, नागरमोथा, सुगन्ध वाला, लोध, लालचन्दन, धायके फूल, अनार का छिलका और पाढ़—इनका काढ़ा बना कर, शीतल होने पर, उसमें "शहद" मिलाकर पीनेसे रक्तातिसार से उत्पन्न हुए दाह और शूल तथा सब तरह के अतिसार आराम होते हैं।

ग़रीबी नुसखे।

(१५५) अनार के कच्चे फल का छिलका और कुड़ेकी छाल—इन दोनोंके काढ़े में, शीतल होनेपर, "शहद" डालकर पीने से तत्काल रक्तातिसार आराम होता हैं। परीक्षित है।

नोट—दोनों दवाएँ एक-एक तोले लेकर अठगुने यानी १६ तोले जल में पकाओ। जब आठवाँ भाग यानी दो तोले जल रह जाय, तब मल छान और शीतल कर, उस में डेढ़ माशे शहद मिला कर रोगी को पिला दो।

(१५६) नौनी घी को शहद और मिश्रीके साथ खानेसे रक्तातिसार आराम होता है।

(१५७) सफ़ेद चन्दन घिसकर उसमें शहद और चीनी मिलाकर चाँवलों के धोवनके साथ पीने से रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्यास, दाह और प्रमेह,—ये सब नाश होते हैं। परीक्षित है।

(१५८) शतावरको जलके साथ पीसकर लुगदीसी बनाकर, दूधके साथ पीनेसे रक्तातिसार नाश होता है। इस नुसखे पर दूध पीना बहुत ज़रूरी है।

नोट—(१) शतावर के रस में चीनी मिलाकर पीने अथवा शतावर की जड़ का रस दूध के साथ पीने से रक्तातिसार निश्चय ही आराम होता है।

नोट—(२) दो तोला शतावर को आध पाव जल में औटाओ; जब एक छटाँक जल रह जाय, तब छान कर उसमें एक छटाँक बकरीका दूध मिलाकर पीजाओ। इस तरह भी ख़ून के दस्त आराम हो जाते हैं।

(१५९) काले तिलोंको सिलपर जलके साथ पीसकर लुगदीसी बना लो। पीछे जितनी लुगदी हो, उसका पाँचवाँ भाग चीनी उसमें मिला दो। उस चीनी-मिली लुगदीको दूधके साथ उतार जाओ। इस कल्क या लुगदी से रक्तातिसार फ़ौरन् आराम होता है।

(१६०) कच्चे बेलके गूदेमें गुड़ मिलाकर खाने से रक्तातिसार, आम-शूल, मलबन्ध और कुक्षि रोग आराम हो जाता है। इसके सिवा ख़ूनके अनेक रोग भी आराम होते हैं। मात्रा दो तोलेकी। परीक्षित है।

(१६१) जामुन, आम और आमले के नये-नये पत्ते लाकर, सिल पर पीसकर, कपड़े में रखकर रस निकाल लो। उस रस में "शहद" मिलाकर बकरीके दूधके साथ पी जाओ।

नोट—तीनों तरह के पत्तों का स्वरस वज़न में दो तोले होना चाहिये। मगर एक मित्र-वैद्यकी रायमें तीनोंका स्वरस ६ मासे, शहद ३ मासे और बकरीका दूध एक तोला मिलाकर पीना अच्छा होगा। परीक्षित है।

(१६२) बकरीके दूधमें बेलगिरी डालकर औटाओ। औटनेपर, दूधमें मिश्री, मोचरस और इन्द्रजौ का पिसा-छना चूर्ण डालकर पी जाओ। इस योगसे रक्तातिसार नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—बकरी के दूध में बेलगिरी डालकर औटाने और पीने से भी रक्तातिसार आराम हो जाता है।

(१६३) मुलेठी, काले तिल, कमलकी केशर और कामल,—इन सबको पीस कर, इनकी लुगदीमें शहद और मिश्री मिलाकर,बकरीके दूधके साथ सेवन करनेसे रक्तातिसार नाश हो जाता है।

(१६४) कुरैयाकी ताज़ी छाल आठ तोले लेकर अठगुने जलमें औटाओ और आठवाँ भाग यानी आठ तोले पानी रहने पर उतार कर छान लो। फिर अनारके फलका छिलका आठ तोले लेकर, उसी तरह ६४ तोले जल में औटाओ और ८ तोले जल रहने पर उतार कर छान लो। पीछे दोनों काढ़ोंको एक में मिलाकर औटाओ; जब गाढ़ापन आजाय, उतार लो। इसमें से एक तोले की ख़ूराक खाकर, ऊपर से दहीका माठा पीने से रक्तातिसार निश्चयही नाश होता है।

(१६५) कुकुर भाँगरेको जलमें पीसकर गोली बना लो और उसे खा जाओ। इससे आमातिसार, शूल और रक्तातिसार सब आराम होते हैं।

(१६६) नौनी घी और नागकेशर को मिलाकर खानेसे गुदासे ख़ून गिरना बन्द हो जाता है; चाहे ख़ूनी अतिसार से ख़ून गिरता हो और चाहे ववासीर से। ख़ूनी ववासीरका ख़ून बन्द करनेमें यह नुसख़ा अच्छा काम देता है।

(१६७) काली मिट्टी, मुलेठी, कुड़े की छाल और इन्द्रजौ—इनको एकत्र पीसकर और शहद मिलाकर, चाँवलोंके धोवन के साथ, सेवन करनेसे रक्तातिसार या गुदासे ख़ून गिरना बन्द हो जाता है।

(१६८) जामुनकी छाल अथवा आमकी छाल—इन दोनोंमेंसे किसी एककी छालको पीसकर, दूधया शहदके साथ, पीनेसे रक्तातिसार आराम होता है।

(१६९) जल-चौलाई और कच्चे बेलको पकालो। पीछे इनमें

नौनी घी मिला कर सेवन करो। इससे शूल-युक्त संग्रहणी और रक्ता-तिसार आराम हो जाते हैं।

(१७०) कुड़े की छाल चार तोले लेकर ३२ तोले जल में पकाओ। काढ़ा हो जाने या चार तोले जल रह जाने पर, उसमें ४ तोले अनारका रस डाल दो और फिर पकाओ। जब पकते-पकते खूब गाढ़ा हो जाय, उतार लो। शेषमें; आठ माशे माठा मिला कर पी जाओ। इससे रक्तातिसार से मरनेवाला रोगी भी बच जाता है। रामबाण है।

(१७१) मिश्री और शहद मिलाकर पीने, नौनी घी पीने या माठा पीने से, दस्त से पहले या पीछे, खून का गिरना बन्द हो जाता है।

(१७२) चौलाईकी जड़को सिल पर पीस कर लुगदी बना लो; पीछे चाँवलों के जलमें शहद और मिश्री मिलाकर, इस जलसे उस लुगदी को खा जाओ। इस नुसखे से भी गुदा से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१७३) आठ तोले कुड़े की ताज़ा छाल को सवा सेर जल में औटाओ, जब चौथाई या पाँच छटाँक जल रह जाय, उसमें आठ तोले बकरी का दूध डाल दो और पकाओ। जब पकते-पकते केवल दूध रह जाय, उतार लो। शीतल हो जाने पर, उसमें ८ माशे "शहद" मिलाकर पी जाओ। इसको "कुटजक्षीर" कहते हैं। इससे रक्ताति-सार नष्ट हो जाता है।

(१७४) प्याज़को काट कर उसका ज़ीरा बना लो और खूब घी डालो। पीछे उसे ताज़ा दही के साथ खाओ। इससे आम और खून के दस्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७५) ज़ीरा, धनिया और बच—तीनों को दश-दश माशे लेकर, अठ गुने या २० तोले जलमें काढ़ा बनाओ। आठवाँ भाग या अढ़ाई तोले रहने पर उतार कर मल-छान लो। इसके पीने से रक्तातिसार, आमातिसार और खाँसी ये रोग आराम होते हैं।

(१७६) नीबूके रसमें अफीम मिलाकर और उसे दूधमें डालकर पीने से रक्तातिसार और आमातिसार आराम हो जाते हैं।

(१७७) अफीम ४ माशे, जायफल २ माशे, शुद्ध धतूरे के बीज २ माशे,अभ्रक-भस्म दो माशे और भुना सुहागा २ माशे—इन सबको खरल में पीस, ऊपर से प्रसारिणीके पत्तों का रस डालकर घोटो और चने-बराबर गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सवेरे-शाम "शहद"के साथ सेवन करने से रक्तातिसार आमातिसार और संग्रहणी—तीनों निश्चय ही आराम होते हैं। परीक्षित है।

(१७८) गेरू, कत्था, राल, गोंद,कतीरा, छिले हुए कौंचके बीज और बेलगिरी—इन सबको कूट पीस छान कर जङ्गली बेरके समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, सवेरे शाम, जलके साथ खाने से वह रक्तातिसार जिसमें सूद या गाँठे नहीं होतीं आराम हो जाता है तथा आँतोंके छिल जानेसे हुआ रक्तातिसार भी अच्छा हो जाता है।

(१७९) चनों की भूसी २ तोला, कोरी हाँड़ी में डाल, ऊपर से दो सेर पानी डाल भिगो दो और कोई ३ पहर बाद उस जल को छान कर रख लो। इस जल को रोगी को बारम्बार पिलाने से भीतर का दाह और खून के दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१८०) चाँवलों के धोवन में मिश्री मिला कर पिलाने से खून के दस्त, रक्तप्रदर और भीतरी दाह नाश हो जाता है।

नोट—अकेले देने के बजाय, यदि न० १७६ और न० १८० में से कोई एक किसी प्रधान औषधि के साथ बीच-बीच में दिया जाय, तो अच्छा फल होगा।

(१८१) खूब पके हुए मीठे अनारका रस आधसेर लेकर और उसमें मिश्री डालकर क़लईदार कड़ाहीमें पकाओ। जब लेहीके समान चाशनी होजाय, तब उसमें—वंसलोचन, छोटी इलायची, धनियां, मस्तगी, गिलोयका सत्त, अनारदाना, बेलगिरी, पोदीना, दालचीनी, जायफल और नागकेशर,—इन सबको चार-चार माशे कूट-पीस-छानकर मिला दो और चूल्हेसे नीचे उतार कर अमृतबानमें रख दो। इसको "दाड़ि-

सावलेह" कहते हैं। सवेरे-शाम एक-एक तोला खानेसे रक्तातिसार प्रवाहिका और मन्दाग्नि आदि रोगोंको आराम करता है। यह अवलेह रुचि बढ़ाने वाला, जठराग्नि दीपन करने वाला और हृदय को हित है।

(१८२) बेलगिरी को पुराने गुड़ में मिला कर खानेसे दस्तके साथ खून जाना, आम मरोड़ी और हवाका रुकना—ये सब आराम होते हैं। परीचित है।

(४८३) बेलगिरी और पाढ़—दोनोंको समान भाग लेकर, चूर्ण बना लो। पीछे चूर्ण के वज़नके बराबर मिश्री मिला दो। इसमेंसे ४ माशे चूर्ण शीतल जल के साथ सेवन करने से खूनी बवासीर और रक्तामाशय आराम होते हैं।

(१८४) बेलगिरी १ तोला, धनिया १ तोला और मिश्री २ तोला—एकत्र पीस कर, छै छै माशे, सवेरे, दोपहर और शामको, शीतल जल के साथ लेने से, दस्त के साथ खून गिरना और गुदा में जलन होना, —ये सब आराम हो जाते हैं।

(१८५) बेलगिरी, नागकेशर और रसौत—सबको समान भाग लेकर पीस-छान लो। चार-चार माशे यही चूर्ण चाँवलोंके धोवनके साथ लेने से रक्तातिसार, खूनी बवासीर और स्त्रियोंके श्वेत और रक्तप्रदर आराम होजाते हैं।

सूचना—बेलका कच्चा फल ही गुणकारी होता है। पकने पर वह दोषल हो जाता है; पर वह बिल्कुल बेकाम नहीं होता। पके फल से भी कितने ही रोग जाते हैं। कच्चा बेल अधिक दीपन और पाचन होता है। इस कारण आमाशय और मन्दाग्नि आदि रोगोंमें कच्चा बेल ही अधिक उपयोगी समझा जाता है। हृदय-रोग, रक्तामाशय और पित्त के रोगों में पका बेल हितकर होता है।

(१८६) पके बेलके गूदे को सुखा कर और उस में उसके बराबर सौंफ मिला कर, दोनों को एकत्र पीस कर, दोनों के वज़न के बराबर मिश्री मिला कर, शीतल जल के साथ चार-चार माशे चूर्ण फाँकने से खूनके दस्त बन्द हो जाते हैं।

हकीमी नुसख़े।

(१८७) कनौचे के बीज, खुरफे के बीज, सौंफ के बीज, इमाम़ के बीज, खीरेके बीज, अलसी के बीज, और बीज रीहान—इनको सात-सात माशे लो और गिले अरमनी, बंसलोचन, गोंद तथा निशास्ता—ये सब एक एक तोले लो। इन सब को कूट पीस कर छान लो। शेष में इस चूर्ण में सात माशे ईसबगोल मिला कर रख लो। इसकी मात्रा जवान को ८ माशे की है। एक मात्रा खाकर, ऊपर से शर्बत हब्बुलास पीओ। इस से गरमी के दस्त और खून के दस्त तथा सब तरह के अतिसार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८८) खून के दस्त होते हों; तो रोगी को "शर्बत अंजवार" दो या शर्बत हब्बुलास दो अथवा दोनों मिला कर दो। बीच-बीचमें सेव या बीहका मुरब्बाभी खिला दो। इस तरह १ हफ्तेमें आराम होगा। खाने को दही भात और मिश्री दो।

नोट—अगर बुखार न हो, खाली आँव-खून के दस्त हों; तो दही, भात और मिश्री दो। ज्वर में दही भात देना अनुचित है। अनेक बार केवल दही भात और मिश्री के खाने से आँव और खूनके दस्त मिट जाते हैं, पर भात खूब बढ़िया पुराने चाँवलों का होना जरूरी है।

(१८९) मरोड़ीके साथ आँव और खूनके दस्त होते हों; तो शर्बत अंजवार दो। इस रोगमें यह शर्बत बहुत गुणकारी है। इससे नाभिके नीचे की पीड़ा भी आराम हो जाती है। शर्बत खशखाश या बेल का मुरब्बा भी अच्छा काम देता है।

(१९०) गाय का दूध ५ तोला, मक्खन १ तोला, मिश्री ६ माशे और शहद ३ माशे—इन सबको मिलाकर पीने से दस्तों द्वारा खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१९१) आध पाव दही में १ तोला शहद मिला कर पीने से भी दस्त बन्द हो जाते हैं।

(१८२) ईसबगोल की भूसी ३ माशे और शक्कर ३ माशे—दोनों को मिला कर आध पाव शर्बत या शीतल जल के साथ सेवन करनेसे बहुत पुराने खून के दस्त भी आराम हो जाते हैं।

(१८३) आम के पत्ते, आमलेके पत्ते और बबूलके पत्तोंका दो-दो माशे स्वरस निकाल कर, उसमें ६ माशे शहद मिला कर,सेवन करने से सब तरह के दस्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८४) धनिया,सौंफ,कासनी,आमले,गुलाबके फूल,छोटी इलायची, ईसबगोल की भूसी और मिश्री,—इन सब को एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण की मात्रा जवानको २ माशे की है। सवेरे शाम और दोपहरको एक-एक मात्रा दवा जलसे उतार जानेसे आँव और खूनके दस्त निश्चय ही आराम हो जाते हैं। साथ ही पेशाब की जलन, पेशाब का लाल होना, पेट जलना और जी घबराना प्रभृति शिकायतें भी मिट जाती हैं। परीक्षित है।

(१८५) ईसबगोल चार माशे लाकर, आध पाव दूध और आध पाव जल में पकाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, उस में थोड़ी मिश्री डाल कर खाओ। इस से खून के दस्त, प्यास और दाह आदि मिटते हैं। यह खीर अत्यन्त वीर्य वर्द्धक और स्तम्भक है। इस से खूब रुकावट और धातुपुष्टि होती है।

आमातिसार या पेचिश की चिकित्सा।

आमातिसारमें क़रीब-क़रीब वही लक्षण होते हैं, जो प्रवाहिकामें होते हैं। प्रवाहिका के वर्णनमें हम इस सम्बन्धमें बहुत कुछ लिख आये हैं और आगे भी लिखा है। वहाँ पढ़ लेना चाहिये। इस बीमारी की चिकित्सा में सञ्चित मल को निकाल देना अच्छा है। अगर रोगी कमज़ोर न हो, तो दो तोले अरण्डी का तेल गरम दूधमें

अथवा सोंठ के काढ़े में मिलाकर दे दो। इससे मल निकल कर पेट साफ हो जायगा और फिर साधारण धारक दवा देने से भी आराम हो जायगा।

इस रोग में प्रवाहिका की तरह मरोड़े चल-चल कर दस्त होते हैं, दस्त जाते समय काँखना होता है और वहीं बैठे रहने को मन चाहता है, नाड़ी तेज़ चलती है, ज्वर भी हो जाता है, तथा जीभ पर सफेद थर जम जाता है। आमातिसार में बड़ी आँतों में सूजन हो जाती है, अस्तर लाल हो जाता है और घाव पड़ जाते हैं; जिस से पहले खून और आँव पड़ते हैं तथा पीछे पीव आती है। अगर यह रोग २१ या ३१ दिन तक रह जाय, तो फिर पुराना कहाता है। पुराना रोग बड़ी कठिनाई से जाता है।

इस रोग का इलाज हाथ में लेकर पहले रोगी का पेट देखो, कि सूजन है या नहीं। दवानेसे जहाँ दर्द हो, वहाँ सूजन समझो और वहाँ सेक करो। ज़रूरत हो, तो राई का पलस्तर धरो। इस रोग में अरण्डी के तेल का जुलाब आरंभ में देना बहुत ही हितकर है। अफीम इस रोग में अकसीर है; पर अरण्डीके तेलसे मल निकाल कर पीछे उसका देना उचित है। अनेक वैद्य अरण्डी के दो तोले तेलमें दो तोले "शर्बत सन्तरा" मिलाकर भी देते हैं। इससे भी-सञ्चित मल निकल जाता है।

ग़रीबी नुसखे।

(१८६) धनिया ४ माशे, सोंठ ४ माशे, नागरमोथा ४ माशे, सुगन्ध वाला ४ माशे और बेलगिरी ४ माशे—इनको एकत्र पीसकर ३० तोले जलमें पकाओ। जब ८ तोला जल रह जाय, उतारकर छान लो। इस काढ़े से आम पच जाता है। परीक्षित है।

(१८७) शहद के साथ हरड़ सेवन करने से गुदा के शूल-समेत आमातिसार आराम होता है।

(१९८) अफ़ीम, शुद्ध कुचला और सफ़ेद मिर्च,—इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर और महीन पीस कर, खरलमें डाल, अदरखका रस दे देकर घोटो। जब घुट जाय, गोल मिर्च के समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सोंठ के चूर्ण और गुड़ के साथ मिला कर सेवन करनेसे आम और मरोड़ी के दस्त या पेचिश, ये फ़ौरन आराम हो जाते हैं। इस नुसख़ेसे पेट वग़ैरः नहीं फूलता और पुरानेसे पुराना भयानक अतिसार चार पाँच गोलियोंसे आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१९९) पाढ़की जड़का काढ़ा पीने से आँव और मरोड़ी के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२००) चिरचिरेकी जड़ जलमें घिसकर पीनेसे आँव और मरोड़ी के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२०१) पीपल और हरड़ पीसकर फाँकने और ऊपर से गरम जल पीने से पाख़ाना साफ़ होता है और आमातिसार की मरोड़ी मिट जाती है। परीक्षित है।

(२०२) जावित्री दो माशे पीसकर दही की मलाई या दही में मिलाकर खाने से, सात दिन में, भयानक से भयानक आमातिसार एवं और प्रकार के अतिसार आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२०३) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, हींग, कुड़ेकी छाल और चीता, —इन छहोंका काढ़ा बनाकर पीनेसे आमातिसार नष्ट हो जाता है।

नोट—इन्हीं छहों दवाओं को कूटपीस छानकर कर, चूर्ण बना लों। गरम जल, शराब अथवा धान की काँजीके साथ इस चूर्णके सेवन करने से पचकर आमातिसार नाश हो जाता है।

(२०४) धनिया दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ और मिश्री मिला कर पी जाओ। इससे पेचिश में अवश्य लाभ होता है।

(२०५) धनिया २ तोला और सौंफ २ तोला—दोनों को घी में भूँजकर, २ तोला मिश्री मिला दो और दिनमें ३।४ बार छै छै माशे

फाँको; ऊपर से ज़रा सा जल पीलो। इस नुसख़े से आमातिसार, पेचिश, भीतरी जलन और मामूली खाँसी—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२०६) सोंफ को ज़रा भूनकर और उसमें बराबर की मिश्री मिलाकर, दिनमें ४।५ बार, फाँकने से आँव और मरोड़े के दस्त आराम होते हैं। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है। परीक्षित है।

(२०७) चिरचिरेके बीजोंको पानी के साथ भाँगकी तरह पीसकर लुगदीसी बनालो और उसे चाँवलों के धोवन में घोल कर पी जाओ। इससे भी पेचिश और आँव मरोड़ी नाश होती है। परीक्षित है।

(२०८) अफ़ीम, जायफल, लौंग, केशर और कपूर—सब बराबर-बराबर लेकर जलके साथ घोट कर दो दो रत्तीकी गोलियाँ बनालो। हरवार सवेरे शाम एक-एक गोली, गरम जल के साथ, लेने से आम-राचसी, आमातिसार और हैज़ा,—ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२०९) पीपल और हरड़ का चूर्ण फाँक कर, ऊपर से गरम जल पीने से आमातिसार की पीड़ा मिट जाती है। परीक्षित है।

(२१० पीपल, मँजीठ, नागरमोथा और काकड़ासिंगी, चारों समान-समान लेकर चूर्ण बनालो। एक या दो माशे चूर्ण "शहत" में देने से बालकों का अतिसार, ज्वर, खाँसी और वमन नाश होते हैं। परीक्षित है।

(२११) जाविन्नी का चूर्ण २ या २॥ माशे, दही की मलाई या गाय के दही में मिलाकर, ७ दिन, खानेसे भयानक से भयानक अतिसार आराम होता है। आमातिसार और अन्य अतिसार सभी पर यह नुसख़ा लाभदायक है। परीक्षित है।

(२१२) सोंफ के पानी में गेहूँ का आटा भिगोकर सानो और रोटी बनाकर खाओ। इससे पेचिशमें बहुत फ़ायदा होता है।

(२१३) खस-खस के बीज महीन पीस कर और दही में मिला कर खानेसे आँव या मरोड़ेके दस्त आराम हो जाते हैं।

(२१४) गाय के माठे में सोंठ, सेंधानोन और काली मिर्च पीस कर मिलाने और पी जाने से पेचिश या आमातिसार आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२१५) गुड़ चार तोले और सोंठ दो तोले,—इन दोनों को पीस-कूटकर मिला लो। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक। इसके सेवनसे पेचिश या आमातिसार आराम होता है।

(२१६) आम की छाल उतार कर, उसके ऊपर की काली-काली छाल फेंक दो और भीतर की पीली-पीली छाल ले लो। इस छाल को पानी में घिस कर और ज़रा सा जल मिला कर पी जाओ। इस दवा से ३ दिन में पेचिश या आम मरोड़के दस्त आराम हो जाते हैं।

नोट—इस दवा को जल में घोलते ही पी जाना चाहिये। देर करने से जम जाती है; फिर पीने लायक़ नहीं रहती। बहुत क्या—एक सेकण्ड में ही ख़राब हो जाती है।

(२१७) फालसे की जड़, जौकुट करके, रातके समय, एक हाँड़ी में भिगो दो; सवेरे उसे मल छान कर, उसका लुआब निकाल लो। एक तोला "साबत ईसबगोल" फाँक कर, ऊपरसे इस फालसेकी जड़ के लुआब को पी जाओ। इससे पेचिश ५।६ दिन में फ़ौरन आराम हो जाती है।

(२१८) साफ अफ़ीम और साफ चूना बराबर-बराबर लेकर, मसूर या मिर्चके दाने के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली जल के साथ निगल जाने से आमातिसार या सादिक़ ज़हीर यानी पेचिश आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—एक बार इस नुसखे से हमने एक असाध्य रोगीको आराम किया है। कितनी ही दवाएँ देकर जब हार गये, शेष में निराश होकर यही गोली दी। इससे रोगी की आँतोंका सड़ा हुआ मल निकल गया और रोगी को चैन आगया। जिस रोगी को क्षण-भर चैन न पड़ता था, वह एक दस्त होते ही सुख से सो गया। एक दस्त में कोई दो अढ़ाई सेर मवाद निकला।

(२१८) साढे चार माशे खजूर पीस कर और दही में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२०) अनार की पत्तियाँ पीस कर और एक प्याले जल में घोलकर पीने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२१) कतीरा रात को पानी में भिगोकर और सवेरे ही चीनी मिलाकर पी जाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२२ लिसौढ़े की कोंपलें पीस कर और गोली सी बनाकर खा जाने से पेचिश आराम हो जाती है

(२२३) सुपारीकी राख दहीमें मिलाकर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२४) सफेद ज़ीरा पीस कर और दही में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

नोट—सफेद जीरा भूँज कर और दही में मिला कर खाने से दस्त बन्द हो जाते हैं।

(२२५) माजू ४ भाग, अफ़ीम २ भाग, और अजवाइन १ भाग,—इन सब को कूट छान कर चने-समान गोलियाँ बनाकर, रोज़ सवेरे १ गोली खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२२६) पीसी हुई मुल्तानी मिट्टी—बिहीदाने और ईसबगोल के लुआब में मिला कर खाने से पेचिश आराम हो जाती है।

पहले बिहीदाना १ तोले और ईसबगोल १ तोले लाकर, कोरी हाँडी में रात को भिगो दो। सवेरे रेज़ी के कपड़े में मल छान कर लुआब निकाल लो। पीछे उसमें ६ माशे मुल्तानी मिट्टी मिला कर पी जाओ। परीचित है।

(२२७) सुंडी और सौंफ बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीस कर, फिर दोनों के वज़न के बराबर मिश्री मिलाकर, जलके साथ; सेवन करने से आमातिसार आराम होता है।

२२८) सुहागे की खील २ माशे, शुद्ध सिंगरफ १ माशे और अफीम

४ रत्ती—सब को जल के साथ खरल कर, एक एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। हर दिन, सवेरे-शाम, एक-एक गोली, जल के साथ, सेवन करने से आमातिसार या बिना आम का अतिसार दोनों आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२२८) बेल के कच्चे फल को आगमें भून कर खाने से दस्त और मरोड़ी आराम होते हैं।

(२३०) बेलगिरी और आम की गुठलीकी मींगी—दोनों समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमें से ४ माशे चूर्ण शीतल जल या चाँवलों के माँड़ के साथ सेवन करने से आमातिसार और ऐंठनी आराम होती है।

नोट—बेलगिरी और अदरख—दोनों समान ले कर पीस लो। पीछे खाँड की चाशनी में मिला कर अवलेह बना लो। ऊपर से ज़रा सी छोटी इलायची पीस कर मिला दो। इस अवलेह से आमातिसार के कारण बन्द हुई भूख खुल जाती है।

(२३१) बेलकी जड़ और सौंफ चार-चार माशे लेकर, पाव भर जल में पकाओ। जब १ छटाँक जल बाक़ी रहे, तब उतार कर छान लो। फिर इसमें डेढ़ तोला मिस्री डाल कर पी जाओ। इससे आम-शूल और ज्वरातिसार आराम होते हैं।

(२३२) यदि आमातिसार में मल थोड़ा-थोड़ा और दिक़्क़त से निकले और मरोड़ी हो; तो बड़ी हरड़ का बक्कल ४ माशे, दाख ४ माशे, सौंफ ४ माशे और गुलाबके फूल ४ माशे,—इन सबको १ पाव जलमें औटाकर, चौथाई पानी रहने पर मल-छान कर पिलाओ। इस से कोठा हल्का हो जाता है।

(२३३) छोटी हरड़ ४ माशे और छोटी पीपर ४ माशे, दोनों को एकत्र कर १ छटाँक जल में पीस कर, कुछ गरम कर के पीनेसे एकाध दस्त साफ आ जाता है। आमातिसार वाले को आरम्भ में यह नुसख़ा देने से लाभ होता है।

(२३४) धनिया, सौंठ, कच्ची बेलगिरी, खस और नागरमोथा—इन

का काढ़ा शूल-युक्त आमातिसार को नाश करता तथा ज्वर को भी आराम करता है। यह दीपन और पाचन है। परीक्षित है।

(२३५) पीपल, पीपला मूल, गजपीपल, चीता, सोंठ, अतीस, और कालानोन,—इन सबको मिलाकर दो तोले ले लो। पीछे कूट पीस कर ज़रा सी भुनी हींग मिला दो और सेवन करो। इससे एकाधा दस्त हो कर आम और पेट का दर्द शान्त होता है।

नोट—अगर पेट में पीड़ा या अफारा हो तो उत्तम हींग, सेंधानोन, पीपलका चूर्ण, कालीमिर्चका चूर्ण और सोंठका चूर्ण—समान भाग लेकर, जल डाल कर, एकत्र पीसो और पेट पर लेप कर दो। इस उपायसे पेटका अफारा और पीड़ा निश्चयही शान्त हो जाती है। जरूरत पड़नेसे इस लेपको अवश्य लगाना चाहिये। अनेक-वार देखा है कि, इस लेपसे रोते रोगी हँसने लगते हैं।

अथवा

अलसी की पतली पुलटियमें ज़रासा कपूर डाल कर, पेट पर बाँधो। इससे शूल, अफारा और वेदना सब उपद्रव नाश हो जाते हैं।

(२३६) २० माशे मरोड़फली पानी में भिगोकर और मल कर खिलाने से पेचिश आराम होती है।

(२३७) काली ज़ीरी ४ तोले, हरड़ ४ तोले और हालों १ तोले— इन सब को "घी" में भून कर पीस लो। उधर खाँड़ की चाशनी बना कर, उस पिसे मसाले को चाशनी में मिला दो और ऊपर से ६ माशे मस्तगी भी मिला कर रख दो। खूराक २ तोला। रोज़ सवेरे शाम सेवन करने से पेचिश आराम हो जाती है।

(२३८) कीकरका गोंद, ईसबगोल, तुख़्म रीहाँ और निशास्ता,— सबको समान भाग लेकर, पीस कूटकर रख लो। मात्रा २ से ४ तोले तक। पेचिशको मुफ़ीद है।

नोट—ईसबगोल को छोड़ कर और सब को कूटो पीसो ; ईसबगोल सदा साबत ही काममें लिया जाता है ; यह कूटा पीसा नहीं जाता।

(२३९) छोटी हरड़ और सौंफ—दोनोंको "घी"में भूँज कर पीस

लो और मिश्री मिला कर १ तोला रोज़ खाओ। यह नुसख़ा पेचिश के लिए मुफीद है।

(२४०) बेलगिरी १ तोला, कुरैयाकी छाल २ तोला, सौंफ १ तोला छोटी हरड़ १ तोला, ईसबगोल ६ माशे और मिश्री ३ माशे—ये सब लेकर रक्खो। सबसे पहले ३ तोले हरड़ "घी" में भून लो। ईसबगोल को छोड़ कर, ऊपर की सब दवाओं को कूट पीस लो। इसके बाद घीमें भुनी हरड़को पीस कर उन्हींमें मिला दो। शेष में, ईसबगोलको भी मिला दो। मात्रा ७ माशे से १ तोले तक। सवेरे-शाम खानेसे आम और खून के दस्त, मरोड़ी और पेचिश—ये रोग निश्चय ही आराम होते हैं।

(२४१) सोंठका चूर्ण ५ तोले लेकर, उसे "घी"में सान कर गोला बनाओ। उस गोले पर अरण्डीके पत्ते लपेट कर डोरा बाँधो। इसके बाद उस पर दो-दो अँगुल मिट्टी चढ़ाओ और सुखा लो। शेष में उसे जङ्गली कण्डों की आग में पकाओ। जब पक जाय, निकाल लो। मिट्टी और पत्ते अलग कर भीतर से सोंठ को निकाल कर रख लो। इस सोंठके चूर्णमेंसे ४ या ६ माशे लेकर, उसमें मिश्री मिला लो और सवेरे-शाम खाओ। इस पुटपाक से आमातिसार निश्चय ही नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कुराठी पुटपाक की विधि हम ऊपर लिख आये हैं। सिर्फ लपेटने के पत्तों में भेद है और सब एक ही बात है। आमातिसार या पेचिश वालों को यह पुटपाक रामबाण है।

प्रवाहिका की चिकित्सा।

नोट—आमातिसार, आमाशय या प्रवाहिकाको साधारण लोग पेचिश या आँव-लोही या मरोड़ीके दस्त कहते हैं। इन सबमें ध्यान देने योग्य अन्तर है। प्रवाहिकाके सम्बन्ध में ऊपर हिदायतें लिख आये हैं, पर ऊपर हम डाक्टरी और यूनानी मत का

दिग्दर्शन कराना भूल गये और उक्त दोनों मतों की हिदायतें चिकित्सक के लिये हैं बड़ी लाभदायक। डाक्टर हकीमोंने प्रवाहिका के सम्बन्धमें बहुत सी नयी और उपयोगी हिदायतें बड़ी खोजसे लिखी हैं,जो हमारे वैद्यक-शास्त्रमें नहीं हैं। नौसिखिये वैद्यों को उन हिदायतों को खूब समझ कर उन के अनुसार काम करना चाहिये। उन से उन्हें चिकित्सा में अवश्य बड़ी सहायता मिलेगी।

प्रवाहिका पर वैद्यक, हिकमत और डाक्टरीकी हिदायतें।

इस रोग में मल के साथ थोड़ा-थोड़ा कफ निकलता है। पहले बदबूदार, चिकना और चिपकता हुआ कफ-मिला मल निकलता है; पीछे खून भी आने लगता है। इसके बाद ज्वर, प्यास, भूख न लगना, ऐंठनी चलना प्रभृति लक्षण नज़र आते हैं। पाख़ाने जाते समय बारम्बार काँखना पड़ता है। इसीसे इसे "प्रवाहिका" कहते हैं।

खुलासा यों समझिये कि,पेटमें ऐंठनी होकर जो बारम्बार सादा या गुलाबी रङ्ग का आम-मिला दस्त होता है, उसी को "प्रवाहिका" कहते हैं। इस में जब आम के साथ खून आता है, तब इसे "रक्त प्रवाहिका" कहते हैं। हिन्दी में "आम रक्त" (आमलोहू के दस्त), बङ्गभाषामें "आमाशय" या "रक्तामाशय," अँगरेज़ीमें "डिसेण्ट्री" और हिकमत में "पेचिश" कहते हैं। जब रक्त या खून ज़ियादा आता है, तब रक्तातिसार कहते हैं। रक्त प्रवाहिका में गुदा के ऊपर आँतोंमें अनेक घाव हो जाते हैं; इसी वजहसे आमके साथ खून गिरता है। किसी-किसी रोगीको पहले कई दिन क़ब्ज़ रहता है। उसके बाद यह रोग उत्पन्न होता है। किसी-किसी को पहले साधारण अतिसारके समान पतले दस्त होकर, पीछे ख़ाली आँव गिरता है। ३।४ दिन आँव मिला दस्त होने के बाद; आँव के साथ खून भी दिखाई देता है और क्षण-क्षण में आँव और लोहू दस्तमें आता है, पेटमें ऐंठनी होती है, दस्त जाते समय ज़ोर करना पड़ता है और यही दिल चाहता हैं कि, बैठे रहें। इसके पहले दर्जेमें पतले दस्त मरोड़ी देकर आते हैं, दूसरे

दर्जेमें आँव और खूनके दस्त आते हैं। तीसरे दर्जेमें हरे पीले और स्याह दस्त आते हैं, भूख नाश हो जाती और रोगी कमज़ोर हो जाता है।

नोट—आमातिसार छोटी आँत में और प्रवाहिका स्थूल आँत में होती है। आमातिसार में अनेक प्रकार के द्रव पदार्थ अपक्व मल के साथ निकलते हैं ; किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या या खून-मिला कफ निकलता है। जाहिरा दोनों समान ही मालूम होते हैं ; पर दोनों में यह विशेष अन्तर है।

कभी-कभी आमके साथ थोड़ा-थोड़ा या ज़ियादा ज्वर आता है, नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है और जीभके ऊपर सफेद मलाई सी जम जाती है। ज्यों-ज्यों रोग पुराना होता जाता है, त्यों-त्यों आँव और खून ज़ियादा-ज़ियादा गिरता है। साथ ही ऐंठन और पीड़ा भी बढ़ने लगती है। आरम्भमें बड़ी आँतों में सूजन होती है। इसी से उन की तह लाल हो जाती है और पीछे लम्बे-लम्बे या गोल-गोल घाव हो जाते हैं। आँव और खूनके पुराने होनेके बाद पीप गिरने लगती है।

इस का इलाज प्रायः अतिसार की तरह ही किया जाता है ; लेकिन कभी-कभी इस का ख़ास इलाज भी किया जाता है। हमने उधर आमातिसार,रक्तातिसार और पेचिश पर नुसखे लिखे हैं। फिर भी ; पाठकोंके सुभीतेके लिये, ख़ास-ख़ास नुसखे इसको आराम करने वाले फिर लिखते हैं :—प्रवाहिकाके इलाजमें भी पक्व और अपक्व का विचार, अतिसार के लक्षणों के अनुसार, करना होता है।

अगर पहले अत्यन्त क़ब्ज़ होकर रोग हुआ हो या मल-परीक्षा करने पर आँव के साथ मल की छोटी-छोटी कड़ी गाँठें नज़र आवें, तो पहले रोगीको साफ़ अरण्डी का तेल २ तोला, थोड़े गरम दूध में, दो। जब जमा हुआ कठिन मल निकल जायगा, तब मामूली धारक औषधि से आराम हो जायगा।

अगर साधारण उपाय करनेसे लाभ न हो, दस्त ज़ोरसे होते रहें, ज्वर हो, नाड़ी तेज़ीसे चलती रहे और दर्द हो तो समझो कि, आँतों में अभी तक सूजन और घाव हैं। उस दशामें "कुटजाष्टक क्वाथ" दो।

अनार के पत्तों का या अनार के कच्चे फलका रस अथवा कुरैया की छाल का काढ़ा इस रोग में बहुत अच्छा है, पर रोगके आरम्भ में कुरैया की छाल न देनी चाहिये।

पेट का दर्द आराम करने के लिए तारपीन का तेल पेट पर मलना चाहिए।

तीन माशे मैगनेशिया एक छटाँक सौंफके अर्कमें घोल कर, चार-चार घण्टे के अन्तर पर, ३।४ बार, सेवन कराने से २।३ दस्त हो जायँगे और पीछे रोग जल्दी आराम होगा। ये उपाय आज़मूदा है।

इस रोगमें यानी आमातिसार, आमाशय, रक्तातिसार, रक्तामाशय अथवा प्रवाहिका रोग में रेंड़ी के तेल का जुलाब अमृत का काम करता है।

छोटी हरड़ या सोंठ२ तोला लेकर काढ़ा बना लो। काढ़ा होजाने पर, उसमें अरण्डीका तेल दो तोला मिलाकर पिलादो। इस उपाय से बहुधा यह रोग आराम ही हो जाता है, बशर्त्ते कि रोग के शुरूमें ही यह उपाय किया जाय। इसमें मल निकल जाता है, दस्त साफ हो जाता है और ऐंठनी बन्द हो जाती है। अगर एक दिन अरण्डी का तेल देने से मल न निकले, तो एक दिन बीच में देकर फिर अरण्डी का तेल दे सकते हो। पर ध्यान रहे, सोंठके काढ़ेमें रेंडी का साफ तेल देनेसे वायु नाश होकर दस्त साफ होता है।

आमातिसार, रक्तातिसार या प्रवाहिका अथवा पेचिशवाला स्नान न करे, हवा या सरदी में न रहे, खाट पर आराम से पड़ा रहे। इन रोगोंके रोगियोंको दूध चाँवल या दालका पानी देना चाहिये। पुराने रोग में अगर ज्वर आदि न हों, तो भैंस का दही या माठा देना अच्छा है।

आमाशय या आमातिसार में अफीम बड़ी उपकारी चीज़ है। हिंगाष्टक चूर्ण के साथ १ गेहूँ के दाने बराबर अफीम मिला कर रात को खाकर सो जाने से बहुत लाभ होता है। लेकिन अरण्डी के

तेल द्वारा मल निकाल कर, रोगी को अफीम देनी चाहिये । बिना अरण्डी का तेल दिये अफीम देना हानिकारक है; क्योंकि अफीम उल्टी मल को रोकती है ।

ग़रीबी नुसख़े ।

(२४२) बेलगिरी, गुड़, लोध, तेल और कालीमिर्च—इन सबको एकत्र कर के अवलेह बनाओ । इस से प्रवाहिका तत्काल नाश होती है ।

(२४३) धायके फूल, बेरके पत्ते, कैथका रस, शहत और लोध—इन सब को मिला कर दही के साथ सेवन करने से प्रवाहिका नष्ट हो जाती है ।

(२४४) तेल, घी, दही, शहद, मिश्री, सोंठका चूर्ण और राब—इन सब को एकत्र करके पीने से प्रवाहिका आराम हो जाती है ।

(२४५) पीपल या काली मिर्चों का कल्क दूध के साथ पीने से बहुत दिनों की प्रवाहिका ३ दिनों में आराम हो जाती है ।

(२४६) "कुटजावलेह" के सेवन से प्रवाहिका में बड़ा उपकार होता है, इसके बनाने की विधि पहले लिख आये हैं ।

(२४७) सफेद राल और मोचरस प्रत्येक चार चार रत्ती लेकर, एकत्र पीसकर, दूध के साथ, तीन-तीन घण्टे पर, देने से प्रवाहिकामें खूब जल्दी फायदा होता है । परीक्षित है ।

(२४८) कुड़े के जड़ की छाल १ तोला और अनार के फल का छिलका १ तोला—दोनों का काढ़ा बना लो । शीतल हो जाने पर, उस में ६ माशे "शहद" मिला कर सेवन करनेसे आँव-खूनके दस्त या प्रवाहिका सहज में आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(२४९) कच्ची इमली के पेड़ की छाल दो माशे लेकर घोल या माठे के साथ पीस कर, दिन में २।३ बार, सेवन करने से प्रवाहिका नष्ट होती है ।

(२५०) कुरैयाको छाल, इन्द्रजौ, नागरमोथा, सुगन्धवाला, मोचरस, बेलगिरी, अतीस, और अनारका बक्कल—प्रत्येक तीन-तीन माशे लेकर आध सेर जलमें पकाओ। आध पाव पानी रहने पर उतार लो, इस को दिन में ३ बार पीने से ज्वर-सहित या ज्वर-रहित आमरक्त और रक्तातिसार आराम होता है। परीक्षित है।

(२५१) बेल का कच्चा गूदा और मिश्री आम रक्त की उत्तम दवा है। अगर खून ज़ियादा गिरता हो, तो इसमें २ माशे नागकेशर मिला दो। परीक्षित है।

नोट—बेल का गूदा—गुड़ और दहीमें देनेसे आमातिसार निश्चय ही शान्त हो जाता है।

(२५२) मोचरस और नागकेशर प्रत्येक दो-दो माशे लेकर, ६ माशे शहद में मिला कर, देने से आमरक्त या रक्तातिसार में बहुत खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२५२क) गायके दूधमें उतनाही जल मिलाकर औटाओ, जब दूध मात्र रह जाय,मिश्री मिलाकर पीओ। इससे रक्तपित्त और प्रवाहिका रोग नाश हो जाते हैं।

(२५३) सफेद राल का चूर्ण और चीनी समान-समान लेकर मिला लो। इसमें से दो-दो माशे चूर्ण दिन में २।३ बार खाने से बहुत लाभ होता है। आमातिसार या प्रवाहिका पर परीक्षित है।

(२५४) जायफल १ तोला, जावित्री १ तोला, लौंग १ तोला, मोचरस १ तोला, बड़की कोंपल १ तोला, अफीम ६ माशे और शुद्ध सिंगरफ १ तोला—इन सब को पोस्त के छिलकों के काढ़े में घोटकर मटर-समान गोलियाँ बना लो। दिनमें तीन-चार दफे एक-एक गोली मिश्री के शर्बत या मिश्री-मिले चाँवलों के धोवनके साथ सेवन करने से पुराना अतिसार, प्रवाहिका, रक्तातिसार और संग्रहणी प्रभृति आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२५५) बेलगिरी १ तोला, आधपाव बकरी के दूध और पाव भर

जल में पकाओ। जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, उसे कपड़ेमें छान, थोड़ी मिश्री मिलाकर पीजाओ। इस से रक्तातिसार और प्रवाहिका आराम होते हैं। परीक्षित है।

(२५६) एक तोला तुलसी के पत्तों के रस में ज़रासी मिश्री डाल कर सन्ध्या-समय सेवन करने से पुराना आमाशय और रक्तामाशय या प्रवाहिका आदि रोग आराम हो जाते हैं।

(२५७) सेमल के फूल के ऊपर के बक्कल को, रात के समय, जल में भिगोकर, सवेरे उस जलको छान कर, उसमें ज़रा सी मिश्री डाल कर, पीने से रक्तातिसार, प्रवाहिका, मलबद्धता और शूल आदि उपद्रव-युक्त आमाशय आराम होता है।

शोकातिसार और भयातिसार की चिकित्सा।

शोकातिसार और भयातिसार के लक्षण वातातिसार की तरह होते हैं। इन अतिसारोंमें रोगीका शोक दूर करना और उसे तसल्ली देनी चाहिए एवं वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिए।

अत्यन्त शोक होने से शोकातिसार पैदा होता है; उसी तरह अत्यन्त भय लगने से भयातिसार होता है। इन में चिरमिटी की तरह लाल खून-मिला मल निकलता है अथवा केवल खून गिरता है। अगर खून के साथ मल होता है, तो उस में बड़ी बदबू आती है और ख़ाली खून होता है तो उस में गन्ध नहीं आती। अगर रोगी का शोक या भय दूर न किया जाय, तो आराम होना अतीव कठिन है। इस की चिकित्सा वातातिसार के समान की जाती है। फिर भी यहाँ एक नुसख़ा लिखे देते हैं,—

(२५८) पिथवन, बरियारा, बेलगिरी, नीलकमल, सोंठ, धनिया,

वायबिड़ङ्ग, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, अम्बष्ठा और कुरैया की छाल—इन सब को बराबर-बराबर दो-दो या अढ़ाई-अढ़ाई माशे लेकर, एक कोरी हाँडी में, काढ़े की विधि से काढ़ा बना कर छान लो। शेष में कालीमिर्च पीस कर और मिला कर पीजाओ। इस से शोकातिसार नाश होता है।

छर्द्यतिसार की चिकित्सा।

(२५८) आमकी गुठलीकी गरी १ तोला, और वेलगिरी १ तोला-- इन दोनों के काढ़े में शहद और मिश्री मिला कर पीने से भयङ्कर छर्द्यतिसार यानी वमनवाला अतिसार आराम होता है।

नोट—आध सेर जलमें काढ़ा बनाओ। जब डेढ़ छटांक जल रह जाय, उतार कर शीतल करो, और मल-छान कर उसमें ६ माशे शहद और ३ माशे मिश्री मिला पी लो।

(२६०) भुने हुए मूँगोंके काढ़ेमें—खील, शहद और मिश्री मिला कर पीने से वमन, अतिसार, ज्वर, प्यास, दाह और भ्रम ये सब नाश होते हैं।

(२६१) फूलप्रियङ्गु, रसौत, और नागरमोथा,—इनके चूर्ण में शहद मिला कर, चाँवलों के धोवन के साथ सेवन करने से प्यास, अतिसार और वमन—ये सब नाश होते हैं।

(२६२) वेलगिरी और गिलोय प्रत्येक चार-चार माशे लेकर पाव भर जल में पकाओ। जब १ छटाँक जल बाक़ी रहे, उतार कर छान लो। इस काढ़े से वमन और अतिसार नष्ट हो जाते हैं।

विष, कीड़े या बवासीर के अतिसार की चिकित्सा।

कल्याण अवलेह।

(२६३) मिश्री, धायके फूल, लोध, पाढ़, खोनाक, पीपल, मँजीठ, मोचरस और कमल-केशर—इनको बराबर-बराबर लेकर और अवलेह बनाकर सेवन करने से विष, बवासीर और कृमि-दोष से पैदा हुए अतिसार आराम होते हैं। इस का नाम "कल्याण अवलेह" है।

अजीर्णजन्य अतिसार की चिकित्सा।

(२६४) एक तोले जायफल को पीस कर, गुड़में मिलाकर, तीन-तीन माशेकी गोलियाँ बना लो। आध-आध घण्टे में एक-एक गोली खाकर, ऊपर से गरम जल पीने से अजीर्ण या बदहज़मी से हुए दस्त अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—नीबू के रस में जायफल घिसकर चाटने से दस्त साफ हो जाता है।

(२६५) चूने के पानीमें मिश्री मिलाकर पिलाने से बदहज़मी या भारी चीज़ खाने से हुए दस्त आराम हो जाते हैं।

(२६६) कपूर, अजवायनका फूल और पिपर मिण्टका फूल,—इन तीनोंको बराबर-बराबर लेकर एक साफ शीशी में रख दो। बारह घण्टोंमें ये गलकर पानी हो जायेंगे। इसीको "अमृतधारा" या "सुधा-धारा" कहते हैं। इस के ८।१० बूँद चीनी में देने से अजीर्ण के दस्त आराम हो जाते हैं। गृहस्थों के लिये यह अमृत है।

नाभि सरक जाने के कारण से हुए अतिसार की चिकित्सा।

(२६७) नकछिकनी की राख १ तोला, अजवायन १ तोला और सौंठ १ तोला—इन तीनों को पीस कूट और छानकर, इस में ३ तोले पुराना गुड़ मिलाओ और जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो। एक गोली १ माशे "घी" के साथ खानेसे नाभि टलने से हुए दस्त फौरन बन्द हो जाते हैं।

(२६८) फिटकिरी १ तोला और माजूफल १ तोला—दोनों को महीन पीस, सिरके में मिला, नाभि पर लगा, ऊपर से कपड़ेकी पट्टी कस कर बाँध दो, तो नाभि टलने से हुए दस्त आराम हो जायँगे।

जमालगोटा खाने से हुए दस्तोंका इलाज

(२६९) तीन माशे कतीरा पीसकर और दही में मिलाकर खाने से जमालगोटे के दस्त आराम हो जाते हैं।

(२७०) घिसी हुई सुपारी ३ माशे, दहीमें मिलाकर, खानेसे जमालगोटे के दस्त मिट जाते हैं।

शोथातिसार की चिकित्सा

(२७१) पुनर्नवा, इन्द्रजौ, पाढ़, बेलगिरी, अतीस, नागरमोथा, और कालीमिर्च—इन का काढ़ा पीने से शोथातिसार नाश होता है। यानी सूजन-सहित दस्तों का रोग आराम हो जाता है।

उत्पलष्टक क्वाथ।

(२७२) पृश्निपर्णी, खिरेंटी, बेलगिरी, धनिया, सोंठ और कमल—इनका काढ़ा बनाकर और खट्टा करके पीने से ज्वर और अतिसार नष्ट होते हैं। इसे "उत्पलष्टक क्वाथ" कहते हैं।

कणादि क्वाथ

(२७३) पीपल गज-पीपल, और खीलों का काढ़ा बनाकर, शहद और मिश्री डाल कर पीने से ज्वर, अतिसार और प्यास,—ये सब आराम होते हैं। इसे "कणादि क्वाथ" कहते हैं।

नागरादि क्वाथ

(२७४) सोंठ, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, चिरायता और इन्द्रजौ—इन का काढ़ा सब तरह के ज्वरों और भयानक अतिसार को नाश करता है। इसे "नागरादि क्वाथ" कहते हैं।

गुडूच्यादि क्वाथ।

(२७५) गिलोय, अतीस, धनिया, सोंठ, बेलगिरी, नागरमोथा, सुगन्धवाला, पाढ़, चिरायता, इन्द्रजौ, लाल चन्दन, खस और पित्त-पापड़ा—इन के काढ़े में, शीतल होने पर, "शहद" डाल कर पीने से ज्वर सहित अतिसार, ओकारी, प्यास, दाह, अरुचि और वमन ये सब नाश होते हैं।

व्योषाद्य चूर्ण।

(२७६) त्रिकुटा, इन्द्रजौ, नीम की छाल, चिरायता, भाँगरा, चीता, कुटकी, पाढ़, दरुहल्दी, अतीस और बच,—इनको बराबर-

बराबर एक-एक तोला लेकर, सबकी बराबर ११ तोला कुड़ेकी छाल लो। सबको पीस कूटकर चूर्ण कर लो। इसका नाम "व्योषाद्य चूर्ण" है। इसको चाँवलोंके पानी या शहद के साथ सेवन करने से ज्वरातिसार, कामला, संग्रहणी, गुल्म, प्लीहा, प्रमेह, पीलिया और सूजन ये सब आराम होते हैं। यह पाचन, मल रोकनेवाला, अग्नि-दीपन करने वाला, प्यास और अरुचिको नष्ट करनेवाला है।

कर्पूर रस।

(२७७) कपूर, शुद्ध सिंगरफ, नागरमोथा, इन्द्रजौ और जायफल—इन सबको बराबर २ लेकर, अदरखके रसमें घोटकर, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके जलके साथ सेवन करने से ज्वरातिसार, संग्रहणी, अतिसार, रक्तातिसार—आराम होते हैं। परीक्षित है।

कर्पूरादि वटिका

(२७८) उधर पक्वातिसार में लिखी हुई "कर्पूरादि वटिकाओं" के सेवन करने से ज्वरातिसार, केवल अतिसार, रक्तातिसार और छहों तरह की संग्रहणी आराम हो जाती हैं। देखो पृष्ठ ४५ परीक्षित है।

ग़रीबी नुसख़े।

(२७८) कमल, अनार की छाल और कमल की केसर—इन का चूर्ण बना कर, चाँवलों के जल के साथ पीने से ज्वरातिसार नाश होता है।

(२८०) बेलगिरी, सुगन्धवाला, चिरायता, गिलोय, नागरमोथा और इन्द्रजौ—इन का काढ़ा पाचन है। इस से सूजन-सहित ज्वरातिसार नाश होता है।

(२८१) सोंठ, अतीस, बेलगिरी, गिलोय, नागरमोथा और इन्द्र-

जौ—इनका काढ़ा पाचन है। इस काढ़े से सूजन-सहित ज्वरातिसार नाश होता है।

(२८२) दशमूल के काढ़े में एक तोले भर "सोंठ का चूर्ण" डाल कर पीने से ज्वर, अतिसार और सूजनयुक्त संग्रहणी—ये सब आराम होते हैं।

(२८३) इन्द्रजौ, देवदारु, कुटकी और गज-पीपल—इन के काढ़े से ज्वरातिसार नाश होता है। विशेषकर दाह नाश होता है।

(२८४) गोखरू, पीपल, धनिया, बेलगिरी, पाढ़ और अजवायन —इन के काढ़े से ज्वरातिसार और दाह नाश होता है।

(२८५) लजवन्ती, धाय के फूल, नागकेशर और नीले कमल—इन को एकत्र पीस कर, चाँवलों के जल के साथ, सेवन करने से ज्वरातिसार शान्त होता है।

नोट—ज्वरातिसार नाशक नुसखे एवं ज्वरातिसार की चिकित्सा-सम्बन्धी नियम "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ ५२५—५२६ में लिखे हैं।

गुदामें जलन होने, उसके पकने और काँच निकलने की चिकित्सा।

नोट—अगर बहुत दस्त होनेके कारण, पित्त से, गुदामें दाह या जलनहो अथवा गुदा पक जाय, तो गुदा को दवाओं के काढ़े से धोना अथवा उस पर दवा के काढ़े को सींचना अथवा कोई लेप करना चाहिये।

(२८६) पटोल-पत्र और मुलेठी का काढ़ा बना कर और शीतल करके, उस जल से गुदा को धोना और उसी को गुदा पर सींचना चाहिये।

(२८७) गुदा में दाह हो और वह पक गई हो; तो बकरी के दूध में मिश्री और शहद मिला कर पीना चाहिये और उसी से गुदाको सींचना चाहिये।

(२८८) चूहे का मांस पका कर, उसका बफारा गुदा को देना चाहिये। इस बफारे से बहुत दस्तों के कारण हुआ गुदा का दर्द आराम हो जाता है।

(२८९) गेहूँ के आटे में पानी मिला कर उसे पकाना चाहिये और घी मिलाकर उसका गोला सा बनाकर, उससे गुदा पर सुहाता-सुहाता सेक करना चाहिये। इससे भी गुदा का दर्द मिट जाता है।

(२९०) अगर दस्तोंके कारण काँच बाहर निकल आवे, तो उस पर घी या तेल प्रभृति लगाकर, उसे भीतर घुसा देना चाहिये। इसके बाद चूहे के मांस को काँजीमें पका कर, उसे अरण्ड के पत्ते पर रख कर, उसीसे धीरे-धीरे गुदा को सेकना चाहिये।

(२९१) घोंघे का मांस पका कर, उस में तेल और नमक डाल कर, उस से गुदा को बफारा देना चाहिये; मगर बफारा देने से पहले गुदा पर "घी" मल देना चाहिये। इस उपाय से काँच निकलना फ़ौरन बन्द हो जाता है।

(२९२) चूहेकी चरबीका गुदा पर अच्छी तरह लेप करनेसे काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(२९३) गुदभ्रंश या काँच निकलनेके रोगमें "चांगेरी घृत" सर्वोत्तम है। इस घीके पीने से काँच निकलने का रोग निश्चय ही आराम हो जाता है।*

* बनाने की तरकीब—चौपतिया खट्टी लूनिया (चांगेरी) ला कर उस को पीस कर, कपड़े में छान कर १ सेर रस निकाल लो। चांगेरी का रस निकालते समय जल न मिलाओ। बेर वृक्षकी जड़ का काढ़ा १ सेर तैयार कर लो। खट्टा दही १ सेर लाकर रख लो। सोंठ अढ़ाई तोले और जवाखार अढ़ाई तोले,—दोनों को पीसकर लुगदी बना लो। पीछे १ पाव घी और ऊपरकी सब चीजें कड़ाहीमें डालकर मन्दाग्निसे पकाओ; जब पकते-पकते घी मात्र रह जाय, उतार लो। यही "चांगेरी घृत" है। मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है।

नोट—घी या तेल तैयार करने में किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए, उन सबको आगे के पृष्ठ—१२५ के फुट नोट में देख लीजिये।

(२८४) कमलिनी की कोंपलें लाकर सुखा लो। सूखने पर पीस-कूट कर महीन कर लो। इस चूर्ण में मिश्री मिलाकर खाने से, कुछ दिनोंमें, काँच निकलना अवश्य ही बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कमल और कमलिनी के पत्तों का चूर्ण मिश्री मिलाकर खाने और चूहे की चरबी का गुदा पर लेप करने या चूहे का मांस पका कर उससे गुदा को सेकने से अवश्य ही गुदा की सब शिकायतें मिट जाती हैं। अनेक बार परीक्षा करके देखा है।

(२८५) चूहा और दशमूल—इन को बराबर-बराबर ले कर काढ़ा बना लो और इन्हीं को बराबर-बराबर लेकर पीस कर लुगदी भी बना लो। पीछे कड़ाही में लुगदी रख कर, काले तिलोंका तेल और काढ़ा भर दो। पीछे चूल्हे पर रख कर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। तेल मात्र रह जाने पर उतार लो और शीतल होने पर छान कर बोतलमें भर लो। इस तेलके लगानेसे गुदभ्रंश—काँच निकलना और भगन्दर दोनों आराम हो जाते हैं।

(२८६) अगर किसी स्त्रीकी काँच निकल आवे; तो वह "हुरहुज" के फूल लाकर रस निकाल ले। पीछे उसे हाथों में मल कर, गुदा के मुख पर वही हाथ रखे। ३।४ दिन ऐसा करने से अवश्य लाभ होता है—यानी गुदभ्रंश या काँच निकलना आराम हो जाता है।

नोट—हुरहुज को सूरजमुखी का फूल भी कहते हैं। यह सदा सूरजके सामने रहता है।

(२८७) पुरानी चलनी का चमड़ा जला कर, उस की राख गुदा पर बुरकने से काँच निकलना बन्द हो जाता है। अथवा लिहसोड़े को जला कर, उसकी राख गुदा पर बुरकने से भी लाभ होता है; पर दवा छिड़कनेसे पहले गुदा पर तेल लगा देना ज़रूरी है।

(२८८) अपना पेशाब एक बर्त्तन में रख ले। पीछे पाखाने से निपट कर, उसी पेशाब से गुदाको धोवे और उसके बाद पानी से धोवे। इस तरह ३।४ दिन करने से काँच निकलने का रोग, विशेष कर बालकों की काँच निकलना आराम हो जाता है।

नोट—अतिसार रोग में भी बहुत दस्त आने से,कांच निकलने का रोग हो जाता है। पर दोनों हालतों में इलाज एकसा ही किया जाता है। देखने में आया है, बालकों को अतिसार होने के बाद, ये रोग अक्सर हो जाता है। रूखे और कमजोर को ये रोग जियादा होता है।

(२९९) बबूल की फली और पत्ते तथा धाय के फूल—इन को औटाकर काढ़ा बना लो। इसी काढ़े से आबदस्त लेने और इसी काढ़े में, रोज़, कुछ देर बैठने से काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(३००) आम के पत्ते, जामुन के पत्ते और छाल—इन को जौ-कुट कर काढ़ा बनाओ और उस काढ़े से गुदा को धोओ। इस तरह करने से भी काँच निकलना बन्द हो जाता है।

(३०१) अगर गुदा सूज गई हो, सूजन के कारण भीतर न जाती हो; तो गुदा पर "गुलरोग़न" मलो और रोगीको सुहाते-सुहाते गरम जल में बैठाओ। गुल रोग़न अत्तारों के यहाँ मिलता है।

(३०२) बकरीके सुमकी राख, माजू, अनार के फूल, अनारकी छाल और भुनी हुई फिटकरी—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, कूट पीस और छान कर, गुदा पर बुरको। इस से काँच निकालना बन्द हो जाता है।

(३०३) अण्डे की सफेदी गुदा पर, भीतर और बाहर, लगाने से गुदा की सूजन और पीड़ा शान्त होती है।

(३०४) जौ का आटा, मसूर का आटा और अण्डे की सफेदी—इनको "रोग़नगुलमें" मिलाकर लेप करनेसे गुदाकी सूजन और पीड़ा वगैर: में निश्चयही फायदा होता है।

(३०५) अगर दस्तवाले रोगीकी गुदामें जलन हो, काँच निकलती हो, प्यासका ज़ोर हो, पैरोंमें आग सी लगती हों; तो चनों के छिलके २ तोले, धनिया ३ माशे, सौंफ की जड़ ६ माशे और कासनीकी जड़ ६ माशे,—इन सबको एक बड़ी कोरी हाँडीमें भरकर ऊपर से ताज़ा पानी भर दो। इस ठिलिया में पहले एक छेद उसी तरह कर लेना, जिस तरह कि, शिवजीके ऊपर रक्खे जानेवाले घड़े में

बारते हैं। फिर उस छेद में एक कपड़ेका टुकड़ा इस तरह लगा देना कि, उसमें से बूँद-बूँद पानी गिरता रहे। इस घड़िया के नीचे दूसरी हाँडी रख देना। नीचे की हाँडी में पानी बूँद-बूँद गिरेगा। उसमें से ही रोगीको, जब-जब प्यास लगे, पानी पिलाना। इस जलसे पतले दस्त लगना, प्यास और जलन प्रभृतिमें बड़ा लाभ होता है। परीक्षित है।

परमावश्यक पश्नोत्तर।

प्र०—(१) अतिसार आराम हो जाने के क्या लक्षण हैं?

उ०— विनोत्सर्गम्भवेन्मूत्रं तथावायुः प्रवर्त्तते।
कोष्ठे लघुत्वं दीप्तोऽग्निर्गतस्तस्योदरामयः॥

अगर पेशाब करते समय पाखाना न होता हो, अधो वायु—गुदाकी हवा—खुलती हो, कोठा हलका हो और अग्नि दीप्त हो, तो समझो कि अतिसार चला गया। वृन्द महोदयने भी कहा है :—

दीप्ताग्नेर्लघुकोष्ठस्य स्थितस्तस्योदरामयः।
ज्ञेयः काय्यों विरक्तः स तत्तद्दोपकरैः पदैः॥

अगर अतिसार-रोगी की अग्नि प्रबल हो जाय और कोठा हलका हो जाय; तो समझो कि, उदरविकार शान्त हो गया। लेकिन, फिर भी कुछ दिनों तक, अतिसार पैदा करने वाले और वातादि दोषोंको बढ़ाने वाले पदार्थोंसे रोगी को अलग रखो।

प्र०—(२) आमातिसार और प्रवाहिका में क्या भेद है?

उ०—स्थूल दृष्टि से देखने पर, इन दोनों में बाहर से समानता मालूम होती है; पर बारीक नज़र से देखने पर, विशेष अन्तर जान पड़ता है। आमातिसार छोटी आँत में होता है; किन्तु प्रवाहिका स्थूल आँत में, कफ के सञ्चित होने से, होती है। आमातिसार में अनेक प्रकार के द्रवरूप पदार्थ अपक्व व कच्चे, मल के साथ, निकलते हैं; किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या खून-मिला कफ निकलता है जब वायु कुपित होकर स्थूल आँत की श्लेष्म कला में सञ्चित हुए कफ को बलपूर्वक खींच कर, मल के साथ, मल-मार्ग से, निकलता है; तब कहते हैं "प्रवाहिका" रोग है। प्रवाहिका को अँगरेजी में डिसेण्ट्री कहते हैं।

प्र०—(३) रक्तातिसार और रक्तार्श में क्या भेद है; खासकर दस्तों में?

उ०—रक्तातिसार क्षुद्र अन्त्र (आँत) में उत्पन्न होता है; किन्तु रक्तार्श गुदा की बलि या आँट में। रक्तातिसार में प्रायः मल के साथ खून गिरता है; किन्तु रक्तार्श में मलके साथ मिल कर बहुत कम गिरता है। रक्तार्श या खूनी बवासीर में मल के पहले या पीछे ही खून गिरा करता है। दोनों रोगोंके खूनमें अधिक अन्तर नहीं पाया जाता; पर रक्तार्श में खून कुछ अधिक लाल और चमकदार होता है।

संग्रहणी-वर्णन।

ग्रहणी की सम्प्राप्ति।

अतिसारे निवृत्तेऽपि मन्दाग्नेरहिताशनः।
भूयः सन्दूषितो वह्निर्ग्रहणीमभिदूषयेत॥

अतिसार* के आराम हो जाने पर भी,† मन्दाग्नि वाले के अपथ्य सेवन करने से, जठराग्नि दूषित होकर, ग्रहणी* को दूषित करती है।

खुलासा यह है, कि अतिसार रोग के आराम हो जाने पर भी, अगर सन्दाग्नि वाला मनुष्य कुपथ्य सेवन करता है, बदपरहेज़ी करता है, तो जठराग्नि ख़राब हो जाती है। वही बिगड़ी हुई जठ-

* अतिसार और संग्रहणी में यही भेद है कि, अतिसार में पतली धातुएँ निकलती हैं और संग्रहणी में बँधा हुआ मल निकलता है। यह भी याद रखना चाहिये कि, संग्रहणी, अतिसार और बवासीर—इन तीनों रोगों के हेतु—कारण समान हैं।

† बिना अतिसार हुए भी संग्रहणी रोग हो जाता है। कोई-कोई आचार्य्य ऐसा भी कहते हैं कि, अतिसार रोग आराम नहीं होता कि, बीच में ही संग्रहणी रोग हो जाता है।

* अन्नको ग्रहण करनेके कारणसे ग्रहणी कहते हैं। ग्रहणी एक आँत है। ग्रहणी के खराब हो जानेसे अन्न अच्छी तरह नहीं पचता—बारम्बार आम मिला हुआ मल गुदासे निकलता है।

राग्नि, आमाशय और पक्काशयके बीचमें रहने वाली, पित्तधरा नामक छठी कला—ग्रहणी—को बिगाड़ कर "संग्रहणी" रोग पैदा करती है।* किन्तु जो मनुष्य अतिसार के आराम हो जाने पर भी, दोष और आत्माके प्रकृतिस्थ होने तक, विरेचन—जुल्लाबके समान परहेज़ करता है, बदपरहेज़ी नहीं करता, उसे संग्रहणी रोग नहीं होता।

अन्नका अधिष्ठान "अग्नि" है। अग्नि अन्नको ग्रहण करती है, इसी से उसे "ग्रहणी" कहते हैं। यह अग्नि नाभिके ऊपर रहती और कच्चे यानी बिना पके हुए अन्नको धारण करती एवं पके हुए को नीचे गिरा देती है। ग्रहणीका बल अग्नि ही है और वह अग्नि के ही आश्रय से रहती है, इसलिये अग्निके ख़राब होनेसे ग्रहणी भी ख़राब हो जाती है।

नोट—ग्रहणी एक आँत का नाम है। इस का काम है, कच्चे अन्न को ग्रहण करना और पके हुए को गुदा की राह से बाहर निकाल देना। उसी ग्रहणी नामक आँत में जब कुछ दोष हो जाता है, तब वह ग्रहणी-आँत कच्चे अन्न को ग्रहण करती और बिना पकाये कच्चे को ही गुदा के बाहर निकाल देती है; यानी कच्चे दस्त होने लगते हैं।

ग्रहणी रोग के सामान्य लक्षण।

जब वात, पित्त और कफ—ये तीनों दोष अलग-अलग या मिल

---

* एक विद्वान ने संक्षेप में इस तरह लिखा है :—

षष्ठी कला पित्तधरा मताऽथा पक्वाशयामाशय मध्यगा ताम्।
वदन्ति वैद्य ग्रहणीं प्रदुष्टां मुञ्चेदपक्वं बहुशो हि भुक्तम्॥

आमाशय और पक्वाशय के बीच में छठी पित्तधरा कला है। उसे ही वैद्य ग्रहणी कहते हैं। वह कुपित होकर खाये हुए अन्नादि पदार्थों को प्रायः कच्चा ही निकाल देती है।

"चरक" में लिखा है, कि कोठेमें अग्नि के रहने का स्थान है, वह अन्न को ग्रहण करता है, इसलिये उस स्थान को ग्रहणी कहते हैं। यह ग्रहणी बिना पके हुए अन्नको ग्रहण करती और पके हुए को नीचे गिरा देती है। इस ग्रहणी में जो अग्नि रहती है, वह भी ग्रहणी कहलाती है। अग्नि दूषित होनेसे मन्दी हो जाती है; इस से उसका स्थान ग्रहणी भी दूषित हो जाता है।

कर दूषित हो जाते हैं, तब वही ग्रहणी को दूषित कर देते हैं। दूषित ग्रहणी कच्चे और पके मल को, गुदा की राह से, नीचे गिरा देती है। उस समय पीड़ा होने लगती है, मल कभी पतला आता है और कभी गाढ़ा आता है और उसमें बदबू आया करती है। जब ऐसे लक्षणों वाला रोग होता है, तब वैद्य उसे "ग्रहणी"* कहते हैं।

संग्रहणी की परीक्षा के लिये जानने योग्य लक्षण।

ग्रहणी कच्चे अन्न को ग्रहण करती है, इससे पीछे पेट फूल कर कच्चे दस्त होते हैं। दस्त होते ही रहें, यह नियम नहीं। कभी कुछ दिनों तक दस्त बन्द रहते हैं और फिर होने लगते हैं। कभी एक दो दस्त होते हैं और कभी बहुतसे होते हैं। खाया हुआ अन्न पच गया हो या पच रहा हो,तब पेट फूलता है; फिर भोजन करनेसे शान्ति होती है। ऐसी शंका होती है, मानो तिल्ली बढ़ गई हो, वायुगोला हो या छाती में कोई रोग हो। अनेक बार बारम्बार पतला या सूखा और कच्चा दस्त आवाज़ के साथ होता है। शरीर गलने और खून उड़ने लगता है। अन्त में; शरीर में शोथ या सूजन होकर प्राणी बातें करता-करता मर जाता है। अनेक बार संग्रहणी के दस्तों में राध लोहू वगैरः भी गिरते हैं। मरोड़ी के दस्तों कीसी, पर उससे कुछ कम, ऐंठनी होती है; पेट कटता है एवं बारम्बार दस्त होते और बन्द होते हैं।
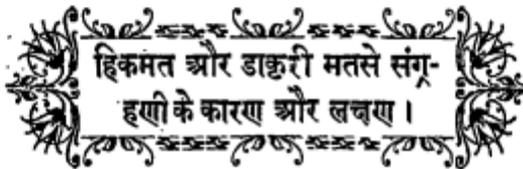
हिकमत और डाक्टरी मतसे संग्रहणी के कारण और लक्षण।

हिकमत वाले संग्रहणी को ज़रब कहते हैं। यह रोग पाचन-शक्ति

* आमवायु का संग्रह होने से संग्रहणी कहते हैं। संग्रहणी ग्रहणी की अपेक्षा अधिक भयङ्कर रोग है।

के नाश होने से होता है। इस रोग में रोगी को बारम्बार दस्त आते हैं। जब यह रोग बढ़ जाता है, तब जो कुछ खाया जाता है, वह कच्चा ही, गुदा-द्वारा, निकल जाता है।

डाक्टरी पुस्तकोंमें लिखा है,—संग्रहणी रोग, जिसे डाक्टर क्रॉनिक डिसेण्ट्री या क्रॉनिक डायरिया कहते हैं, अजीर्ण और अतिसार से पैदा होता है। विशेष कर, अतिसार का अच्छा इलाज न होने से यह रोग पैदा होता है। इस रोग में, कभी-कभी १०।५ दिन के लिये दस्त बन्द हो जाते और फिर होने लगते हैं। जब यह रोग कुछ दिनों का हो जाता है, तब इसमें बुख़ार भी बराबर बना रहता है। इस रोग में आम-मिला हुआ मल उतरता है और दस्त होते समय आवाज़ होती है।

नोट—कितने ही डाक्टर लिखते हैं, भारी चीजें खाने और शरीर के दुर्बल होने से भी संग्रहणी रोग होता है।

होमियोपैथी वाले कहते हैं,—इस रोग के शुरू में जो लक्षण नज़र आते हैं, पुराना होने पर वे बदल जाते हैं। स्थान बदलने अथवा जलवायु के परिवर्तन से अक्सर यह रोग चला जाता है। इस रोग के बढ़ने से, इसके साथ, औरभी बहुत से रोग पैदा हो जाते हैं और रोगीके मरनेकी नौबत आ जाती है। होमियोपैथी वाले इस रोगमें कुछ दिनों तक फास्फोरस सेवन कराना अथवा रसटक्स या पलसेटिला देना हितकर समझते हैं।

नोट—वैद्यक-शास्त्रमें जिसे आमातिसार कहते हैं, साधारण लोग उसे ही मरोड़ी के दस्त कहते हैं। आमातिसार और अतिसार जब पुराने हो जाते हैं, तब उन्हींको संग्रहणी कहते हैं। असल में, ये एक ही रोग हैं, पर अवस्था-भेद से इनके अलग-अलग नाम हैं। मतलब यह, पुराने आमातिसार या मरोड़ी के दस्तों को संग्रहणी कहते हैं। जिन कारणों से तेज़ मरोड़ी के दस्त होते हैं, उन्हीं कारणों से संग्रहणी होती है; अथवा तीक्ष्ण मरोड़ीके दस्त मिटने पर, मन्दाग्निवाला अगर अपथ्य पदार्थ या मिथ्या आहार विहार सेवन करता है, तो उसे दस्तों का रोग फिर हो जाता है। इसी फिर हो जाने वाले दस्तों के रोग को पुरानी मरोड़ी या संग्रहणी कहते हैं।

ग्रहणी रोग के पूर्वरूप ।

जब ग्रहणी रोग होने वाला होता है, तब ये लक्षण नज़र आते हैं:—प्यास, आलस्य, ताक़त का कम होना, अन्न पचते समय आग सी जलना और अन्न का देर में पचना तथा शरीर का भारी होना।

ग्रहणी रोग की क़िस्में ।

(१) वातज ग्रहणी (२) पित्तज ग्रहणी (३) कफज ग्रहणी (४) सन्निपातज ग्रहणी।

और भी भेद ।

ग्रहणी के दो भेद औरभी हैं :—

(१) संग्रहणी। (२) घटीयंत्र।

नोट—वैद्यक-शास्त्र में ग्रहणी और संग्रहणी में बहुत थोड़ा भेद बतलाया गया है। ग्रहणी जब 'आमवायु'का संग्रह करती है, तब उसे "संग्रहणी" या संग्रह ग्रहणी कहते हैं। ग्रहणी से संग्रहणी बहुत भयङ्कर है।

वातज ग्रहणी होने के कारण ।

कड़वे, चरपरे, कसैले, बहुत रूखे और शीतल पदार्थ खाने; संयोग-विरुद्ध भोजन* करने, भोजन पर भोजन करने, बहुत खाने, एक भोजन के पचे बिना दूसरा भोजन करने, उपवास करने, थोड़ा खाना खाने, बहुत रास्ता चलने, मलमूत्र आदि वेगों के रोकने† और अत्यन्त मैथुन करने से वात कुपित होकर, अग्निको दूषित करके, वातज ग्रहणी रोग पैदा करता है।

* देखो पहला भाग पृष्ठ २८५-२८८

† देखो पहला भाग पृष्ठ ३४४-३४१

वातज ग्रहणी के लक्षण।

बादी की ग्रहणी वाले को अन्न बड़े कष्ट से पचता है और उसका पाक खट्टा होता है; शरीर खरदरा या कड़ा सा हो जाता है; कंठ और मुख सूखते हैं; भूख और प्यास लगती है; आँखों के सामने अँधेरा आता है; कानों में आवाज़ होती है; पसवाड़े, जाँघ, पेड़ू और कन्धों में दर्द होता है; हैज़ा हो जाता है; यानी गुदा और मुँह दोनों राहों से कच्चा अन्न निकलता है; हृदय में वेदना होती है; शरीर दुबला हो जाता है; जीभ का स्वाद जाता रहता है; गुदा में कतरनी की सी पीड़ा होती है; मीठा प्रभृति सब रसों के खाने की इच्छा होती है; मन में ग्लानि होती है; अन्न पचने के बाद पेट फूल जाता है; भोजन करने से सुख मालूम होता है; पेट में वायु-गोला, हृदयरोग और तिल्ली की आशंका होती है; वात के योग से खाँसी और श्वासकी पीड़ा होती है; बहुत देरमें, बड़े कष्ट से, पतला—सूखा—थोड़ा—कच्चा, आवाज़ के साथ, झागोंदार मल उतरता है।

पित्तज ग्रहणी होने के कारण।

चरपरे, कड़वे, दाहकारक, खट्टे और क्षारादि पदार्थों के सेवन करने से बढ़ा हुआ पित्त, जठराग्नि को उसी तरह नष्ट कर देता है, जिस तरह गरम पानी आग को नष्ट कर देता है।

नोट—अगर कोई यह शङ्का करे कि, पित्त तो स्वयं अग्नि के गुणों वाला है, वह अग्नि को कैसे नष्ट कर सकता है? उसे यह जवाब देना चाहिये कि, जिस तरह गरम जल, अग्नि के गुणों वाला होने पर भी, अग्नि को भिगो कर नष्ट कर देता है; उसी तरह पित्त भी, अग्नि के गुणों वाला होने पर भी, जठराग्नि को नष्ट कर देता है।

पित्तज ग्रहणी के लक्षण।

जठराग्नि के नष्ट होने से मनुष्य पीला पड़ जाता है। उसके अजीर्ण से नीला, पीला और पतला मल उतरता है; अत्यन्त खट्टी-खट्टी डकारें आती हैं, छाती और गले में जलन होती है, अन्न पर अरुचि रहती और प्यास का ज़ोर होता है।

कफज ग्रहणी होने के कारण।

भारी, अत्यन्त चिकने और शीतल आदि पदार्थ खाने; अत्यन्त मैथुन करने; भोजन पर भोजन करने और खाना खाते ही तत्काल सो रहने से कफ कुपित होकर जठराग्नि को नष्ट कर देता है। उस समय कफज ग्रहणी पैदा हो जाती है।

कफज ग्रहणी के लक्षण।
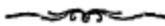
कफ से जठराग्नि के नष्ट होने पर, खाया हुआ अन्न कष्ट से पचता है, हृदय में पीड़ा होती है, उबकाइयाँ आती हैं, वमन और अरुचि होती है, मुख कफ से लिहसा रहता है, मुख का स्वाद मीठा रहता है, खाँसी आती है, बारम्बार थूक निकलता है, ज़ुकाम रहता है, छाती जकड़ी रहती है, पेट भारी और पत्थर सा रहता है; डकारें दूषित और मीठी-मीठी आती हैं, ग्लानि होती है, स्त्री-प्रसंग की इच्छा नहीं होती; विष्ठा पतली, कच्ची, कफ मिली हुई और भारी निकलती है; ताक़त नहीं रहती, पर शरीर पुष्ट दीखता और आलस्य बना रहता है।

त्रिदोषज गृहणी के निदान और लक्षण

वातकी, पित्त की और कफ की ग्रहणी के जो निदान—कारण

और लक्षण लिख आये हैं, वे सब निदान और लक्षण मिलें, तो उसे त्रिदोषज ग्रहणी समझना चाहिये ।

ग्रहणी के भेद

ग्रहणी के दो भेद होते हैं:—(१) संग्रहणी, (२) घटीयन्त्र ।

संग्रहणी

अगर पन्द्रह दिन में, ३० दिन में, दस दिन में या रोज़ ही पतला गाढ़ा, थोड़ा, चिकना, कमर की पीड़ा समेत, कच्चा, बहुत लिब-लिबा, आवाज़ करके और थोड़ी वेदना के साथ मल उतरे; आँतें गूँजें, आलस्य हो, कमज़ोरी हो और ग्लानि हो; तो "संग्रहणी" समझनी चाहिये। यह रोग दिन में कुपित होता और रात में शान्त रहता है। संग्रहणी आम-वात के संग्रह से होती है, बहुत मुश्किल से जानी जाती है, बड़ी कठिनता से आराम होती है और बहुत समय तक रहती है।

नोट—(१) यह दिनमें कोप करती और रातको शान्त रहती है। यह इस व्याधि का प्रभाव है।

नोट—(२)ग्रहणी और संग्रहणी में यही भेद है, कि जब ग्रहणी "आम वायु"का संग्रह करती है,तब उसे संग्रहणी कहते हैं। ग्रहणी की अपेक्षा संग्रहणी भयङ्कर है।

घटीयन्त्र ।

इस रोग में नींद बहुत आती है, पसलियों में दर्द होता है, जिस तरह रहँट के घड़े से पानी निकलते समय आवाज़ होती है; उसी तरह इस में मल निकलते समय "घगघग" आवाज़ होती है। इसे "घटीयंत्र" कहते हैं। यह असाध्य ग्रहणी रोग है। इसके होने पर मरण होता है।

संग्रहणी रोग में पथ्यापथ्य।

अपथ्य।

फसद वगैरः से खून निकलवाना, रात में जागना, बहुत सा पानी पीना, स्नान करना, स्त्री-प्रसंग करना, मलमूत्रादि वेगों को रोकना, नस्य सूँघना, अञ्जन लगाना, पसीना निकालना, बफारा लेना, धूम्रपान करना, मिहनत करना, विरुद्ध भोजन करना, धूप या आग सेवन करना; गेहूँ, लोबिया, उड़द, जौ, पोई, वथुआ, मकोय, मटर, तूम्बी, सहँजना, कन्द, पान, ईख, बेर, कच्चे-पक्के आम, ककड़ी, खीरा, सुपारी, लहसन, धानकी काँजी, दूध, गुड़, दही का पानी, नारियल, कटेरीका फल, पत्तों के साग, गोमूत्र, कस्तूरी, दाख, खटाई, नमकीन रस, भारी अन्नजल, पूआ, पूरी, और मङ्गौड़ी—ये सब संग्रहणी वाले को त्याग देने चाहियें।

पथ्य।

सोना, वमन करना, लंघन करना, पुराने साँठी चाँवल, खीलों का मांड़, मसूर, अरहर और मूँग का यूष; गाय का मक्खन-निकाला-हुआ दही; बकरी का दही; दूध से निकाला मक्खन; बकरी का दूध, दही और घी; तिल का तेल, मदिरा, शहद, कमल का कन्द, मौलसरी, दोनों तरह के अनार, नये फल, केले के फूल, फल; नयी बेलगिरी, सिंघाड़े, चूके का साग, भाँग, कैथा, कुड़ेकी छाल, जीरा, कसेरू, छाछ—माठा, चौपतिया, जायफल, जामुन, धनियाँ, कुचला, बकायन, मँजीठ, अफीम, हिरन या तीतर का मांसरस, सब तरह की छोटी मछली, सब तरह के कषैले पदार्थों का रस; नाभि से दो अँगुल नीचे हटकर तथा रीढ़ की जड़ में, अर्द्ध चन्द्रमा के

सट्टा, गरम लोह से दागना ; आब-हवा बदलना, समुद्रकी सैर करना और माठा पीना,—ये सब संग्रहणी रोग में पथ्य हैं।

संग्रहणी रोग में पंचकोल (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, और सोंठ) आदि से संयुक्त हलका अन्न और पेया आदि अग्नि को दीपन करने वाले पदार्थ तथा माठा—ये सब हितकारी हैं।

कैथ, बेलगिरी, चाँगेरी (नोनिया या चूका) माठा और अनार के द्वारा सिद्ध की हुई यवागू आम को पचाती और मल को बाँधती है।

नोट—ज्वर और अतिसारमें "यवागू" परम पथ्य है। देखिये, दूसरे भागके पृष्ठ ७६—८०।

मूँग का यूष, हल्का और दस्त रोकने वाला मांस का रस, धनियाँ, ज़ीरा और सेंधानोन,—इन से मिले हुए तक्र—माठे को "षड्यूषण" कहते हैं। यह "षड्यूषण" ग्रहणी रोग में हितकारी है।

ढाकके बीज, चीता, चव्य, बिजौरेकी केशर, हरड़, पीपल, पीपलामूल, पाढ़, धनिया और सोंठ—इन सबको एक-एक तोले लेकर, एक सेर जलमें पकाओ; जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे, इस काढ़े के द्वारा यवागू पकाकर रोगी को दो। यह "यवागू" कफज संग्रहणी-रोगी को अत्यन्त हितकारी है।

नोट—यूष, मांसरस या अन्य पथ्य पदार्थ बनानेकी विधि के लिए "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग का ७७—८६ पृष्ठ देखिये।

माठा संग्रहणी में अत्यन्त हितकारी है, इसलिये नीचे हम माठे के भेद और गुण प्रभृति लिखते हैं:—

सुश्रुत आदि मुनियों ने माठे या तक्र के चार भेद कहे हैं:—
(१) तक्र, (२) घोल, (३) मथित, (४) उदश्वित।

जो मलाई-युक्त दही बिना जलके मथा जाता है, उसे "घोल" कहते हैं। जो मलाई निकाल कर, बिना जल के, मथा जाता है, उसे "मथित" कहते हैं। जो दही चौथा भाग जल डाल कर मथा

जाता है, उसे "तक्र या माठा" कहते हैं। जो दही आधा जल डाल कर मथा जाता है, उसे "उदश्वित" कहते हैं।

घोल—वातपित्त नाशक है। मथित—कफपित्त नाशक है। उदश्वित—कफकारक, बलदायक, श्रमविनाशक और परम हित-कारक है।

तक्र या माठे के गुण।

तक्र—मलरोधक, कषैला, खट्टा, मधुर, अग्नि दीपन करनेवाला, हल्का, उष्णवीर्य्य, बलकारक, वृष्य, तृप्तिकारक और वातनाशक होता है। आठ प्रकार के दहियों के अनुसार ही उनके तक्रों में गुण होते हैं।

तक्र—ग्रहणी आदि रोगों में पथ्य है। हलका होने के कारण मलरोधक है, अम्ल और सान्द्र होने के कारण वात-विनाशक है। तत्कालका मथा हुआ तक्र दाहकारक नहीं होता, पाकमें मधुर होता है, किन्तु अन्त में पित्त को कुपित करता है। कषैला, उष्ण विकाशी और रूखा होने के कारण वह तक्र कफ को भी दूर करता है।

जिसमें से सारा ही घी निकाल लिया गया हो, वह माठा पथ्य और विशेषकर हल्का होता है। जिसमें से थोड़ा सा घी निकाला गया हो, वह माठा भारी, वीर्य्यवर्द्धक और कफ नाशक होता है। जिसमें से कुछ भी घी न निकाला गया हो, वह माठा भारी, गाढ़ा, पुष्टिकारक और बल बढ़ाने वाला होता है।

रोग विशेष में तक्र विशेष।

वात रोग में—खट्टे माठे में सेंधानोन डालकर सेवन करना चाहिये।

पित्त रोग में—खट्टा और मीठा माठा मिश्री मिलाकर पीना चाहिये।

कफ रोग में—माठे में जवाखारादि और त्रिकुटे का चूर्ण डाल कर पीना चाहिये। संग्रहणी और अतिसार में—घोल नामक माठे में हींग, ज़ीरा और सेंधानोंन मिलाकर पीना चाहिये। यह घोल वातनाशक, रुचिकारक, पुष्टिदायक, बलकारक और बस्ति की पीड़ा को शान्त करने वाला है।

पीनस, श्वास और खाँसी प्रभृति में—औटाया हुआ माठा पीना चाहिये। कच्ची छाछ कोठे के कफ को तो दूर करती है, किन्तु कंठ में कफ पैदा करती है; इसीलिये पीनस और श्वास प्रभृति में पकाई हुई छाछ पीनी चाहिये।

तक्र की तारीफ

न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाः प्रभवन्ति रोगाः।
यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः॥

तक्र सेवन करने वाला कभी रोगी नहीं होता। तक्र से नष्ट हुए रोग फिर कभी नहीं होते। जिस तरह स्वर्ग में देवताओं के लिये अमृत सुखदाई है; उसी तरह पृथ्वी पर मनुष्यों के लिये माठा हितकारी है।

तक्र की मनाही

गरमीके मौसम में, घाव वाले रोगी को, दुर्बल को, मूर्च्छित को; भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगी को माठा न देना चाहिये।

किसका माठा उत्तम होता है ?

गाय का दही—उत्तम, बलकारक, पाक में मधुर, रुचिकारक,

पवित्र, अग्निदीपक, चिकना, पुष्टिकारक और वातनाशक होता है। सब तरह के दहियों में गाय का दही उत्तम होता है; इसलिये गाय के दही का माठा भी उत्तम होता है।

भैंसका दही—अत्यन्त चिकना, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्वादुपाकी, अभिष्यन्दि, वृष्य और भारी होता है तथा रुधिर को दूषित करता है। भैंस के दही का माठाभी इन्हीं गुणोंवाला होता है।

बकरी का दही—उत्तम, मल-रोधक, हलका, त्रिदोषनाशक, अग्नि को दीपन करने वाला, तथा श्वास, खाँसी, बवासीर, क्षय और कृशता में हितकारी है। बकरी का दही, श्रेष्ठ और ग्राही—काबिज़—होने के कारण, ग्रहणी रोग में अत्यन्त हितकारी है।

संग्रहणीवालों को गाय का माठा अमृत है।

संग्रहणी वालों के हक़ में गाय का माठा अमृत है; क्योंकि माठा दीपन, पाचन, हल्का और पथ्य है। माठे का पाक मधुर होता है, इसलिये वह पित्त को कुपित नहीं करता; माठा कषैला, गरम, रूखा और सन्धियों को शिथिल करनेवाला होने से कफ में भी हितकारी है। स्वादिष्ट, खट्टा और सान्द्र होने की वजह से वात में हितकारी है। माठा तत्काल गुण करता और दाह नहीं करता। "वंगसेन" में लिखा है:—

ग्रहणीरोगिणां तक्रं संग्राहि लघु दीपनम्।
सेवनीयं सदा गव्यं त्रिदोषशमनं हितम्॥
दुःसाध्यो ग्रहणी दोषो भेषजैर्नैव शाम्यति।
सहस्रशोऽपि विहितैर्विना तक्रस्य सेवनात्॥
यथा तृणचयं वह्निस्तमांसि सविता यथा।
निहन्ति ग्रहणी रोगं तथा तक्रस्य सेवनम्॥

संग्रहणी वाले को तक्र—माठा मलको रोकनेवाला, हलका और

अग्नि दीपक है। इसलिये संग्रहणी-रोगियों को सदा गाय का माठा सेवन कराना चाहिये। गायका माठा अत्यन्त हितकारी और त्रिदोष शमन करनेवाला है।

दु:साध्य संग्रहणी बिना माठा सेवन किये, हज़ारों दवाओंसे भी, आराम नहीं होती; अर्थात् माठा सेवन करने से दु:साध्य संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

जिस तरह तृण-समूह को अग्नि और अन्धकार-समूह को सूर्य्य नष्ट करता है; उसी तरह संग्रहणी रोग को तक्र या माठा नष्ट करता है।

भिन्न-भिन्न रङ्ग की गायों का दूध भिन्न-भिन्न रोग-नाशक।

रोगी के तक्र पीनेके लिये उत्तम गायें रखनी चाहियें। गायों के दूध के गुण उन के रङ्गों के अनुसार होते हैं :—

पीले रङ्ग की गाय का दूध वातनाशक होता है। सफेद रङ्ग की गायका दूध पित्तरोग नाशक होता है। लाल गायका दूध कफनाशक होता है। काली गाय का दूध त्रिदोष नाशक होता है।

गायों के चराने की विधि।

गायों को ऐसे वन में चराना चाहिये, जहाँ बहुत से वृक्ष और लता न हों। चराने के बाद उन्हें विश्राम कराना चाहिये और पीछे साफ निर्दोष जल पिलाना चाहिये। गायों को धीरे-धीरे चराना चाहिये। अगर गायों को उत्तम चारा और उत्तम जल मिलेगा, तो उन का दूध भी उत्तम होगा। अगर गायें दूषित चारा और दूषित जल पावेंगी, तो उनका दूध भी दूषित होगा।

रोगानुसार दूध औटाने और जमाने की विधि।

वात-रोगमें कच्चा दूध लेना चाहिये। पित्त-रोग में दूधको ज़रा औटाकर उतार लेना चाहिये। कफ के और त्रिदोष के रोगमें दूधको ऐसा औटाना चाहिये कि, सेर का तीन पाव रह जाय; केवल एक पाव दूध जले। औटाये हुए दूध को ज़रा सी खटाईसे जमा देना चाहिये। दही गाढ़ा जमाना चाहिये। पीछे ज़रासा जल डालकर, रई से मथकर, घी निकाल लेना चाहिये।

संग्रहणी नाशार्थ तक्र-सेवन-विधि।

तक्र और सोंठका चूर्ण-इनको एकत्र मिलाकर, रोज़, सेवन करना चाहिये। अगर तक्र के सेवन करने और अन्न के छोड़ने से कमज़ोरी हो, शरीर रूखा हो, मूत्र और नेत्रोंमें सफेदी हो; तो ज़रासी चिकनाई यानी घी समेत तक्र पीना चाहिये। कुछ दिन बाद-नवनीत—मक्खन; समेत तक्र पीना चाहिये।

तक्र, नौनी घी और सोंठ—इन तीनोंको मिला कर पीना चाहिये। धीरे-धीरे क्रम से अन्न को घटाना चाहिये और उसी हिसाब से माठे को बढ़ाना चाहिये। तक्र को यहाँ तक बढ़ाना चाहिये, कि अन्न बिल्कुल छूट जाय; केवल तक्रका ही आहार रह जाय। जब-जब भूख और प्यास लगे, तब-तब सोंठका चूर्ण मिला हुआ तक्र पीना चाहिये।

जब इस तरह तक्र सेवन किया जाय, तब बहुत परिश्रम—मिहनत, बहुत बोलने, मैथुन और क्रोध से परहेज़ करना चाहिये। इस तरह तक्र सेवन करने से संग्रहणी शीघ्र ही इस तरह नष्ट हो

जाती है ; जिस तरह जूआ खेलने वाले की लक्ष्मी शीघ्र ही नष्ट हो जाती है ।

जब संग्रहणी आराम हो जाय, तब अन्न सेवन करना चाहिये । आराम होने पर एकदम अन्न न बढ़ा देना चाहिये । जिस तरह पहले अन्न को घटाया था; उसी तरह क्रम-क्रम से माठा त्याग करना चाहिये और अन्न को बढ़ाना चाहिये ।

संग्रहणी में तक्र को क़ायदे से सेवन करना चाहिये । संग्रहणी के नाश करनेके लिये तक्रसे बढ़कर और दवा नहीं है । यद्यपि संग्रहणी में तक्र हितकारी है; तथापि बेक़ायदे सेवन किया हुआ तक्र साक्षात् कालकूट विष के समान है ।

नोट—(१) केवल सोंठ के चूर्ण को माठे के साथ सेवन करने से संग्रहणी निश्चयही आराम हो जाती है ।

(२) चीते का चूर्ण माठेके साथ सेवन करने से संग्रहणी आराम हो जाती है ।

(३) हरड़ के वृक्ष की छाल, माठेमें पीसकर, सेवन करने से आम और रक्त-युक्त संग्रहणी आराम हो जाती है ।

संग्रहणी रोग की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें ।
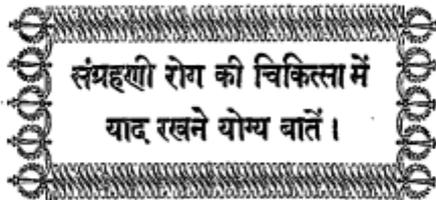
(१) संग्रहणी रोग की, लंघनों से तथा अग्नि को दीपन करने वाली अतिसार की औषधियों से, अजीर्ण की तरह, चिकित्सा करनी चाहिये । इस रोगमें भी दोषोंकी सामता और निरामताका, अतिसार की तरह, ख़याल रखना चाहिये और अतिसार की तरह ही सामता और निरामताको समझना एवं अतिसारमें लिखी हुई तरकीबों से ही आम को पचाना चाहिये ।

(२) अग्नि दीपक पञ्चकोल-(पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता और सोंठ) युक्त अन्नपान, तक्र—माठा, पेया, यवागू, मण्ड और यूषादिक हलके अन्न ग्रहणी रोग में सदा देने चाहियें। अग्नि-दीपक पदार्थ संग्रहणी में परम हितकारी होते हैं।

(३) वातज संग्रहणी के पक जाने पर, उसे दीपन औषधियों से सिद्ध किये घृतों अथवा ऐसे ही क्वाथ वगैरः से जीतना चाहिये। "शुण्ठी घृत," "वृहत् चांगेरी घृत" अथवा "शुण्ठादि क्वाथ" प्रभृति वातज संग्रहणी में अच्छा काम करते हैं।

(४) पित्तज संग्रहणीमें—जठराग्निको दूषित करनेवाले पित्त को, विरेचन और वमन के द्वारा, शान्त करना चाहिये। इसके बाद हलके, मल को रोकने वाले, अग्नि को दीपन करनेवाले; किन्तु दाह न करने वाले, पदार्थ सेवन कराने चाहियें। पित्तज संग्रहणी में "रसाञ्जनादि चूर्ण" अच्छा काम करता है।

(५) कफज संग्रहणी वाले को तीक्ष्ण औषधियोंसे वमन करानी चाहिये तथा नमकीन, खट्टी, कड़वी और खारी द्रव्यों से क्रम-पूर्वक जठराग्नि को दीपन करना चाहिये। "पथ्यादि चूर्ण" माठे के साथ सेवन करनेसे तथा पीछे पृष्ठ ११४में लिखी हुई "यवागू" सेवन कराने से कफज संग्रहणीमें निश्चय ही लाभ होता है।

(६) जीर्ण हुआ आम या संग्रहणी रोग साधारण उपायों से आराम नहीं होता। चिकित्सक को पुरानी संग्रहणी में बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। संग्रहणी में रोगी का जठर इतना खराब या दूषित हो जाता है कि, साधारण खाना भी उसे नहीं पचता। संग्रहणी वाले की हालत एक बच्चे की सी हो जाती है। अतः संग्रहणी रोग यदि आराम करना हो, तो रोगी को वैद्य बालक समझ ले और बालक समझ कर उसे हल्के-से-हल्का पथ्य—खाना वगैरः दे।

(७) संग्रहणी-रोगी के लिये माठा अमृत है। माठा ही उस को

जीवन-रक्षा कर सकता है । वैद्यको चाहिये कि,उसे दवा और भोजन दोनों के एवज़ में माठा ही सेवन करावे । भुनी हींग, भुना ज़ीरा और सेंधानोन मिलाकर माठा लगातार पिलाये जाना परम हितकारी है । संग्रहणी-रोगीको छाछसे भोजनके समान बल रहता है और अग्नि तेज़ होती है । जब अग्नि तेज़ हो जाय, तब उसे पुराने चाँवल प्रभृति हलके भोजन देनेमें हानि नहीं । हमने देखा है कि, जिनके शरीर में खून और मांसका नाम भी नहीं रहा था,जिनमें केवल हाड़-ही हाड़ दीखते थे, जिनको डाक्टरों ने असाध्य कह दिया था, वे रोगी कितने ही महीनों तक, विश्वास और श्रद्धा के साथ, एकमात्र छाछ सेवन करनेसे चङ्गे हो गये । संग्रहणी-जैसे भयङ्कर रोगकी महर्षियोंने अनेक उत्तमोत्तम महौषधियाँ लिखी हैं, और वे उपकारी भी हैं ; पर छाछ से सब का दर्जा नीचा है । इधर मरणशय्या पर पड़ा, जीवनसे निराश रोगी माठा सेवन करने लगता है और उधर उस का रोग घटने और नया खून जमा होने लगता है ।

(८) लाई चूर्ण, दुग्धवटी, ह्रीवेरादि क्वाथ, षड्यूषण, जातीफलादि चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, कनक रस,चन्द्रकला चूर्ण, ग्रहणी कपाट रस और ग्रहणी वज्र कपाटरस—ये सबसंग्रहणी पर रामवाण हैं । हमने इनके बनाने और सेवन करनेकी विधि आगे पृष्ठ १३२-१४३ में लिखी है । यों तो संग्रहणी-नाशक हज़ारों नुसख़े हैं ; पर उपरोक्त नुसख़े हमारे आज़माये हुए हैं और प्रसिद्ध भी हैं । इनको उचित अनुपान और पथ्यके साथ सेवन करनेसे संग्रहणी निश्चयही नाश हो जाती है ।

(९) माठा पीना, आबहवा बदलना, दरिया या समुद्र की सैर करना,—इस रोग में परम हितकारी है । ज़ियादा नहाना, ज़ियादा पानी पीना, चिकने पदार्थ खाना, जागना और मिहनत करना हानिकारक है ।

नोट—चिकित्सा दो तरह की होती हैं:—(१) सामान्य, और (२) विशेष। सामान्य से विशेष चिकित्सा अच्छी है; क्योंकि वह अपना फल शीघ्र दिखाती है; पर उस चिकित्सामें दोषोंके अंशांशकी कल्पना करनी पड़ती है। किन्तु यह काम हर किसी का नहीं; विद्वान् और अनुभवी वैद्य ही दोषों का ठीक अन्दाज़ा कर सकते हैं और जो वैद्य रोग के निदान और लक्षणों से दोषों के अंशांशों की कल्पना कर लेते हैं। फिर दोषोंके अनुसार ही दवा तजवीज करते हैं, उन्हें निश्चय ही सफलता मिलती है।

वातज ग्रहणीकी चिकित्सा।

(१) पंचकोल का यूष, अनारका रस और चिकने पदार्थ वातज ग्रहणीमें हितकारी हैं।

(२) कैथ, बेलगिरी, चूका, माठा और अनार—इनसे बनाई हुई यवागू आमको पचाती और मलको बाँधती है।

(३) सोंठ, कुड़ेके बीज, पीपल, कटाई, कटेरी, चीता, सारिवा, पाढ़, जवाखार और पाँचों नमक—इनका चूर्ण गरम जल या काँजी अथवा गायके दहीके साथ सेवन करनेसे अग्नि बढ़ती और कोठे की वायु दूर होती है।

नोट—पाँचों नमकों के नाम आगे पृष्ठ १२६में लिखे हैं।

(४) धनिया, अतीस, सुगन्धवाला, अजवायन, नागरमोथा, सोंठ, खिरेंटी, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी और बेलगिरी—इनका काढ़ा दीपन और पाचन है।

(५) अजवायन, सोंठ, पीपर, काली मिर्च, सेंधानोन, सफेद जीरा, काला जीरा और भुनी हींग—इन आठोंके चूर्णको "हिंग्वष्टक चूर्ण" कहते हैं। इस चूर्णको "घी" में मिलाकर, पहले ग्रासमें रखकर, खानेसे अग्नि दीप्त होती और वात नाश होती है।

(६) चीता पीपलामूल, जवाखार, सज्जीखार, काला नोन, सेंधानोन, विरिया सञ्चरनोन, रेहगवाँ नोन, समन्दर नोन, सोंठ, मिर्च, पीपर, भुनी हींग, अजमोद और चव्य—इनको एकत्र पीस-छान कर, बिजौरे नीबूके रसमें अथवा अनारके रसमें मिला कर गोलियाँ बना लेनी चाहियें। ये गोलियाँ आमको पचातीं और अग्निको दीपन करती हैं।

नोट—वातज संग्रहणी परिपक्व हो जाय, तब दीपन औषधियों के द्वारा सिद्ध किये हुए घी से चिकित्सा करनी चाहिये।

(७) सोंठ, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, गोखरू, पीपल, धनिया, बेलगिरी, पाढ़ और अजवायन—इन सबका पिसा हुआ चूर्ण चार तोले लो। शुद्ध गायका घी ६४ तोले लो। चँगेरी या नोनिया अथवा चूकेका स्वरस २५६ तोले (३ सेर, ३ छटाँक, १ तोले) लो और २५६ तोले दहीकी छाछ लो। शेषमें सबको पीतलकी कलईदार कड़ाहीमें चढ़ाकर, मन्दाग्निसे, पकाओ। जब पतले पदार्थ जलकर घी मात्र रह जाय, उतार लो। इस वृहत् चाँगेरी घृत" के सेवनसे सब तरहके कफ-वात रोग, सब तरहकी बवासीर, सब तरहकी संग्रहणी, मूत्रकृच्छ, प्रवाहिका, गुदभ्रंश—काँच निकलना, और अफारा ये सब नाश हो जाते हैं।

(८) सोंठको सिलपर जलके साथ पीसकर, पीछे उस लुगदी और घीको कड़ाहीमें पकाने से जो घी तैयार होता है, उसे "शुण्ठी घृत" कहते हैं। यह घी वात को अनुलोमन करता तथा संग्रहणी, पीलिया, तिल्ली और ज्वरको नाश करता है।

नोट—अगर सोंठ की पिसी लुगदी ४ तोले हो; तो घी १६ तोले लो और जल

६४ तोले लो। इन सब को मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार लो🙉।

🙉 कल्क की औषधियों से चौगुना घी लेना चाहिये। उस घी से चौगुना दूध, गोमूत्र या काढ़ा प्रभृति लेना चाहिये। पीछे सबको मिलाकर, चूल्हे पर चढ़ाकर, मन्दाग्नि से पचाना चाहिये। जब पतले पदार्थ दूध, जल, मूत्र या काढ़े प्रभृति जल जायें, केवल घी या तेल रह जाय, तब चूल्हे से उतार कर, छान कर रख लेना चाहिये।

घी या तेलके पकने की परीक्षा यह है कि, जब घी के सब झाग शान्त हो जायँ, तब घी को सिद्ध हुआ समझना चाहिये; किन्तु तेल पर जब झाग आने लगें, तब तेलको सिद्ध हुआ समझना चाहिये।

घी या तेलके कल्कको आग पर डालने से आवाज़ न हो, तथा उसे अङ्गुलियोंके पोरुओं पर लगा कर मलने से बत्ती सी बन जाय, तब समझ लेना चाहिये कि, घी या तेल अच्छी तरह पक गया।

घी तेलका पाक तीन तरह का होता है—(१) मृदु, (२) मध्यम (३) खर। नस्य-कर्म के लिये मृदुपाक उत्तम होता है। सब कामों के लिये मध्यम पाक उत्तम है। मालिश के लिये खरपाक श्रेष्ठ है।

घी या तेल अधिक पाक होने से यदि जल जायँ, तो दाह करते हैं और कच्चे रह जायें तो अग्नि मन्द करते हैं।

कल्क से चौगुना घी या तेल लेना चाहिये। घी या तेल से चौगुना काढ़ा लेना चाहिये। दूध, दही स्वरस अथवा माठा डाल कर घी या तेल बनाना हो, तो घी या तेल का आठवाँ भाग कल्क डालना चाहिये। जिस घी तेल में कल्क न हो, उसे पतले पदार्थों से सिद्ध करना चाहिये।

घी, तेल, गुड़ प्रभृति बनाने हों तो एक ही दिनमें न बनाने चाहियें। पहले दिन इनकी दवाओं को भिगो देना चाहिये। दूसरे दिन घी तेल आदि तैयार करने चाहियें।

काढ़े की दवाएँ चौगुना पानी डाल कर औटानी चाहियें। जब चौथाई जल रह जाय, काढ़ा उतार लेना चाहिये। गुड़ूच आदि नरम दवाओं में चौगुना जल डालना चाहिये। अमलतास आदि कड़ी दवाओं में अठगुना जल डालना चाहिये। पद्माख आदि बहुत ही कड़ी दवाओं में १६ गुना जल डालना चाहिये।

कल्कका उत्तम पाक होने के लिये, घी या तेल से चौगुना पानी डालना चाहिये।

(९) सोंठके कल्क और दशमूल के काढ़े के साथ जो घी पकाया जाता है, वह सूजन, संग्रहणी, और आमवातको नष्ट करता है।

नोट—अगर सौंठ का कल्क ४ तोले हो, तो घी १६ तोले और दशमूल का काढ़ा ६४ तोले लेना। पीछे सब को मन्दाग्नि से पका लेना।

(१०) सोंठ, गिलोय, नागरमोथा और अतीस—इनको बराबर-बराबर लेकर, काढ़ा बनाकर, वातज संग्रहणीमें देनेसे निश्चय ही लाभ होता है। यह नुसख़ा आमातिसार और आम युक्त संग्रहणी में, जिसमें पहले मल और पीछे आम निकलता हो अथवा आम-मिला मल निकलता हो, परम लाभदायक है। इससे अग्नि भी बढ़ती है। यह आरम्भमें ही दिया जा सकता है। परीक्षित है।

पित्तज ग्रहणीकी चिकित्सा।

(११) रसौत, अतीस, इन्द्रजौ, कुड़ेकी छाल, सोंठ और धायके फूल,—इन सबको एकत्र पीसकर,शहद और चाँवलों के पानीके साथ, सेवन करनेसे पित्तकी संग्रहणी, बवासीर, रक्तपित्त और अतिसार नष्ट होता है। परीक्षित है। इसको "रसाञ्जनादि चूर्ण" कहते हैं।

(१२) रसौत, अतीस, इन्द्रजौ, कुड़ेकी छाल और धायके फूल—इनके चूर्ण को शहद और चाँवलों के जल के साथ लेने से पित्तकी संग्रहणी आराम होती है। इसको भी "रसाञ्जनादि चूर्ण" कहते हैं।

नोट—यह नुसख़ा अनेक बार का परीक्षित है। इसमें और ऊपरके में भेद इतना ही है, कि इस में सौंठ नहीं है। इस में सौंठ छोड़ कर ५ दवाएँ हैं और उस में सौंठ समेत ६ हैं।

(१३) कुटकी, रसौत, सौंठ, धायके फूल, हरड़, इन्द्रजौ, नागरमोथा, कुड़ेकी छाल और भाँगरा—इनका काढ़ा अत्यन्त बढ़ी हुई गुद-शूल-युक्त पित्तज संग्रहणीको आराम करता है। इसका नाम "तिक्तादि क्वाथ" है। परीक्षित है।

(१४) पाढ़, इन्द्रजौ, चीता और सोंठ—इनका काढ़ा पित्त-कफसे पैदा हुई संग्रहणी तथा सब तरह के शूलको नाश करता है। इनका चूर्ण बनाकर, गरम जल के साथ, सेवन करनेसे भी वही लाभ होता है।

(१५) पाढ़, अतीस, इन्द्रजौ, कुड़ेकी छाल, नागरमोथा, कुटकी, धायके फूल, रसौत और बेलगिरी—इनके चूर्णको "शहद" मिलाकर, चाँवलोंके जलके साथ, सेवन करनेसे प्रवाहिका, रक्तातिसार, गुदाकी पीड़ा, संग्रहणी और बवासीर—ये रोग नष्ट होते हैं।

नोट—इस नुसखेमें सोंठ और मिला दें, तो दस दवाइयां हो जाती हैं। इसको "नागरादि चूर्ण" कहते हैं। इसके सेवनसे पित्तकी संग्रहणी, रुधिरकी बवासीर, गुदा की पीड़ा और प्रवाहिका आराम हो जाती है। यह नुसखा बिना सौंठ और सौंठ दोनों तरह परीक्षा किया हुआ है। हर हालत में, यह नुसखा शहद और चाँवलों के जल के साथ ही सेवन किया जाता है।

चार तोले चांवलोंको अधकचरा करके (आटा सा न हो जाय), ३२ तोले जलमें, २ घण्टे तक, भिगोकर छान लेना चाहिये। यही चाँवलोंका पानी है।

(१६) चिरायता, कुटकी, सोंठ, मिर्च, पीपर, नागरमोथा और इन्द्रजौ—ये सब एक-एक तोले लेने चाहियें। चीतेकी छाल दो तोले लेनी चाहिये और कुड़ेकी छाल १६ तोले लेनी चाहिये। पीछे सबको एकत्र करके, कूट पीस छान कर, चूर्ण कर लेना चाहिये। इस चूर्णको "भूनिम्बादि चूर्ण" कहते हैं। इस चूर्णको पुराने गुड़ और शीतल जलके साथ लेनेसे संग्रहणी, गोला, कामला, पीलिया, ज्वर, प्रमेह, अरुचि और शरीरका पीलापन आराम हो जाता है।

नोट—पुराने गुड़को शीतल जलमें घोल कर छान लेना चाहिये। यही गुड़का शर्बत है। इस का स्वाद और रंग गुड़ के जैसा ही होता है। "भूनिम्बादि चूर्ण" खाकर ऊपरसे यही गुड़ का शर्बत पीना चाहिये।

(१७) पाढ़, बेलगिरी, चीता, त्रिकुटा, जामुन, अनारका छिलका, धायके फूल, कुटकी, अतीस, नागरमोथा, हल्दी, चिरायता और इन्द्रजौ,—ये सब एक-एक तोले लेने चाहियें और १३ तोले कुड़ेकीछाल

लेनी चाहिये। पीछे सब को एक जगह करके, कूट-पीस छान कर, चूर्ण बना लेना चाहिये। इस चूर्ण को शहद और चाँवलों के जलके साथ सेवन करने से ज्वर, अतिसार, वमन, संग्रहणी, दाह, शूल अरुचि, और अग्निमन्दता—ये सब नाश होते हैं।

(१८) आम की गुठली की मींगी, सोंठ, अतीस और कुड़े की छाल—बराबर-बराबर लेकर, आम के पत्तों के रस में, ३ दिन, घोटो और शीशी में रख दो। इस को मिश्री मिलाकर खाने से पित्त की संग्रहणी, ज्वरातिसार और तेज़ी से ख़ून का गिरना—ये सब आराम होते हैं। मात्रा ४ से ६ माशे तक। समय—सवेरे शाम।

कफज ग्रहणी की चिकित्सा।

(१८) सोंठ, नागरमोथा और बायविडङ्ग—इनके चूर्णको माठा या गरम पानीके साथ सेवन करनेसे कफकी संग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है।

(२०) हरड़, पीपल, सोंठ और चीता—इनका चूर्ण माठे के साथ सेवन करने से कफकी संग्रहणी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) केवल सोंठ का चूर्ण माठे के साथ सेवन करने से शूलयुक्त कफ की संग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) पीपल, पीपलामूल, जवाखार, सज्जीखार, पाँचों नमक, बिजौरा नीबू, हरड़, रास्ना, कचूर, कालीमिर्च और सोंठ—इन सब को बराबर-बराबर ले कर चूर्ण बना लेना चाहिये। इस चूर्ण को मन्दोष्ण जल के साथ, सवेरे के समय, नित्य, सेवन करने से कफ की संग्रहणी आराम हो जाती है। साथ ही बल, मांस और जठराग्निकी वृद्धि होती है।

(२३) त्रिकुटा, आम की छाल और कुड़े की छाल—इनको एकत्र

पीसकर, चाँवलों के पानी के साथ, सेवन करने से संग्रहणी, कामला, पीलिया, प्रमेह, अरुचि, अतिसार, गोला, सूजन और ज्वर—ये नाश हो जाते हैं।

(२४) थूहर की लकड़ी १६ तोले, तीनों नमक १२ तोले, बेंगन १६ तोले, आक ८ तोले, बेलगिरी ८ तोले और चीता ८ तोले—इन सब को एकत्र करके आग में जला लो। पीछे बेंगनोंका रस निकाल कर, उस रस में इस जले हुए मसालेको मिलाकर गोलियाँ बना लो। भोजन के बाद, इन गोलियों के खाने से भोजन शीघ्र ही पच जाता है और संग्रहणी आराम हो जाती है। इस के सिवा श्वास, खाँसी, बवासीर, विशूचिका, प्रतिश्याय—जुकाम और हृदय-रोग में ये गोलियाँ विशेष रूप से फ़ायदा दिखाती हैं। इन को "वार्ताकु गुटिका" या "बेंगन की गोलियाँ" कहते हैं।

नोट—जहाँ तीन नमक लिखे हों, वहाँ सेंधा, सञ्चल और बिड़नोन लेना चाहिए।

(२५) सज्जी, जवाखार, पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, मिर्च, पाँचों नोन, भुनी हींग और अजवायन—इन १५ दवाओं को लेकर, कूट-पीस कर चूर्ण कर लो। पीछे अम्लवेत, बिजौरा, नीबू और भड़बेरों का रस निकाल लो। उसी रस में इस चूर्णको खरल करके रोगी को खिलाओ। इससे कफवातज संग्रहणी और बवासीर निश्चय ही आराम होती है। यह चूर्ण अग्नि दीपन करने और अन्न पचाने में अपना सानी नहीं रखता। परीक्षित है।

नोट—पाँचों नमकों के नाम ये हैं :—सेंधा, सञ्चल, बिड़, समन्दर और काँच नमक।

(२६) नौ पीपलों को महीन पीसकर और शहद में मिलाकर, एक घड़े में लेप कर दो। पीछे उस घड़े में अगर की धूनी दो। इस के बाद, उस घड़े में ४ सेर शहद और ४ सेर पानी भर दो। इसके भी बाद उस घड़े में निम्नलिखित चीज़ों को डाल दो :—बायबिडंग ८ तोले, पीपल १६ तोले, बंसलोचन ४ तोले, नागकेशर १ तोले, काली-

मिर्च १ तोले, दालचीनी १ तोले, इलायची १ तोले, तेजपात १ तोले, कचूर १ तोले, सुपारी १ तोले, अतीस १ तोले, नागरमोथा १ तोले, रेणुका १ तोले, एलुआ १ तोले, तेजबल १ तोले, पीपलामूल १ तोले और चीते की छाल १ तोले।

घड़े में सब चीज़ों को डालकर, उसका मुँह बन्द करके और मुद्रा देकर, १ मास तक, उसे रक्खा रहने दो। १ मास पूरा होने पर, घड़े को खोल कर, दवा को मात्रा से सेवन करने से मन्दाग्नि दीप्त होती है, विषमाग्नि समान होती है तथा हृदय-रोग, पीलिया, संग्रहणी, कोढ़, बवासीर, सूजन, ज्वर और वातकफ के रोग नष्ट होते हैं। इस को "मध्वारिष्ट" कहते हैं।

नोट—शीशी पर काग लगा कर, उसे मिट्टीसे अथवा कभी-कभी गुड़ और चूनेसे और कभी-कभी शहत और चूने से बन्द कर देते हैं, इसी को "मुद्रा" कहते हैं। मतलब यह है, घड़े पर सराई रखकर, उसकी सन्धियों को मिट्टी और कपड़े से अथवा मिट्टी, रूई, राख और लोहे के मैल को खूब कूटकर लुगदी सी बनाकर, उसी लुगदी से, पुटीन लगाने की तरह, बन्द कर देने को भी मुद्रा कहते हैं। मुख ऐसा बन्द करना चाहिये, जिस से साँस न निकले।

(२७) बेलगिरी, श्योनाक, कुम्भेर, पाढ़ल, अरणी, शालपर्णी, पृष्टपर्णी, गोखरू, कटेरी, बड़ी कटेरी, हल्दी, जीवक, ऋषभक और चीता,- इन चौदह दवाओं को बीस-बीस तोले ले आओ। पीछे इन को ६४ सेर जल में डाल कर पकाओ। जब १६ सेर जल रह जाय, उतार कर छान लो। पीछे इस छने हुए काढ़े में ३२ तोले पुराना गुड़ और ३२ तोले शहद मिला दो। इस के बाद फूलप्रियंगू ४ तोले, मँजीठ ४ तोले, बायबिडङ्ग ४ तोले, मुलेठी ४ तोले, पीपल ४ तोले और सफेद लोध ४ तोले—इन छहों को पीसकर मिला दो। शेषमें, घड़ेका मुख अच्छी तरह से बन्द करके, मुद्रा देकर, १५ दिन तक ज़मीन में गाढ़ रखो। इस के बाद निकाल लो। इस को "दशमूल आसव" कहते हैं। यह आसव अग्नि को दीपन करता, रक्तपित्त, अफारा, कफ, हृदयरोग, पीलिया और शरीर की ग्लानि को नाश करता है।

नोट—आसव और अरिष्ट का भेद ऊपर के दोनों नुसख़ों से सहज में समझ सकोगे।

(२८) कालीमिर्च, सोंठ, पीपर, लौंग और अकरकरा—इन में से प्रत्येक को साढ़े तीन-तीन माशे लो और अफीम सात माशे लो। सब को कूट-पीस छान कर खरलमें डालो, साथ ही अफीम भी डाल दो और अदरख का रस दे-देकर घोटो। घुट जाने पर, चने-समान गोलियाँ बाँधो। एक-एक गोली सवेरे-शाम देने से कफ के दस्त और संग्रहणी आराम होती है।

सन्निपातज ग्रहणीकी चिकित्सा।

(२९) बेलगिरी, मोचरस, नेत्रवाला, नागरमोथा, इन्द्रजौ और कुड़े की छाल—इन छहों को बकरी के दूध में डाल कर पकाने से जो दूध तैयार होता है, उस दूधके सेवन करने से सन्निपातज ग्रहणी निश्चय ही आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३०) नागरमोथा, अतीस, बेलगिरी और इन्द्रजौ-इनको समान-समान लेकर, महीन कूट पीस और छान कर चूर्ण बना लो। इस चूर्णको "शहद" में मिला कर चाटनेसे त्रिदोषजन्य संग्रहणी आराम हो जाती है। इसका नाम "मुस्तकादि चूर्ण" है।

नोट—सामान्य चिकित्सा में दोषों के अंशांश की कल्पना नहीं करनी पड़ती, केवल रोगकी पहचान करनी पड़ती है। दोषों के अंशांशकी कल्पना करनेकी अपेक्षा रोग को पहचानना सहज है। यह संग्रहणी रोग है, ऐसा जानना सहज है; पर वातज है या पित्तज है अथवा कफज है, इस में कितने अंश वातके, कितने पित्त के और कितने कफ के हैं, यह जानना बहुत कठिन है। सब वैद्य ऐसा कर नहीं सकते; इसीसे आचार्योंने सामान्य चिकित्सा लिखी है:—

अंशांशं यत्र दोषाणां विवेक्तुं नैवशक्नुयात्।
साधारणीं क्रियां तत्र विदध्यात्तु चिकित्सकः॥

जहाँ वैद्य दोषों के अंशांशको न जान सके, वहाँ साधारण चिकित्सा करे। वही साधारण चिकित्सा हम आगे लिखते हैं:—

संग्रहणी नाशक नुसखे

जातीफलादि चूर्ण।

(३१) जायफल, लौंग, इलायची, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, कपूर, सफेद चन्दन, सफेद तिल, वंसलोचन, तगर, आमले, तालीस-पत्र, पीपल, हरड़, कलौंजी, चीता, सोंठ, वायबिडंग और कालीमिर्च—इन बीसों दवाओं को एक-एक तोले ले लो और धुली भाँग बीस तोले ले लो। कुल चालीस तोले माल को पीस कूट कर छान लो। पीछे इस चूर्ण की बराबर ही चालीस तोले मिस्री मिला लो और एक अमृतबान या चौड़े मुँह की साफ शीशी में भर कर रख दो। इस को "जातीफलादि चूर्ण" कहते हैं। इस के सेवन करने से संग्रहणी, खाँसी, श्वास, अरुचि, क्षय, और वातश्लेष्म का जुकाम—ये सब आराम होते हैं।

मात्रा और सेवन विधि—इस चूर्ण की मात्रा "शार्ङ्गधर" और "भावप्रकाश" में १ कर्ष या १ तोले की लिखी है। अगर रोगी को १ तोले की मात्रा खिलाई जाय, तो ४ माशे भाँग १ मात्रा में आती है। इतनी भाँग का बर्दाश्त करना सब किसीका काम नहीं है। हाँ, अँधाधुन्ध

भाँग पीने की आदत वाला बेशक बर्दाश्त कर सकेगा। थोड़ी भाँग पीनेवालों या क़तई न पीनेवालोंके लिये तो सङ्कट खड़ा हो जायगा। इसलिये भाँग न पीने वालों को पहले १ माशे की मात्रा से यह चूर्ण आरम्भ कराना चाहिये। १ माशेकी मात्रा में कोई २॥ रत्ती भाँग आवेगी। अगर नशा न चढ़े, सह जाय, तो फिर बढ़ाते जाओ और चार माशे तक बढ़ाओ। इस की १ खूराक शहद के साथ चटानी चाहिये। संग्रहणी में सवेरे शाम दोनों समय इसे दे सकते हो। परीक्षित है।

नोट—संग्रहणी, राजयक्ष्मा और खांसी में इसे हमने आजमाया है। राजयक्ष्मा और खांसी वालोंको हम सन्ध्या-समय इसे चटा कर ऊपरसे गरम दूध मिश्री मिला कर पिलाते थे। बड़ी अच्छी चीज़ है। इसकी मात्रा कभी अधिक न देनी चाहिये। बादी सरदी के ज़ुकाम में एक मात्रा चटाकर गरम दूध पिलाना चाहिये।

(२) जातीफलादि चूर्ण।

(३२) जायफल, बायबिडङ्ग, चीता, तगर, तालीस-पत्र, सफ़ेद चन्दन, सोंठ, लौंग, कलौंजी, कपूर, हरड़, आमला, काली मिर्च, पीपर, वंस-लोचन, तज, तमाल-पत्र, सफ़ेद इलायची और नागकेशर इन सबको एक-एक तोला लो। शुद्ध धुली भाँग २८ तोले और मिश्री ४७ तोले लो। सबको कूट पीस छान कर रख लो। तीन या चार माशे चूर्ण माठे के साथ सेवन करो। इससे संग्रहणी नाश होती है।

नोट—यह भी "जातीफलादि चूर्ण" है। दालचीनी और सफेद तिल प्रभृति दो तीन औषधियों का इस में और हमारे लिखे जातीफलादि चूर्ण में भेद है और कुछ नहीं। संग्रहणी में माठा हर तरह उपकारी है; इस में संशय नहीं। माठे का अनुपान सबसे अच्छा है। देवास-निवासी वैद्यवर मोतीलाल किशनलालजीने भी इसे माठे के साथ ही देने की राय दी है। उन का आजमाया हुआ नुसखा है; अवश्य उपकारी होगा, इसी से हमने लिखा है।

(१) लाई चूर्ण।

(३३) शुद्ध गंधक १ तोला और शुद्ध पारा आधा तोला लेकर, दोनों को खरल में डालकर खरल करो। जब कजली तैयार हो जाय; उस में सोंठ, कालीमिर्च और पीपल का चूर्ण ३ तोले, पाँचों नोन १॥ तोले, भुनी हींग १ तोले, स्याह ज़ीरेका चूर्ण १ तोले, सफ़ेद ज़ीरे का चूर्ण १ तोले और सबसे आधी यानी ४॥ तोले भाँग मिला दो। इसी को "लाई चूर्ण" कहते हैं।

सेवन विधि—तीन माशे चूर्ण माठे के साथ या बेल के गूदे के साथ सेवन करना चाहिये। यह संग्रहणीमें परम हितकारी है। आज-कल के से दुर्बल आदमियों को १ या १॥ माशे की मात्रा देनी चाहिये। जो बहुत ही कमज़ोर हों, उन्हें और भी कम मात्रामें यह दवा देनी चाहिये।

(२) लाई चूर्ण।

(३४) गन्धक १ तोला, शोधा हुआ पारा ६ माशे, इन की उत्तम कजली कर लो। पीछे इस में निम्नलिखित चीज़ें महीन पीस कर मिला दो :—सोंठ १ तोला, मिर्च १ तोला, पीपर १ तोला, सेंधानोन १॥ तोला, सञ्चल नोन १॥ तोला, विड़नोन १॥ तोला, औदभिद नोन १॥ तोला, समन्दर नोन १॥ तोला, अजमोद २ तोला, भुना ज़ीरा २ तोला, भुनी हींग २ तोला, भुना सुहागा २ तोला, स्याह ज़ीरा २ तोला और भुनी भाँग ८ तोला—इन सब के मिलाते ही चूर्ण तैयार हो जायगा।

यह चूर्ण अग्नि दीपन करता तथा सब तरहकी संग्रहणी और अतिसार को आराम करता है। इन रोगों के सिवाय बवासीर, शूल,

क्षमिरोग और प्रबल यक्ष्माको निश्चयही आराम करता है। यह चूर्ण रसायन, बुद्धि को प्रकाश करने वाला और अनेक रोगोंको नाश करने वाला है। परीक्षित है।

सेवन विधि—शास्त्र में इस की मात्रा ४ माशे की लिखी है। परन्तु हमने इसे १ माशेसे २ माशे तक रोगियोंको दिया और अच्छा फल पाया। इस की १ मात्रा माठे के साथ अथवा जंभीरी नीबूके रस के साथ सेवन करनी चाहिये।

नोट—इस चूर्ण और ऊपर के लाई चूर्णमें विशेष भेद नहीं है। हमने इस चूर्ण को इसी रीतिसे बनाया और आजमाया है। संग्रहणी रोगमें यह चूर्ण और जाती-फलादि चूर्ण अव्यर्थ महौषधि हैं। ८० की सदी रोगी इन से आराम होते हैं।

कनक रस।

(३५) शुद्ध सिंगरफ, कालीमिर्च, शुद्ध गन्धक, पीपल, शुद्ध सुहागा, शुद्ध वत्सनाभ विष और शुद्ध धतूरे के बीज—इन सबको "भाँग के रस में" पूरे तीन घण्टों तक खरल करके, एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लेनी चाहियें। इस को "कनक रस" कहते हैं। इस रस से संग्रहणी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

सेवन विधि—बलाबल देखकर चौथाई या आधी गोली देनी चाहिये।

नोट—गन्धक, पारा, वत्सनाभविष, धतूरेके बीज और सिंगरफ वगेरः के शोधने की तरकीबें चि० च० दूसरे भाग के अन्त में लिखी हैं।

चित्रकादि वटिका।

(३६) चीता, पीपलामूल, जवाखार, पाँचोंनोंन, त्रिकुटा, भुनी हींग, अजमोद और चव्य—इन सब को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलो। पीछे बिजौरे नीबू के रस में या अनार के रस में खरल करके गोलियाँ

बना लो। इनका नाम "चित्रकादि वटिका" है। आरम्भ में देने से ये गोलियाँ आम को पचातीं और जठराग्नि को दीपन करती हैं।

चन्द्रकलाचूर्ण।

(३७) चिरायता, कुटकी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सोंठ, मिर्च, पीपल,—इन सातों को एक-एक तोले लो। कुड़े की छाल १६ तोले लो और चीते की छाल २ तोले लो। सब को मिलाकर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण की १ मात्रामें दूना पुराना गुड़ मिलाकर, शीतल जलके, साथ खानेसे पीलिया, ज्वर, अतिसार, संग्रहणी, अरुचि, वायुगोला, और प्रमेह नाश हो जाते हैं। इसका नाम "चन्द्रकला" चूर्ण है। परीक्षित है।

महाकल्याण गुड़।

(३८) पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, धनियाँ, बायबिडंग, अजवायन, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजमोद, नील, ज़ीरा, सेंधानोन, रेहगवाँ नोन, समन्दरनोन, कालानोन, विरिया संचर-नोन, अमलतास का गूदा, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, कलौंजी, सोंठ और इन्द्रजौ—इन में से प्रत्येक को एक एक तोला लो। दाख १६ तोले लो, निशोथ ३२ तोले लो, गुड़ २२० तोले लो, तिली का तेल ३२ तोले लो और आमलों का रस ३ सेर लो।

सब को मिलाकर, क़लईदार कड़ाही में डाल कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। अग्नि का बलाबल विचार कर, हर दिन, गूलर के फल के बराबर, आमले के बराबर अथवा बेर के बराबर खाओ। इसको "महा कल्याण गुड़" कहते हैं।

इस गुड़ के सेवन करने से सब तरह के ग्रहणी रोग, बीस प्रकार के प्रमेह, उरोघात, ज़ुकाम, कमज़ोरी, मन्दाग्नि और सब तरह के

ज्वर नाश होते हैं। पीलिया, रक्तपित्त, मल की रुकावट, धातु-क्षीण, अवस्थाक्षीण, स्त्री से क्षीण, क्षय से क्षीण और बाँझ स्त्री—इन सब को यह गुड़ परम हितकारी है।

कूष्माण्ड कल्याण गुड़

(३८) अच्छा पका हुआ पेठा लाकर छील लो और उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। बाद में तोल कर पाँच सेर पेठे के टुकड़े ले लो। ताम्बे की कड़ाही या देगची में ३ सेर घी डालकर मन्दी-मन्दी आग लगाओ। जब घी आ जाय, तब पेठे के टुकड़े डाल दो और खूब मन्दी-मन्दी आग लगने दो।

पीपल, पीपलामूल, चीता, गजपीपल, धनिया, बायविडंग, सोंठ, कालीमिर्च, हरड़, बहेड़ा, आमला, अजमोद, इन्द्रजौ, ज़ीरा, सेंधा-नोन—इन सब को चार-चार तोले लो। निशोथ ३२ तोले, तिल का तेल ३२ तोले, गुड़ अढ़ाई सेर और आमलोंका स्वरस ३ सेर ले लो। सबको मिलाकर क़ायदे से पकालो। जब तक कलछी से न लगने लगे, मन्दी-मन्दी आग से पकाते जाओ। जब कलछी के लगने लगें, उतार लो। इसका नाम "कुष्माण्ड कल्याण गुड़" है।

सेवन विधि—हर रोज़ अग्नि का बलाबल विचार कर, गूलर के समान, आमले के समान, अथवा बेर के समान यह "गुड़" सेवन करना चाहिये। यह गुड़ सब तरह के ग्रहणी रोग, कोढ़, बवासीर, भगन्दर, ज्वर, अफारा, हृदय-रोग, वायुगोला, उदर-रोग, विशूचिका, कामला, पीलिया, बीस प्रकार के प्रमेह, वातरक्त, विसर्प, दाद, राज-यक्ष्मा, हलीमक, वातपित्त और समस्त कफ के रोगों को दूर करता है। रोगक्षीण, आयुक्षीण और स्त्री-प्रसङ्ग से क्षीण पुरुषों के लिये यह गुड़ परम हितकारी है तथा बाँझ स्त्री को पुत्र देने वाला, वीर्य पैदा करने वाला, बलकारक, पुष्टिकारक और अवस्था को स्थापन करने वाला है।

ग्रहणी कपाट रस ।

(४०) रूपे की भस्म, मोती, सुवर्ण-भस्म और लोहा-भस्म—इन चारोंको एक-एक भाग लो। शुद्ध गन्धक २ भाग और शुद्ध पारा ३ भाग लो। पीछे इन सबको खरल में डालकर खरल करो। इसके बाद, खरल किये मसाले को कैथे के रस में घोटकर, हिरन के सींग में दाब-दाब कर भर दो। इसके बाद, उस सींग पर कपड़-मिट्टी करके, आरने कण्डों की मध्यम अग्नि दो; जब शीतल हो जाय, निकाल लो।

उसे फिर खरल में डालकर खिरेंटी के रस की ७ पुट दो। इसके बाद ओंगे के स्वरस में ३ भावना दो। उसके बाद लोध, अतीस, नागरमोथा, धाय के फूल, इन्द्रजौ और गिलोय के स्वरस में तीन-तीन भावना दो। जिस दवा का स्वरस न निकले, उसका काढ़ा बनाकर, उस में इस रसको घोटो। जब सूखने पर आवे, तब एक-एक माशे की गोलियाँ बना लो। इसी को "ग्रहणी कपाट रस" कहते हैं।

इसकी १ गोली काली मिर्च के चूर्णके साथ "शहद" में मिला कर सेवन करने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी रोग नाश होते तथा अग्नि दीप्त होती है।

ग्रहणी वज्र कपाट रस।

(४१) पारे की भस्म, अभ्रक-भस्म, शुद्ध गन्धक, जवाखार, शुद्ध सुहागा, अरनीकी जड़ और बच—इन सातों को बराबर-बराबर लेकर पीस लो। पीछे एक दिन अरनी के रस में खरल करो, एक दिन जँभीरी नीबू के रस में खरल करो और तीसरे दिन भाँगरे के रस में खरल करके गोला बनालो।

उस गोलेको सुखा कर, लोहे की कड़ाही में रखकर, ऊपर से

मिट्टीका सरावा रख कर ढक दो और कड़ाही तथा सरावे की सन्धियों को कपड़-मिट्टी से बन्द कर दो। पीछे कड़ाही चूल्हे पर रखकर, नीचे मन्दी-मन्दी आग चार घड़ी या १ घण्टा ३६ मिनट तक लगाओ; पीछे चूल्हे से कड़ाही को उतार लो। जब कड़ाही शीतल हो जाय, गोलेको निकाल लो। इसके बाद गोले के वज़न के बराबर अतीस का चूर्ण और मोचरस का चूर्ण मिला दो और खरल में डाल कर, कैथे के रस की सात पुट और भाँग के रस की सात पुट दो। इसके बाद उसे धाय के फूलों के रस में घोटो। उसके बाद इन्द्रजौ के रस में, उसके बाद नागरमोथा के रस में, उसके बाद लोध के रस में, उसके बाद वेलफल के रस में और शेष में गिलोय के रस में घोटो। जब लगुदी ज़रा गीली रहे, तब चार-चार माशे की गोलियाँ बना लो। इसको "ग्रहणी वज्र कपाट रस" कहते हैं।

जिसे संग्रहणी रोग हो, उसे यह रस मठ्ठे के साथ देना चाहिये और उसके ऊपर तत्काल चीता, सौंठ, विडनोन, वेलगिरी और सेंधानोन—इन पाँचोंका चूर्ण गरम जलके साथ खिलाना चाहिये। इससे सब तरह की संग्रहणी आराम हो जाती है।

संग्रहणी कपाट रस

(४२) शुद्ध गंधक, शुद्ध पारा, अभ्रक-भस्म, शुद्ध सिंगरफ, सार, जायफल, वेलगिरी, मोचरस, सिंहीमुहरा, अतीस, सोंठ, कालीमिर्च, पीपल, धाय के फूल, घी में सिकी हरड़, कैथ, अजमोद, चीते की छाल, अनारदाना, इन्द्रजौ, शुद्ध धतूरे के बीज, गजपीपल और अफीम—इन सब को समान-समान ले लो। पहले गंधक और पारे को घोट कर कज्जली बनालो। इसके बाद उसमें अभ्रकभस्म, सिंगरफ और सार मिला कर घोटो। उधर शेष दवाओं को कूट पीस कर चूर्ण बनालो। चूर्ण तैयार होने पर, खरल की दवाओं में चूर्ण को मिलाकर, पोस्त के

डोडों का रस ऊपर से डाल-डाल कर घोटो ; जब घुट जाय, काली-मिर्च के समान गोलियाँ बना, छायामें सुखालो।

रोगनाश—इस रस से अतिसार और संग्रहणी रोग नाश होते हैं। अनुपान दही या माठा अथवा बेल का अर्क। मात्रा—४ चाँवल से १ रत्ती तक। समय—सवेरे शाम।

कपित्थाष्ट चूर्ण।

(४३) कैथा का गूदा ८ तोले, मिश्री ६ तोले, अनार दाना ३ तोले, इमली ३ तोले, बेलगिरी ३ तोले, धाय के फूल ३ तोले, अजमोद ३ तोले, पीपल ३ तोले, काली मिर्च १ तोले, ज़ीरा १ तोले, धनिया १ तोले, पीपरामूल १ तोले, नेत्रवाला १ तोले, सांभर नोन १ तोले, अजवायन १ तोले, दालचीनी १ तोले, इलायची के दाने १ तोले, तेजपात १ तोले, नागकेशर १ तोले, चीते की छाल १ तोले और सोंठ १ तोले,—इन सबको कूट-पीस कर चूर्ण कर लेना चाहिये। इसका नाम "कपित्थाष्ट चूर्ण" है। इसके सेवन से कण्ठ के रोग, अतिसार, संग्रहणी, क्षय और गुल्म आराम होते हैं।

बृहत् दाड़िमष्टक।

(४४) अनारदाना ३२ तोले, मिश्री ३२ तोले, पीपल ४ तोले, पीपरामूल ४ तोले, अजमोद ४ तोले, काली मिर्च ४ तोले, धनिया ४ तोले, ज़ीरा ४ तोले, सोंठ ४ तोले, बंसलोचन १ तोले, दालचीनी ८ माशे, तेजपात ८ माशे, इलायची के बीज ८ माशे और नागकेशर ८ माशे—इन सबको कूट-पीस कर चूर्ण कर लेना चाहिये। इसको "बृहत् दाड़िमष्टक" कहते हैं। इसके सेवन करने से अतिसार, क्षय, गुल्म, संग्रहणी, कण्ठरोग, मन्दाग्नि, पीनस और खाँसी—ये रोग आराम हो जाते हैं।

चपलावटी।

(४५) शोधा हुआ कुचला ३माशे और लौंग १माशे—इनको खरल में डालकर, अदरख के रस में घोटकर, चने-बराबर गोलियाँ बना लो। हर बार एक गोली शहद में मिला कर चटाने से संग्रहणी, आम मरोड़ी के दस्त और शीत-ज्वर नाश होते हैं। परीक्षित है।

लवणभास्कर चूर्ण।

(४६) समन्दर नोन ८ तोले, सञ्चर नोन ५ तोले, विड़ नोन २ तोले, सेंधा नोन २ तोले, धनिया २ तोले, पीपल २ तोले, पीपरा-मूल २ तोले, काला ज़ीरा २ तोले, तेजपात २ तोले, नागकेशर २ तोले, तालीसपत्र २ तोले, अमलबेत २ तोले, कालीमिर्च १ तोले, ज़ीरा १ तोले, सोंठ १ तोले, अनारदाना सूखा ४ तोले, दालचीनी ६ माशे और इलायची के बीज ६ माशे—इन को कूट-पीसकर चूर्ण कर लो।

इसका नाम "लवण भास्कर चूर्ण" है। इसकी मात्रा ४ माशे की है। इसके सेवन से वातकफ से होने वाला गोला, तिल्ली, उदर-रोग, बवासीर, संग्रहणी, मन्दाग्नि, दस्तक़ब्ज़, सूजन, शूल, श्वास, खाँसी, आम वात प्रभृति रोग आराम होते हैं। इस से अग्नि तेज़ होकर, भोजन पचता है। यह चूर्ण दही के पानी, दही की मलाई, माठा और शराब वगैरः से सेवन किया जाता है। गायकी छाछ के साथ लेने अथवा सौंफ के अर्क के साथ लेने से संग्रहणी और मन्दाग्नि रोग आराम होते हैं। गरम जल के साथ लेने से दस्त साफ होता है।

हंस पोटली रस।

(४७) कौड़ीकी भस्म, सौंठ, मिर्च, पीपर, भुना सुहागा, शुद्ध सींगिया विष, शुद्ध गन्धक और शुद्ध पारा—इन सबकी बराबर-बरा-

बर लेकर, नीबू के रस की भावना देकर, एक-एक माशेकी गोलियाँ बना लो। इन में से एक गोली काली मिर्च और घी के साथ सेवन करने से संग्रहणी रोग आराम होता है। पथ्य—माठा और भात। इसका नाम "हंस पोटली रस" है।

नोट—मात्रा बलाबल देखकर देनी चाहिये। हमारी रायमें रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ ठीक होंगी। हमने यह रस "रसेन्द्र चिन्तामणि" से लिया है। उस में बड़ी तारीफ लिखी है, हमारा आज़माया नहीं है। सींगिया और पारा वगेरःके शोधनेकी तरकीबें "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भाग के अन्तमें लिखी हैं।

शम्भुनाथ रस।

(४८) शुद्ध हरताल, शुद्ध मैनसिल, शुद्ध हिंगलू, शुद्ध संखिया, शुद्ध सुहागा, शुद्ध बच्छनाग और फिटकरी—ये सब एक एक माशे; शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और शुद्ध अफीम ये सब सात-सात माशे लो।

जो दवाएँ कूटने-पीसने लायक़ हों, उन्हें कूट-पीस लो। फिर गन्धक और पारे की कजली करके, यानी खरल में घोट कर अलग रख लो। इसके बाद सब को एक जगह कर लो और खरल में डाल कर, सात दिन भाँग के रस में घोटो। फिर सात दिन निगुड़ के रस में, फिर सात दिन नीम के रस में और फिर सात दिन धतूरे के रस में घोटो। इस तरह २८ दिन तक घुटाई हो जाने पर एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

पुरानी संग्रहणी में बारम्बार ज्वर चढ़ आता है और बहुत ही भयङ्कर संग्रहणी में तो कभी ज्वर उतरता ही नहीं। ऐसी दशा में इस "शम्भुनाथ रस" की गोलियाँ, अदरख के रस में, लेने से ज्वर बहुत जल्दी हलका हो जाता है तथा दस्त भी बन्द हो जाते हैं।

कफहरिहर रस।

(४९) कॉफी, चाय, सोंठ, काली मिर्च, पीपर, कोको, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, खाने के काम में आने वाला पीला रङ्ग और अफीम—

सबको बराबर-बराबर लेकर,कूट-पीसकर छान लो और शीशीमें रख दो। इसके उचित अनुपानसे देनेसे खाँसी, कफ,दम, शीत ज्वर, अति-सार, संग्रहणी और हृद्रोग आराम होते हैं। मात्रा २ रत्तीकी है।

दुग्ध बटी।

(५०) अफीम १॥ माशे,शुद्ध बच्छनाग विष १॥ माशे,लोहभस्म ५, रत्ती और अभ्रक भस्म ६ रत्ती—सबको एकत्र दूधमें घोट कर, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली दूध के साथ सेवन करनेसे सूजन सहित पुरानी संग्रहणी, विषम ज्वर,अनेक तरह की सूजन, मन्दाग्नि और पांडु रोग आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

सूचना—जब तक ये गोलियाँ सेवन करो, नमक और जल कृतई छोड़ दो। खाने और पीने के लिये केवल दूध को काम में लाओ। प्यास लगनेपर भी दूध ही पीओ। जब तक इस तरह पथ्य पर चल सको, अच्छी बात है। खूब लाभ होगा।

अहिफेनादि बटी।

(५१) अफीम २ माशे, जायफल १ माशे, शुद्ध सुहागा १ माशे, अभ्रक भस्म १ माशे और शुद्ध धतूरेके बीज १ माशे—इन सबको खरल में डालकर, ऊपर से प्रसारिणी के पत्तोंका रस दे देकर घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन से आमातिसार, रक्तातिसार और संग्रहणी में अवश्य लाभ होता है। प्रत्येक बार १ गोली शहद में मिलाकर देनी चाहिये। परीक्षित है।

नोट—गर्भवती को अफीम या अफीम-मिली दवा कभी न देनी चाहिये।

दूसरी दुग्धवटी।
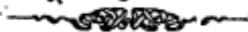
शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठा विष, ताम्रभस्म, अभ्रकभस्म,

लौहभस्म, शुद्ध हरताल, शुद्ध सिंगरफ, सेमर का खार और अफीम —इन सब को एक-एक माशे लेकर, खरल में डाल, दूध से घोटो और आधी-आधी रत्ती की गोलियाँ बना लो।

सेवन विधि—इन गोलियोंके सेवन करनेसे सूजनवाली संग्रहणी में निश्चय ही फायदा होता है। विशेष कर, पुरानी संग्रहणी में इन गोलियों से बहुत लाभ होते देखा है। पर इन गोलियोंके सेवन करने में इस बात का पूरा विचार रखना चाहिये, कि रोगी नमक और पानी भूल कर भी न पावे। प्यास लगे तोभी पानी की जगह दूध देना चाहिये। अगर दूध से रोगीका जी जब जाय, तो दूध और भात देना चाहिये। अगर पानी बिना रोगी रहे ही नहीं, हज़ार बार कहने पर भी पानी ही पानी चिल्लावे, तो गरम पानी देना चाहिये; मगर बहुत थोड़ा।

(५२) सज्जीखार, जवाखार, खारीनोन, कालानोन, सैंधानोन, सोंठ मिर्च, पीपल, चव्य, अजमोद, चीता, पीपलामूल, भुनीहींग, ज़ीरा, और सौंफ—इन १५ दवाओं को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण बना लेना चाहिये। इस चूर्ण को निवाये जल, अथवा झड़बेरी के काढ़े के साथ अथवा माठे के साथ सेवन करने से हृदयरोग, भूख न लगना, वायुगोला, बवासीर और संग्रहणी—ये रोग आराम हो जाते हैं। औरदवाओंसे यह दवा उत्तम है। परीक्षित है।

(५३) बादाम की गिरी, नारियल की गिरी, छुहारा, जायफल चरस और अफीम—ये सब बराबर-बराबर ६।६ माशे ले लो। चरस को घी में भूनकर, शेष सब के साथ मिलाकर, कूट-पीसकर, रत्ती-रत्ती भरकी गोलियाँ बना लो। प्रत्येक दिन एक गोली चाँवलों के पानी के साथ खिलाने से संग्रहणी आराम हो जाती है। सात दिन तक यही गोलियाँ खिलानी चाहियें। खाने को पुराने चाँवल का भात वगैरः हल्का भोजन देना चाहिये। एक हकीम साहब इसे अपना आज़माया हुआ नुसख़ा बताते हैं।

(५४) कपूर, शोधा हुआ सिंगरफ, अफीम, नागरमोथा, इन्द्रजौ और जायफल—इन को एक-एक माशे लेकर, अदरख के रस में घोटकर, मटर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों से सब तरह की संग्रहणी और अतिसार तथा ज्वरातिसार नाश होते हैं। परीक्षित है।

(५५) शुद्ध सुहागा २ माशे, शुद्ध सिंगरफ २ माशे और अफीम ४ माशे—इन को खरल में डालकर, जल के साथ घोटो और काली मिर्च के समान गोलियाँ बना लो। अगर रात को दस्त ज़ियादा होते हों, तो शहद के साथ एक-एक गोली रोगीको खिलाओ। अगर दिन में ज़ियादा दस्त होते हों, तो नीबू के रस के साथ गोली खिलाओ। इन गोलियोंके कुछ दिन सेवन करने से सब तरहकी संग्रहणी और वायु शान्त होती है।

(५६) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, नीमका गोंद, शुद्ध भाँग, ब्रह्मडण्डी—ऊँटकटारी के पत्ते, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक और अफीम—ये सब चीज़ें ६।६ माशे ले लो और कूट-पीस कर छान लो। इसके बाद, दो रत्ती फी तोले के हिसाब से, नौ रत्ती कस्तूरी मिला कर, उसे शीशी में रख दो। यह चूर्ण सब तरहकी सरदी और दस्तों की बीमारी में अच्छा है। मात्रा १ से २ रत्ती तक।

ग़रीबी नुसखे।

(५७) काली मिर्च १ तोला, चीते की जड़ की छाल १ तोला और सेंधा नोन एक तोला—इन तीनों को कूट पीस छानकर चूर्ण बना लो। इस में से ३ माशे चूर्ण माठामें डाल कर पीने से संग्रहणी, मन्दाग्नि, बवासीर, गुल्म और उदर-रोगों में लाभ होता है। परीक्षित है।

(५८) दशमूल और सोंठ का काढ़ा बनाकर पीने से संग्रहणी,

सूजन, अतिसार, खाँसी, अरुचि, कण्ठ-रोग और हृदय रोग आराम होते हैं। सूजनवाली पुरानी संग्रहणी में परीक्षित है।

(५८) हींग, जहरमोहरा-खताई, मिर्च और अफीम—सब चीज़ें बराबर-बराबर ले, खरलमें डाल, घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली नीबू के रस के साथ सेवन करने से संग्रहणी और सब तरह के उदर रोग नाश होते हैं।

(६०) शीतल-चीनी १ तोला, बड़ी इलायची १ तोला और सोना गेरू १ तोला—इन सब को कपास के पत्तों के रस में घोटकर, बेरके बराबर गोलियाँ बना लो। सवेरे शाम एक-एक गोली, जलके साथ लेने से संग्रहणी आराम होती है। परीक्षित है।

(६१) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, लौंग, आक की जड़ की छाल और अफीम—इन सब को कूट पीस छान कर शीशी में रख दो। इसके सेवन से खाँसी, दम, कफ, अतिसार, संग्रहणी और कफ-पित्त के रोगों में बड़ा लाभ होता है। मात्रा १ से २ रत्ती तक।

(६२) कच्चे बेल का गूदा और सोंठ का चूर्ण बराबर-बराबर लेकर और उनमें दूना पुराना गुड़ मिलाकर, उनको लुगदी सी कर लेनी चाहिये। इसको बलाबल अनुसार सेवन करके, ऊपर से माठा भोजन करनेसे, अत्यन्त उग्र संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

(६३) बेलगिरी, नागरमोथा, इन्द्रजौ, सुगन्धवाला और मोचरस —इनको बकरी के दूध में डालकर, दूध को पकाकर, तीन दिन तक, पीने से अत्यन्त बढ़ी हुई, बहुत पुरानी, आम और रुधिर—खून वाली असाध्य संग्रहणी भी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—चार तोले सब दवायें लेकर, ३२ तोले दूध में डाल देनी चाहियें और दूध से चौगुना १२८ तोले (१ सेर १० छटाँक) जल भी उसमें मिला देना चाहिये। पीछे मन्दाग्नि से दूध को पकाना चाहिये। जब सब पानी जल जाय, केवल दूध मात्र रह जाय, उतार कर छान लेना चाहिये। पीछे यही दूध पीना चाहिये

(६४) चीता, चव्य, बेलगिरी और सोंठ—इन चारों को बराबर-

बराबर लेकर चूर्ण बना लो। इस चूर्ण को खाने से दुखदायी संग्रहणी भी आराम हो जाती है।

(६५) कालानोन, चीते की छाल और कालीमिर्च—इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को माठे के साथ सेवन करने से बवासीर, संग्रहणी, वायुगोला, उदर-रोग, तिल्ली और भूख का न लगना—ये सब नाश हो जाते हैं।

नोट—यह चूर्ण लगातार सेवन करने से उक्त रोगों में बड़ा लाभ दिखाता है। जल्दबाज़ी न करनी चाहिये। कालेनोनके स्थान में सांभरनोन भी लेते हैं।

(६६) तीन माशे आम के फूल, महीन पीस कर, बासी जल के साथ पीने से संग्रहणी जाती है।

(६७) चार या छै माशे राल, छै माशे गुड़ या चीनीमें मिलाकर, खाने और ऊपर से बकरी का दूध पीने से संग्रहणी नाश होती है।

(६८) बबूलका गोंद नौ माशे, आधपाव शीतल जलके साथ, ३ दिन, खानेसे संग्रहणी जाती है।

नोट—अगर दस्त जियादा होते हों, तो इसी गोंदकी १ खूराकमें ३ माशे "ख़स-ख़स" मिला कर खाने से संग्रहणी फौरन चली जाती है।

(६९) खजूरके फल ६ माशे, गायके दो तोले दही के साथ खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७०) ६ माशे कतीरा रात को आधपाव जल में भिगो दो और सवेरे मल कर, उसमें एक तोला शक्कर मिलाकर, खाजाओ। इससे भी संग्रहणी चली जाती है।

(७१) लिहसौढ़े की तीन माशे नर्म-नर्म पत्तियाँ पीस कर खाने से संग्रहणी जाती है।

(७२) सफेद ज़ीरा आधा तोला, गाय के दो तोले दहीमें मिला कर, खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७३) तीन दाने चिकनी सुपारीकी राख, दो तोला गायके दही में, खाने से संग्रहणी चली जाती है।

(७४) काली मूसली ६ माशे, खूब महीन पीसकर, आध पाव गाय की छाछ के साथ पीने से संग्रहणी जाती रहती है।

(७५) दो तोले मसूर १५ तोले जल में भिगो दो और पीछे काढ़ा बनाओ। जब तिहाई जल रह जाय, उसमें ६ माशे बेलगिरी मिला दो। जब वह गल जाय, उतार कर छान लो और शीतल करके पीलो। इससे संग्रहणी, पीलिया, कामला, आम, और कोख का दर्द ये सब आराम हो जाते हैं।

(७६) अफीम और केशर "शहद" में घिसकर एक चाँवल भर देने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी नाश हो जाते हैं।

(७७) दो माशे आँगको भूनकर, ३ माशे शहतके साथ चाटनेसे संग्रहणी नाश हो जाती है।

(७८) माठे में सोंठ और कालानोन डालकर पीने से संग्रहणी नाश हो जाती है।

नोट—ग्रहणी रोगमें, मल न उतरने की हालत में, कालानोन और अजवायन बराबर-बराबर लेकर और पीसकर, तीन-तीन माशे फाँक कर, गरम जल पीनेसे दस्त साफ होता है। अथवा सेंधानोन गाय के घी में मिला कर सेवन करने से भी मल पतला होकर निकल जाता है।

(७९) अफीम १ माशे और सीपका चूना १ माशे,—दोनोंको पानी में पीस कर, मसूरके दाने-समान गोलियाँ बनालो। सवेरे शाम, एक-एक गोली खाने से सब तरह के अतिसार और संग्रहणी रोग आराम हो जाते हैं।

(८०) काली मूसली का चूर्ण छाछ में अथवा चाँवलोंके धोवनमें मिलाकर पीनेसे संग्रहणी नाश हो जाती है; पर ऊपरसे छाछ मिला कर भात खाना ज़रूरी है। परीक्षित है।

—*—

त्याज्य संग्रहणी रोगी ।

वृद्धस्य शोफयुक्तस्य गतवह्निबलस्यच ।
ग्रहण्यार्तस्य भिषजा क्रिया त्याज्या यशोर्थिना ॥

यश चाहने वाला वैद्य ऐसे संग्रहणीवालेका इलाज न करे, जो बूढ़ा हो, जिसके सूजन आरही हो और जिसकी पाचन-शक्ति नष्ट हो गई हो ।

संग्रहणी और अतिसार में भेद ।

वङ्गसेन प्रभृति अनेक ग्रन्थों के अनुवादक "वैद्य"-सम्पादक, पण्डितवर श्रीमान् शङ्करलाल हरिशङ्करजी लिखते हैं :—

"अतिसार शरीरकी जलीय धातुके क्षुब्ध होनेसे उत्पन्न होता है ; पर संग्रहणी शरीर की ग्रहणी कलाके दूषित होनेसे उत्पन्न होती है । यद्यपि अतिसार और संग्रहणी दोनों ही अन्त्र-सम्बन्धी—आँतों के रोग हैं ; किन्तु संग्रहणीमें ग्रहणी कलाके दूषित होनेसे अर्थात् ग्रहणी नामक आँतकी ग्राहिणी शक्तिके ह्रास होनेसे परिपाक-यन्त्र ख़राब हो जाता है ; लेकिन अतिसार में सम्पूर्ण देह की जलीय धातु के क्षुभित होने से परिपाक-यन्त्रकी क्रिया ख़राब होती है—यन्त्र में कुछ विकृति नहीं होती। इसके सिवाय, अतिसार में पतला मल उतरता है ; किन्तु संग्रहणी में ऐसा कोई नियम नहीं है । संग्रहणीमें कभी गाढ़ा, कभी बँधा हुआ और कभी पतला मल उतरता है ।

आमातिसारमें पेटमें शूल, ऐंठनी, शरीर में भारीपन और बेचैनी आदि जो लक्षण होते हैं,वे संग्रहणीमें नहीं होते। संग्रहणी में भी पेट और आँतों में पीड़ा होती है ; परन्तु आमातिसार की अपेक्षा बहुत कम । आमातिसार में क्षुधा—भूख एकदम कम हो जाती है, पर संग्रहणी में ऐसा नहीं होता। संग्रहणी में कभी-कभी अत्यन्त भूख

लगती है और सब प्रकार के रसों को सेवन करने की इच्छा बलवती होती है। आमातिसार में अनेक प्रकार की धातुएँ अपक्व—आमयुक्त —मल के रूप में निकलती हैं; परन्तु संग्रहणी में केवल अपक्व या पक्व मल ही निकलता है। इस के सिवा, संग्रहणी में आमातिसारकी समान मलमें विविध वर्णता,आम गन्धि आदि लक्षण भी नहीं होते।

नोट—अतिसार, आमातिसार और संग्रहणी एवं प्रवाहिका और आमातिसार तथा रक्तार्श और रक्तातिसार प्रभृति इन कई रोगोंमें अन्तर ज़रूर है,पर वह अन्तर बड़ी बारीक नज़रसे जाना जाता है; इसीसे हमने इनका अन्तर खूब खुलासा करके लिख दिया है। प्रवाहिका और आमातिसार का अन्तर उधर अतिसार-वर्णन के अन्तिम पृष्ठमें लिख आये हैं। संग्रहणी और आमातिसारका अन्तर ऊपर लिखकर दिखाया है। वैद्यक-सीखने वालोंको यह अन्तर खूब अच्छी तरह समझ-समझकर हृदयङ्गम कर लेना चाहिये; जिस से रोग-परीक्षा या मर्ज़ की तशख़ीश में भूल न हो। वैद्य का पहला और मुख्य काम रोग-परीक्षा ही है। रोग-परीक्षा ठीक होनेसे ही चिकित्सामें सफलता हो सकती है। इन भेदों को तथा औरभी बहुतसी जानने योग्य बातों को आगे हम "प्रश्नोत्तर" के रूपमें भी दिखलाते हैं।

परमावश्यक प्रश्नोत्तर।

प्र० (१) संग्रहणी और अतिसार किस तरह होते हैं?

उ०—संग्रहणी ग्रहणी नामक आँत के ख़राब होने से होती है; पर अतिसार शरीर की जलीय धातु के क्षुब्ध होने से होता है।

प्र० (२) क्या अतिसार और संग्रहणी दोनोंही आँतोंके रोग नहीं हैं?

उ०—बेशक, दोनों ही आँतों के रोग हैं।

प्र० (३) अगर दोनों ही आँतों के रोग हैं, तो भेद क्या है?

उ०—संग्रहणी में परिपाक-यन्त्र ख़राब हो जाता है; पर अतिसार में परिपाक-यन्त्र ख़राब नहीं होता, उसकी क्रिया मात्र ख़राब होती है।

प्र० (४) संग्रहणी और अतिसार के दस्तों में क्या भेद है?

उ०—अतिसार में पतला मल उतरता है ; किन्तु संग्रहणी में ऐसा कोई नियम नहीं है। संग्रहणी में कभी गाढ़ा, कभी बँधा हुआ और कभी पतला मल उतरता है। कभी दस्त बन्द हो जाते हैं और कभी फिर होने लगते हैं।

प्र० (५) संग्रहणी और अतिसार के लक्षणों में क्या भेद है ?

उ०—अतिसारमें पेटमें दर्द, मरोड़ी, ऐंठनी, शरीरमें भारीपन और बेचैनी आदि लक्षण होते हैं ; संग्रहणी में भी पेट और आँतों में पीड़ा होती है, परन्तु अतिसार की अपेक्षा बहुत कम।

प्र० (६) अतिसार में तो भूख एकदम से मारी जाती है, क्या संग्रहणीमें भी भूख नहीं लगती ?

उ०—आमातिसारमें भूख बन्द हो जाती है, खानेका नाम भी बुरा लगता है ; पर संग्रहणी में कभी-कभी बड़ी भूख लगती है और रोगी तरह-तरहके मीठे खट्टे आदि रस खाना चाहता है।

प्र० (७) संग्रहणी और आमातिसार के मल में क्या भेद है ?

उ०—आमातिसारमें अनेक प्रकारकी धातुयें अपक्व (आमयुक्त) मल-रूप में निकलती हैं ; परन्तु संग्रहणी में केवल अपक्व या पक्व मल ही निकलता है। इस के सिवा, संग्रहणी में आमातिसार की तरह मल में विविध रङ्ग और कच्ची दुर्गन्धि आदि लक्षण नहीं होते।

प्र० (८) आमातिसार और प्रवाहिका के मल में क्या अन्तर है ?

उ०—आमातिसारमें अनेक प्रकारके पतले पदार्थ कच्चे मलके साथ निकलते हैं ; किन्तु प्रवाहिका में केवल कफ या खून-मिला कफ निकलता है।

प्र० (९) प्रवाहिका और संग्रहणीको अङ्गरेज़ीमें क्या कहते हैं ?

उ०—प्रवाहिका को डिसेन्ट्री और संग्रहणी को क्रॉनिक डिसेन्ट्री कहते हैं।

प्र० (१०) वैद्य को कैसे संग्रहणी-रोगीका इलाज न करना चाहिये ?

उ०—बूढ़े, पाचन-शक्ति नष्ट हो जानेवाले और सूजन वाले संग्रहणी-रोगी का इलाज करने से वैद्य की बदनामी होती हैं।

प्र० (११) क्या वृद्ध मनुष्यकी संग्रहणी आराम नहीं होती?

उ०—बेशक, बूढ़ेकी संग्रहणी आराम नहीं होती। यदि हो भी जाती है, तो जड़ से आराम नहीं होती। कहा है:—

॥ वृद्धस्य नूनं ग्रहणीविकारो हन्त तनूं नो विनिवर्त्ततेच॥

बूढ़े का ग्रहणी रोग हरगिज़ नहीं जाता। यदि दैवयोग से चला भी जाता है, तो निर्मूल नहीं होता।

प्र० (१२) अतिसार आराम होने पर संग्रहणी कैसे हो जाती है?

उ०—अतिसार आराम हो जाने पर भी यदि मन्दाग्नि वाला मनुष्य कुपथ्य सेवन करता है; तो अग्नि, दूषित होकर, ग्रहणी को दूषित कर देती है। ग्रहणी के दूषित होने से संग्रहणी हो जाती है।

प्र० (१३) इस रोग का नाम संग्रहणी क्यों रखा गया है?

उ०—क्योंकि यह ग्रहणी नामक आँत के दूषित होने से होती है।

प्र० (१४) क्या ग्रहणी रोग और संग्रहणी रोग में कुछ भेद है?

उ०—हाँ, भेद है; जब ग्रहणी आम वात का संग्रह करती हैं, तब ग्रहणी रोग को संग्रह ग्रहणी या संग्रहणी कहते हैं।

प्र० (१५) ग्रहणी रोग भारी है या संग्रहणी?

उ०—ग्रहणी से संग्रहणी भयङ्कर है।

प्र० (१६) क्या संग्रहणी में नित्य एक नियम से दस्त नहीं होते?

उ०—नहीं; संग्रहणी में पन्द्रह दिन में, महीने भर में, दस दिन में अथवा नित्य पतला, गाढ़ा, थोड़ा, चिकना, कच्चा, आवाज़ और थोड़ी वेदना के साथ मल उतरता है।

प्र० (१७) संग्रहणी दिन में कुपित रहती और रात को शान्त रहती है, इसका क्या कारण है?

उ०—संग्रहणी दिन में कुपित रहती और रात में शान्त रहती है, यह व्याधि का प्रभाव है।

प्र० (१८) संग्रहणी के सिवा ग्रहणी रोग का और भी कोई भेद है ?

उ०—हाँ, घटीयन्त्र।

प्र० (१६) घटीयन्त्र नाम क्यों पड़ा ?

उ०—जिस तरह रहँट के घड़े में से पानी निकलते समय "घग-घग" आवाज़ होती है; उसीतरह "घटी-यन्त्र" रोग में, मल उतरते समय, "घग-घग" आवाज़ होती है, इसीसे उस का नाम "घटी-यन्त्र" रखा गया है।

प्र० (१६) क्या घटीयन्त्र रोग असाध्य है ?

उ०—हाँ, घटीयन्त्र असाध्य ग्रहणी रोग है। उसके शरीर में व्याप्त होने पर मृत्यु ही होती है।

प्र० (२०) क्या संग्रहणी में भी अतिसार की तरह सामता और निरामता—कच्चापन और पक्कापन होता है ?

उ०—हाँ, संग्रहणी में भी अतिसार की तरह कच्चेपन और पक्के-पन का ख़याल करना पड़ता है। अतिसार की तरह ही आम को पचाना होता है।

मतलब यह है, कि संग्रहणी रोगकी भी अपक्व अवस्थामें यानी कच्चे रहने की हालतमें मल रोकने वाली दवा न देनी चाहिये। अपक्व अवस्थामें पाचक दवा और पथ्य देना चाहिये। जब आम पच जाय, तब दस्त रोकने वाली दवा देनी चाहिये। आम पचानेके लिये सामान्य चिकित्सामें लिखी "चित्रकादि गुटिका" देना अच्छा है। अथवा धनिया, अतीस, नेत्र-वाला, अजवाइन, नागरमोथा, सौंठ, वरियारा, सरवन, पिथवन और वेलगिरी—इन दस दवाओं का काढ़ा पिलाना चाहिये। इस काढ़ेसे आम पच कर अग्नि तेज़ होती है। अथवा सौंठ, नागरमोथा, इलायची और गिलोय—इन चारों का काढ़ा देना चाहिये। आम पचाने के लिये ये तीनों नुसख़े परीक्षित हैं।

प्र० (२१) ग्रहणी रोग में आम को पचाने के लिये क्या पथ्य देना चाहिये ?

उ०—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, और सोंठ—इनसे बनायी पेया और तक्र देना चाहिये। कैथा, बेलगिरी, खट्टी नोनिया, छाछ और अनार के रस से पकाई यवागू आम को पचाती और गाढ़ा करती है।

प्र० (२२) संग्रहणी रोग में कौन-कौन चीज़ें हितकारी हैं ?

उ०—अग्नि-दीपक पञ्चकोल—पीपल, पीपलमूल, चव्य, चीता और सोंठ—से बना हुआ अन्न पान, छाछ, पेया, यवागू, मण्ड और यूष प्रभृति हलके अन्न संग्रहणी में हितकारक हैं।

प्र० (२३) पेया और यवागू आदि बनाने की विधि कहाँ लिखी है ?

उ०—"चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग में।

प्र० (२४) वातज, पित्तज और कफज संग्रहणी में क्या अन्तर है ?

उ०—(१) बादी की संग्रहणी में बहुत देर में और बड़े कष्ट से पतला, सूखा और कच्चा मल निकलता है (२) पित्त की संग्रहणी में पीला, बहुत ही गर्म और बदबूदार मल निकलता है। (३) कफ की संग्रहणी में चिकना सफेद और कफ-मिला मल उतरता है।

नोट—वातज संग्रहणी में पहिले मल और पीछे आँव निकलता है। कभी-कभी निरन्तर आँव-मिला मल भी निकलता है।

प्र० (२५) वातज, पित्तज और कफज संग्रहणी रोग में कौन-कौन से नुसख़े शीघ्र फलप्रद हैं ?

उ०—वातज में पृष्ठ १२६ का अन्तिम नं० १० शुण्ठादि क्वाथ अच्छा है। पित्तज में पृष्ठ १२६ के नं ११ और १३ रसाञ्जन चूर्ण और तिक्तादि क्वाथ अच्छे हैं। कफजमें पृष्ठ १२८ का नं० २० पथ्यादि चूर्ण अच्छा है।

प्र० (२६) आमतौर पर भयानक संग्रहणी में कौन-कौन से नुसख़े अच्छे हैं ?

उ०—एक ही दवा सभी रोगियोंको आराम नहीं कर सकती ; चाहे वह कैसी ही अच्छी क्यों न हो। फिर भी, संग्रहणीरोग में जातीफलादि चूर्ण, कनक रस, लाई चूर्ण, ग्रहणीकपाट रस, ग्रहणी वज्रकपाट रस, हंस पोटली रस और लवण भास्कर चूर्ण आदि उत्तम दवाएँ हैं। हमने अनेक रोगी "लवण भास्कर चूर्ण"को छाछके साथ सेवन करा कर और जलके स्थानमें केवल सौंफका अर्क पिला कर आराम किये हैं। हम पहिले बहुधा "लवण भास्कर" ही दिया करते हैं। अगर कोई रोगी इस से आराम नहीं होता, तो कनकरसादि देते हैं। अगर सूजन भी होती है, तो बहुधा "दुग्धवटी" या "दशमूल का काढ़ा" सौंठ डालकर देते हैं। अगर पुरानी संग्रहणी होती है, तो "लौहपर्पटी" या "स्वर्णपर्पटी" भी देते हैं। ग़रीबों के लिये हमने ग़रीबी नुसख़े लिखे हैं। ध्यान रक्खें, जितने नुसख़े लिखे हैं, वे सब हमारे आज़मूदा हैं। पर ध्यान रखकर, अतिसार की तरह संग्रहणी में भी, अपक्क आमकी दशामें दस्त बन्द करनेवाली दवा न देनी चाहिये। पहले चित्रकादिवटी प्रभृतिसे आम पचाना चाहिये ; इसके बाद दस्तबन्द करनेवाली दवा देनी चाहिये।

प्र०(२७) संग्रहणी में, पुरानी हो जाने पर, बहुधा बारम्बार ज्वर चढ़ आता है या चढ़ा ही रहता है, उस दशा में कौन सी दवा देनी चाहिये जिस से ज्वर भी हल्का पड़े और दस्त भी बन्द हो जावें ?

उ०—उस हालत में "शम्भुनाथ रसकी गोलियाँ" अदरख के रस में देने से ज्वर हल्का होता और दस्त बन्द हो जाते हैं। परीक्षित है।

प्र० (२८) ग़रीबों के लिये संग्रहणी में सर्वोत्तम दवा क्या है ?

उ०—ग़रीबों के लिये, पहले लिखी हुई विधि से, एकमात्र माठा सेवन कराना सब से अच्छा है। अथवा "सामान्य चिकित्सा" में लिखे ग़रीबी नुसख़े देने चाहियें।

प्र० (२९) क्या माठा पित्त को कुपित नहीं करता ?

उ०—नहीं।

प्र० (३०) पुरानी संग्रहणी में रोगी के लिए क्या देना चाहिये ?

उ०—रोगी का बलाबल, रोग की अवस्था और दोषों का विचार करके "दुग्ध वटी" "स्वर्णपर्पटी या "लौहपर्पटी" देनी चाहियें। ये परीक्षित हैं। पुरानी संग्रहणी में शोथ या सूजन आदि उपद्रव हों, तो "दुग्धवटी" अच्छा काम देती है। अगर ज्वर चढ़ा रहता हो, हलका न पड़ता हो, तो संग्रहणी वाले को "शम्भुनाथ" रस देना अच्छा है। पुरानी ग्रहणी में "चाँगेरी घृत" देना भी अच्छा है। विल्व तैल का सेवन भी हितकारी है।

नोट—"स्वर्ण पर्पटी" प्रभृति बनानेकी विधि अतिसारमें लिखी हैं। वहीं अतिसार के अध्याय में संग्रहणीनाशक और भी नुसखे लिखे हैं। इस बात को न भूलना चाहिये कि, अतिसार नाशक अनेक नुसखे संग्रहणी को भी नाश करते हैं। जैसा रोग हो, जरा विचार कर, वैसी ही दवा देनी चाहिये। अतिसार और अर्श रोग में लिखे हुए घी तैल आदि चिकने पदार्थ ग्रहणी रोग में लिये जा सकते हैं; क्योंकि इन तीनों रोगों के कारण—हेतु समान ही हैं।

नोट—दुग्ध वटी हमने दो तरह की लिखी हैं। दोनों ही अच्छी हैं। पर सूजनका जोर अधिक होनेकी दशा में पिछली अच्छी हैं।

प्र० (३१) अगर ग्रहणी या संग्रहणीमें मल न निकले, तो क्या करना चाहिये?

उ०—कालानोन और अजवायन बराबर-बराबर लेकर, पीस कूटकर छान लो। फिर इस चूर्णमें से तीन-तीन माशे चूर्ण गरम जल के साथ फँकाओ। इस से कड़ा मल निकल जायगा।

प्र० (३२) संग्रहणी रोगी को सब से अच्छा पथ्य क्या है?

उ०—सब तरह के ग्रहणी रोगों में एकमात्र माठा सर्वोत्तम है, इस के सिवा ग्रहणी रोग में कैथ का गूदा, बेल का गूदा और अनार का छिलका-इन सबको दो-दो तोले लेकर और अन्दाज़से दहीका माठा लेकर, यवागू बनाकर खिलाना भी अच्छा पथ्य है।

प्र० (३३) क्या अतिसार और संग्रहणी में कम जल पीना अच्छा है?

उ०—बेशक; अतिसार, संग्रहणी और मन्दाग्नि एवं सूजन प्रभृति

रोगों में कम जल पीना अच्छा है। बहुत जल पीने से ये रोग निश्चय ही बढ़ते हैं।

प्र० (३४) क्या अतिसार और संग्रहणीमें शीतल जल भी मना है ?

उ०—हाँ; संग्रहणी, अतिसार, नवीन ज्वर, अफारा, वायुगोला और जुकाम प्रभृति में शीतल जल देना मना है।

नोट—"चरक" में लिखा है,—अत्यन्त पित्त कोप के दाह, भ्रम, प्रलाप और अतिसारयुक्त ज्वरों में गरम जल न देना चाहिये। इन में गरम जल देने से भ्रम, प्रलाप और अतिसार अत्यन्त बढ़ जाते हैं।

प्र० (३५) अतिसार और संग्रहणी में अगर शीतल जल मना है; तो कैसा जल देना चाहिये ?

उ०—दाह, अतिसार, पित्त, रुधिर-विकार, पीलिया और पित्त के रोगों में जल को औटाकर शीतल कर लेना चाहिये और फिर वही जल, रोगी को, थोड़ा-थोड़ा बहुत प्यास लगने पर देना चाहिये। कहा है—

दशांशं षोडशांशं वा शतांशं वा शृतं जलम्।
सुशीतं पाचनं ग्राही दीपनं दोषनाशनम्॥
यथा यथाशृतं तोयं ज्वरातिसारिणो भवेत्।
दीपनं पाचनं ग्राही आरोग्यं च तथा तथा॥

दसवाँ भाग, सोलहवाँ भाग अथवा सौवाँ भाग रहा औटाया जल, शीतल होने पर, पाचन, ग्राही—क़ाबिज़ और अग्निदीपन करनेवाला होता है। जल जितना ही अधिक औटाया जाता है, उतना ही वह ज्वरातिसार वाले को अधिक गुणों वाला, आरोग्य प्रदान करने वाला, दीपन, पाचन और ग्राही होता है।

दस्त के रोगियों को आरोग्योदक यानी सेर का पाव भर जल भी अच्छा होता है। यह सदैव पथ्य है। यह मलको रोकनेवाला, अग्निको दीपन करनेवाला, पाचक और हलका है तथा अफारा, शूल, बवासीर, सूजन और वायुगोला प्रभृति को नाश करने वाला है।

नोट—हमने जल के सम्बन्ध में यहाँ इतना लिखा दिया है; फिर भी, जल को किस तरह औटाना, उसे ढकन देकर औटाना या बिना ढकन, रात का औटाया सवेरे और सवेरे का औटाया रात को देना या न देना, कहाँ का पानी लेना प्रभृति विषयों को जानने के लिए "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ १११—१२१ तक ज़रूर देख लें।

प्र० (३६) अगर अतिसार-रोगी को कोई भी पथ्य पदार्थ न पचे, तो क्या दिया जाय?

उ०—हारीत कहते हैं:—

क्षीणे ज्वरातिसारे च सामे च विषमज्वरे।
मन्दाग्नौ कफमाश्रित्य पयःफेनं प्रशस्यते॥

क्षीण, ज्वर, अतिसार, आम ज्वर, विषम ज्वर और कफप्रधान मन्दाग्नि में "दुग्ध फेन" या दुग्ध के झाग" देना अच्छा है।

जब जीर्ण ज्वरी या अतिसार रोगीको कुछ भी नहीं पचता, उसकी अग्नि एकदम मन्दी हो जाती है; तब "दूध के झाग" देकर रोगीके प्राण बचाये जाते हैं। संग्रहणी रोगी को तो जितना ही हल्का पथ्य दिया जाय उतना ही अच्छा। दुग्धफेन तैयार करने की विधि 'चिकित्सा चन्द्रोदय' दूसरे भाग के "पथ्यापथ्य-वर्णन" में लिखी है।

अर्श-वर्णन ।

अर्शकी सम्प्राप्ति ।

वातादिक दोष—वात, पित्त और कफ—चमड़ा, मांस और मेदको दूषित करके, गुदा में जो मांस के अंकुर उत्पन्न करते हैं, उनको ही अर्श या बवासीर कहते हैं ।

नोट—गुदा में होनेवाले मस्सों को ही अर्श या बवासीर नहीं कहते हैं । मशहूर तो गुदा की बवासीर ही है ; लेकिन अर्श या मस्से गुदा के सिवा नाक, कान, नाभि और लिङ्ग में भी होते हैं, यह सुश्रुत का मत है । लिङ्ग की सुपारी पर छोटे-छोटे लाल-लाल अङ्कुर से पैदा हो जाते हैं, उनको 'लिङ्गार्श' और नाकमें होने वालों को "नासार्श" कहते हैं । कायचिकित्सक गुदा में होने वाले मस्सों को ही बवासीर कहते हैं ; दूसरों को वे अधिमांस कहते हैं ; क्योंकि नाक और लिङ्ग प्रभृति में जो अर्श होती है, उसमें पूर्व रूप के लक्षण नहीं मिलते ।

अर्श या बवासीर का स्थान ।

ऊपर लिख आये हैं कि, गुदा में जो अङ्कुर या मस्से होते हैं, उन्हीं को अर्श या बवासीर कहते हैं । ये मस्से गुदा की प्रवाहिणी, सर्जनी और ग्राहिणी या सम्वरणी नाम की तीनों वलियों में होते हैं ।

जो गुदा के बाहरी भाग में होते हैं, उनको बाह्यार्श और जो भीतरी भाग में होते हैं, उनको आभ्यन्तरार्श कहते हैं। भीतरी अर्श से बाहर की अर्श सुखसाध्य है।

नोट—मनुष्य की गुदा में तीन आँटे होते हैं। उन्हीं को संस्कृत में आवर्त्त या वलि कहते हैं। एक आँटा ऊपर, दूसरा नीचे और तीसरा बीच में होता है। ऊपर के आँटे को "प्रवाहिणी" कहते हैं, उसका काम मल और हवाको बाहर निकालना है। बीच के आँटे या वलि का नाम सर्जनी है। उसका काम मल और पवन को बाहर पटक देना है। तीसरे आँटे का नाम ग्राहिणी या सम्वरणी है। उसका काम, मल और हवाको बाहर निकाल कर, गुदा को ज्यों की त्यों कर देना है। पहली और दूसरी वलियों का प्रमाण डेढ़-डेढ़ अङ्गुल है, और तीसरी ग्राहिणी वलिका प्रमाण १ अङ्गुल है। बाकी आधे अङ्गुल में गुदा-द्वारका जो हिस्सा है, उसे गुदा का ओठ कहते हैं। इन तीनों आँटों में ही अर्श या बवासीर अथवा मस्से होते हैं।

आयुर्वेदानुसार अर्श के भेद।

शास्त्रमें छै प्रकार की अर्श या बवासीर लिखी हैं :—

(१) वातज। (२) पित्तज।
(३) कफज। (४) सन्निपातज।
(५) रक्तज। (६) सहज।

नोट—आयुर्वेद में छै प्रकारकी बवासीर लिखी हैं; लेकिन हिकमत में खूनी और बादी—दो तरहकी ही लिखी हैं और सर्व साधारण भी दो तरहकी ही कहते हैं।

अर्श या बवासीर के सामान्य लक्षण।

साधारणतया अर्श या बवासीर में क़ब्ज़,अजीर्ण, पाख़ाना सख़्ती से होना और उस समय दर्द होना तथा ख़ून गिरना,—ये लक्षण होते हैं। ख़ून किसीके दो-चार बूँद गिरता है,किसीके दो-चार तोले और किसी-किसीके ३०।४० तोले तक। जब बीमारी ज़ोर पर होती है, तब उकरू बैठने या पेशाब करने के समय भी खून गिरने लगता है,इसीसे किसी-किसी की धोती पीछेसे ख़ूनसे तर हो जाती है।

वातज अर्शके कारण ।

जो मनुष्य कड़वा, कसैला, चरपरा, रूखा, ठण्डा और बहुतही हलका भोजन करता है, बहुतही थोड़ा खाता है, भोजनके समय भोजन नहीं करता, तेज़ शराब पीता है, बहुतही ज़ियादा स्त्री-प्रसंग करता है, उपवास या व्रत करता है, ठण्डे देशमें रहता है, जाड़ेमें गरम नहीं रहता, अधिक दण्ड-मुद्गर फिरता और कसरत करता है, शोक करता और हवा तथा धूपमें फिरता है,—उसका वायु कुपित होकर, "वातज बवासीर" उत्पन्न करता है।

नोट—हारीत मुनिने नमकीन और विदाही पदार्थोंका सेवन, मलमूत्र और हवा का रोकना प्रभृति कारण वातज अर्श के अधिक लिखे हैं।

वातज अर्शका समय ।

वातज बवासीरके पैदा होने या ज़ोर पकड़नेका समय हेमन्तकाल या जाड़ेका मौसम है।

वातज अर्शके लक्षण ।

वायुकी अधिकतासे गुदाके अंकुर या मस्से सूखे होते हैं। उनसे स्राव नहीं होता यानी खून वगैरः नहीं गिरता, परन्तु एक तरहकी पीड़ा होती रहती है। इस बवासीरके मस्से मुरझाये हुए, काले, लाल, टेढ़े, कठोर, खरदरे, बाँके, तीखे, फटे मुँहके, कंदूरी, बेर, खजूर या कपासके फलोंके जैसे होते हैं। ये एकसे नहीं होते; कोई सरसोंके समान और कोई कदम्बके फूलों-जैसे होते हैं। सिर,पसवाड़े, कन्धे, कमर, जाँघ और पेड़ूमें वेदना होती है। छींक और डकार नहीं आती, हृदय पकड़ासा मालूम होता और पेट भारी रहता है। अरुचि, खाँसी, श्वास, कानोंमें आवाज़ होना, कभी अन्नका पचना

और कभी न पचना और भ्रम,—ये उपद्रव होते हैं। इस बवासीर-वालेके पत्थर-समान कड़ा, थोड़ा,आवाज़के साथ,वातकी प्रवाहिकाके लक्षणों वाला, शूल-सहित, झागदार और चिकना दस्त धीरे-धीरे होता है। इस बवासीर वालेके चमड़े का रङ्ग तथा पाख़ाना, पेशाब, आँखें और मुख ये कालेसे हो जाते हैं। वायु-गोला, तापतिल्ली और अष्ठीला नामक वायुकी गाँठ—इन रोगोंके उपद्रव इस वातज अर्श में होते हैं।

पित्तज अर्शके कारण।

जो मनुष्य कड़वा, खट्टा और नमकीन रस ज़ियादा सेवन करता है, अधिक दण्ड-कसरत करता है, आगके सामने या धूपमें रहता है, बहुत मिहनत करता है, गरम देशमें रहता है, क्रोध करता है, शराब पीता है, पराया धन या उन्नति देखकर जलता है, दाह-कारक और गरम पदार्थ खाता-पीता है—उसको "पित्तकी बवासीर" होती है।

पित्तज बवासीरका समय।

पित्तकी बवासीर गरमीके मौसममें होती या ज़ोर करती है।

पित्तज बावासीर के लक्षण।

पित्त की बवासीर वाले के मस्सों के मुँह नीले, लाल, पीले और सफेदी लिये होते हैं। उन मस्सों से महीन धार से खून चूता और खून में बदबू आती है। मस्से महीन, कोमल और शिथिल होते हैं। उनका आकार तोते की जीभ, कलेजा और जोंक के मुख के समान होता है। देहमें दाह होता है; गुदा पक जाती है; ज्वर, पसीना, प्यास, मूर्च्छा,अरुचि और मोह ये उपद्रव होते हैं। मस्सों

है पतला-पतला खून चूता है और कभी-कभी वे पक जाते हैं। नीला पीला या लाल रंगका मल-भेद होता है। रोगीका चमड़ा,नाखून और नेत्र वगैरः हरतालके समान हरे, पीले और हल्दीके जैसे हो जाते हैं।

कफज बवासीर के कारण।

जो मनुष्य मीठे, चिकने, शीतल, खारी, खट्टे और भारी पदार्थ खाता है, व्यायाम—मिहनत नहीं करता, दिन में सोता, गद्दे-तकियों पर पड़ा रहता, पूरब की हवा खाता, शीतल देश में रहता, शीतकालमें अपने तईं गरम नहीं रखता और चिन्ता को पास नहीं आने देता,—उसे "कफकी बवासीर" होती है।

कफकी बवासीर का समय।

कफ की बवासीर शीतकाल और शीत प्रधान देश में ज़ोर करती या पैदा होती है।

कफज बवासीर के लक्षण।

इस बवासीरवाले के मस्से महामूल यानी गहरी जड़वाले,कठिन, मन्दी-मन्दी पीड़ा करनेवाले, सफेद, लम्बे, मोटे, चिकने, कड़े, गोल, भारी, स्थिर, गाढ़े, कफ से लिहसे और मणि के समान साफ चमकदार होते हैं। उनमें खुजली बहुत होती और वह प्यारी लगती है। मस्से करील या कटहर के काँटों के समान अथवा गाय के थनों के सदृश होते हैं। उनकी वजह से पेट में अफारा तथा गुदा,मूल-स्थान और नाभि में पीड़ा होती है। श्वास, खाँसी, ख़ाली ओकारी, अरुचि, पीनस, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्, शीत-ज्वर, नपुंसकता, अग्निमान्द्य, अतिसार और संग्रहणी आदि रोग होते हैं। प्रवाहिका के लक्षण-युक्त कफ-मिला चर्बी की तरहका बहुतसा मल आता है।

मस्सों में से खून नहीं गिरता। गाढ़ा मल होने से भी मस्से नहीं फूटते। शरीर का रंग चिकना और पीला होता है। नाखून और मल-मूत्र आदि भी चिकने और पाण्डु वर्ण—पीले से होते हैं।

द्वन्द्वज बवासीर के कारण।

दो दो दोषों के कारण और लक्षण मिलें, तो द्वन्द्वज बवासीर समझनी चाहिये।

त्रिदोषज बवासीर के कारण।

अलग-अलग वातादि दोषों की बवासीरों के जो कारण लिखे हैं, वे सब त्रिदोष की बवासीर के कारण हैं। सहज बवासीर के लक्षण इस से मिलते हैं।

सन्निपातज और सहज बवासीर के लक्षण।

जिस में वात, पित्त और कफ की बवासीरों के लक्षण एकत्र मिलें, वही त्रिदोषज या सन्निपातज बवासीर है। इसके जो लक्षण हैं, वही सहज बवासीर के लक्षण हैं।

सहज अर्श के लक्षण।*

अगर माँ या बाप को बवासीर हो और पुत्र के जन्म-समय में उनके द्वारा अर्श रोग पैदा करनेवाले आहार विहार सेवन किये गये हों; तो उनकी वजहसे पुत्रको भी बवासीर हो जाती है। उसी को "सहज अर्श" कहते हैं। इस रोगमें मस्से कठोर,लाल रंगके या पीलेसे

*सहज या स्वाभाविक अर्श को सर्वसाधारण जन्म की या खानदानी बवासीर कहते हैं। वह असाध्य समझी जाती है।

होते हैं और उनका मुख भीतर की तरफ रहता है। इस रोगवाला दुबला,कम खानेवाला,मन्दी आवाज़वाला और क्रोधी होता है। उस के सारे शरीर में नस-जाल दीखता है। उसके आँख,कान,नाक और सिर में पीड़ा रहती है; पेट में गुड़गुड़ाहट की आवाज़ होती है; आँतें गूँजती हैं तथा अरुचि और मन्दाग्नि आदि उपद्रव भी होते हैं। अगर रोगी के शरीर में वायु की अधिकता होती है, तो सहज बवासीर में वातज अर्श के; अगर पित्त की अधिकता होती है तो पित्तज अर्श के; और कफ की अधिकता होती है तो कफज अर्श के लक्षण भी मिलते हैं।

रक्तार्श के कारण।

पित्तज अर्श के जो कारण हैं, वही सब कारण रक्तार्श या खूनी बवासीर के हैं; अर्थात् जिन कारणों से पित्त की बवासीर होती है, उन्हीं कारणों से खून की बवासीर होती है।

रक्तार्श के लक्षण।

रक्तार्श में मांस के अंकुर या मस्से चिरमिटी के समान लाल-लाल और बड़ के अङ्कुरों-जैसे होते हैं। कड़ा मल निकलने से मस्से दब जाते हैं और उनसे गरम और खराब खून निकलता है। खून के बहुतायत से गिरने के कारण, मनुष्य वर्षाकाल के मेंडक के समान पीला हो जाता है। चमड़ा कठोर हो जाता, नाड़ी शिथिल चलती, खट्टी और शीतल चीज़ों की इच्छा से रोगी दुखी रहता है। रोगी हीनवर्ण, बलहीन, उत्साह-रहित और पराक्रमशून्य हो जाता है एवं सारी इन्द्रियाँ व्याकुल हो जाती हैं। दस्त में रूखा,कड़ा और काला मल निकलता है। अपान वायु—गुदाकी हवा—नहीं निकलती,—ये लक्षण रुधिर या खून की बवासीर के हैं।

वातानुबन्धीय रक्तार्श।

रक्तज अर्श के साथ वातज अर्श के लक्षण प्रकाशित होने से उसे "वातानुबन्धीय रक्तार्श" कहते हैं। अगर रक्तज बवासीरमें वात का अनुबन्ध होता है, तो मस्सों से खून थोड़ा, लाल और झागदार निकलता है। कमर, जाँघ और गुदामें दर्द होता है। अगर कम-ज़ोरी ज़ियादा हो जाय और रूखापन भी हो—तो समझो कि, रक्तार्शसे वात या वायुका सम्बन्ध है।*

कफानुबन्धीय रक्तार्श।

जिस रोगी को शिथिल, सफ़ेद, पीला, चिकना, भारी और शीतल दस्त हो; खून गाढ़ा,ताँतुदार, पीला और बुलबुलेदार निकले और गुदा बबूले-युक्त और गीली सी मालूम होती हो, तो समझो रक्तार्श से कफका सम्बन्ध है।

नोट—पित्तके अनुबन्ध की खूनी बवासीर के लक्षण इस वजहसे नहीं लिखे कि, रक्त और पित्त के लक्षण प्रायः एक से होते हैं।

बवासीरके पूर्वरूप।

अगर अन्न अच्छी तरह न पचे, वह कूखमें रहा आवे, देहमें दुर्बलता हो, कूखमें अफारा हो, अग्निमन्द हो, डकार बहुत आवें, जाँघोंमें पीड़ा हो,दस्त थोड़ा-थोड़ा हो, संग्रहणी और पाण्डुरोगके से लक्षण नज़र आवें और उदर-रोगकी शंका हो; तो समझो कि, इस मनुष्यके बवासीर रोग होगा।

* वातानुबन्धीय रक्तार्श का सीधी भाषामें यह मतलब है कि,बवासीर तो खून के कुपित होनेसे हुई हो; पर उसमें वायुके कुपित होनेके भी लक्षण हों। इसी तरह कफानुबन्धीय रक्तार्श का सीधी भाषामें यही मतलब है कि, बवासीर तो खूनसे हुई हो, पर उस का कफ से सम्बन्ध हो; यानी उस में कफ की बवासीर के लक्षण भी पाये जाते हों।

प्रश्न—केवल गुदा में दोषों के कुपित होने से बवासीर रोग होता है, फिर रोगी की सारी देह दुर्बल और काली कैसे हो जाती है ?

उत्तर—गुदा की तीन आँटों में मस्से पैदा होने से पांच प्रकार के वायु, पाँच प्रकार के पित्त और पांच प्रकार के कफ कुपित होते हैं। इस से बवासीर रोग अनेक प्रकारके दुःख और व्याधियाँ करके, सारी देह को दुर्बल और काली कर देता तथा कृच्छ्रसाध्य और कष्टसाध्य हो जाता है।
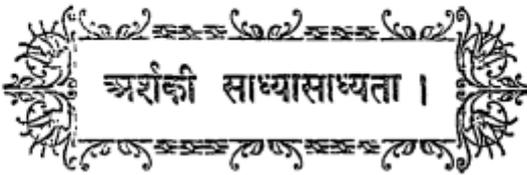
सुखसाध्य अर्श के लक्षण ।

जो बवासीर बाहर के आँटे में होती है, जिसमें तीन में से किसी एक दोष की प्रधानता होती है और जो एक वर्ष से काम की होती है, वह बवासीर सुखसाध्य होती है ; यानी आसानी से आराम हो जाती है ।

कृच्छ्रसाध्य अर्श के लक्षण ।

जो बवासीर दो दोषों से पैदा होती है, जो दूसरे आँटे में होती है, जिसे पैदा हुए एक साल हो जाता है ; वह बवासीर कृच्छ्रसाध्य होती है ; यानी कठिनाई से आराम होती है ; पर आराम हो जाती है ; बशर्ते कि वैद्य अनुभवी और विद्वान् हो तथा रोगी और परिचारक-रोगीकी सेवा-शुश्रूषा करने वाला—वैद्यकी आज्ञा पर चलने वाले हों ।

जो बवासीर बाहरके आँटे में दो-दोष-प्रधान होती है और दूसरे आँटे में एक-दोष प्रधान होती है, वह भी कृच्छ्रसाध्य होती है ।

याप्य अर्श के लक्षण

अगर बवासीर तो असाध्य हो, पर रोगी की उम्र बाक़ी हो ; वैद्य औषधि, परिचारक और रोगी जैसे होने चाहिएँ वैसे ही हों * और रोगी की जठराग्नि प्रदीप्त हो, तो उसे "याप्य" समझना चाहिए ; यानी वह बड़ी-बड़ी कठिनाइयों से किसी तरह आराम हो जायगी। अगर इसके विपरीत बवासीर असाध्य हो, रोगी की उम्र बाक़ी न हो, रोगी और परिचारक वैद्यकी आज्ञा पर चलने वाले न हों, जैसी दवा दरकार हो वैसी दवा प्रस्तुत न की जा सके तथा रोगीकी अग्नि क़तई मारी गई हो, उससे कुछ भी खाया न जाता हो, भूख लगती ही न हो ; तो वैद्यको वैसे रोगीका इलाज हाथ में न लेना चाहिये ; क्योंकि ऐसे रोगीसे मुफ़्तमें बदनामी हो होगी।

---

* वैद्य,रोगी,औषधि और रोगीकी सेवा करनेवाला—ये सिद्धि प्राप्त करनेके लिये 'चिकित्साके चार पाद' हैं। अगर ये चारों ठीक हों;तो कदाचित आराम हो सकता है।

वैद्य—जिसने गुरु से शास्त्र पढ़ा हो, दूसरे वृद्ध वैद्य की चिकित्सा देखी हो, आप को स्वयं अनुभव हो, जिसका इलाज करता हो वही आराम हो जाता हो, पवित्र रहने वाला और साहसी हो तथा उत्तमोत्तम औषधियाँ और रसादिक तैयार रखता हो, जिसकी बुद्धि तेज हो, जो बुद्धिमान और लोक-व्यवहार जानने वाला हो, प्रिय और सत्य वचन बोलने वाला और धर्मात्मा हो, वही वैद्य अच्छा होता है। ऐसा वैद्य असाध्य को साधन कर सकता है। जो वैद्य मैले वस्त्रों वाला कड़वा बोलने वाला, अभिमानी और बिना बुलाये रोगी के यहाँ जाने वाला हो, वह वैद्य निकम्मा होता है।

रोगी—उम्रवाला, बलवान, साध्य, धनवान, ज्ञानी, आस्तिक और वैद्य की आज्ञा मानने वाला रोगी अच्छा होता है।

औषधि—उत्तम स्थान में पैदा हुई, शुभ दिन में उखाड़ी गई, थोड़ी सी देने से बहुत गुण करने वाली, उत्तम सूरत और उत्तम रसवाली औषधि अच्छी होती है।

परिचारक—नयी उम्र का जवान, ताक़तवर वैद्य की आज्ञानुसार काम करने वाला,रोगीका भला चाहने वाला और आलस्य-रहित परिचारक अच्छा होता है।

असाध्य अर्श के लक्षण ।

जो ववासीर जन्म से होती है, जो तीनों दोषों से होती है और तीसरे या अन्त के आँटेमें होती है, वह असाध्य होती है ; यानी वह आराम नहीं हो सकती,

हारीत मुनि कहते हैं :—

> बाह्यतः सुखसाध्यः स्यान्मध्ये कष्टेन सिध्यति ।
> असाध्योऽन्तर्वली जातो गुदजो भिषजांवरः ॥

गुदाके बाहर और भीतर तीन वलि या आँटे होते हैं। वही तीनों आँटे ववासीर के स्थान हैं। उन्हीं में मस्से होते हैं। बाहर के आंट की ववासीर सुखसाध्य, बीचके आँटेकी कष्टसाध्य और गुदा की अन्तिम वलिवाली असाध्य होती है।

गुदा के बाहरी आँटे के मस्से वैद्य को दीख सकते हैं, अतः वह उन्हें क्षार प्रभृति से जलाकर या तेल मरहम आदि से गलाकर आराम कर सकता है ; पर भीतर के आँटों के मस्से दीखते नहीं ; वहाँ दवा लगायी जा नहीं सकतीं; इससे वह सहज में आराम हो भी नहीं सकते।

और भी साध्यासाध्य के लक्षण ।

उपद्रव-रहित ववासीर साध्य है और उपद्रव-सहित-असाध्य है।

ववासीर के उपद्रव ।

हारीत लिखते हैं,—अगर हाथ, पाँव,मुख, नाभि, लिंग और गुदा में सूजन और शोष हो; ज्वर हो,श्वास हो, अँधेरी आवे, वमन होती हों, मोह—बेहोशी हो, हृदय में दर्द हो, पसली में शूल हो, अरुचि हो, मल की रुकावट या क़ब्ज़ हो अथवा अतिसार हो तो समझो कि,ववासीर-रोगी नहीं बचेगा ; क्योंकि ये बारह उपद्रव हैं। ऊपर लिख आये हैं, कि सोपद्रव यानी उपद्रव-सहित ववासीर आराम नहीं हो सकती।

उपद्रवोंके कारण असाध्यता।

"माधव निदान"में लिखा है:—जिसके हाथ, पैर, गुदा, नाभि, मुख और फोतोंमें सूजन हो,हृदय और पसवाड़ोंमें पीड़ा हो, इन्द्रियों और मनमें मोह हो, वमन होती हों, अङ्गोंमें वेदना हो, ज्वर चढ़ा हो, प्यासका ज़ोर हो, गुदा पक गई हो ; यानी उस पर पीले-पीले फोड़े हो गये हों, अरुचि हो, शूल चलते हों, खून ज़ोरसे गिरता हो, सूजन और अतिसार हो—वह रोगी असाध्य है। उसे बवासीर नाश करके छोड़ेगा।

"वैद्यविनोद" में लिखा है :—

शोफातिसारौ वमिरंगसादस्तृष्णा ज्वरोऽरोचक वह्निमान्द्यम्।
गुदस्यपाकों हृदयेतिशूलो ह्यर्शोविकारी विजहाति जीवम्॥

सूजन, अतिसार, वमन, अङ्गोंकी शिथिलता, प्यास, ज्वर, अरुचि, मन्दाग्नि, गुदाका पकाव और हृदयमें दर्द—ये लक्षण जिस बवासीर वालेमें हों, वह निश्चयही मर जाता है।

अर्श के अरिष्ट लक्षण

जिस बवासीर वाले के हाथ, पैर, मुख, नाभि, गुदा, फ़ोते, हृदय और पसवाड़ों में सूजन या वरम हो, वह नहीं बचेगा। जिस बवासीर रोगीके हृदय और पसवाड़ोंमें शूल चलते हों, बेहोशी हो,वमन होती हों, सारे शरीर में दर्द हो, ज्वर और प्यास का ज़ोर हो और गुदा में ज़ख्म हों—वह रोगी मर जायगा।

जिस रोगी को प्यास बहुत हो, अन्न पर रुचि न हो, शूल चलते हों, मस्सों से बहुत ही ज़ियादा खून गिरता हो, शरीर में सूजन हो और दस्त लगते हों,—वह अर्श रोगी मर जायगा।

डाक्टरी मतसे अर्शके कारण और लक्षण।

ऐलोपैथिक मत।

बहुत घोड़े की सवारी करने, बारम्बार दस्तावर दवा सेवन करने तथा पेशाब की इन्द्रिय की पीड़ा से अर्श या बवासीर रोग होता है।

गुदा के नीचे जो ख़ून को बहाने वाली नाड़ी—नस है, उसी में किसी प्रकार व्यतिक्रम या गड़बड़ होने को "बवासीर" कहते हैं।

बवासीर दो तरह की होती हैं :—

(१) इण्टरनैल=भीतर की=आभ्यन्तरार्श।

(२) एक्सटरनैल=बाहर की=बाह्यार्श।

और भेद।

(१) ख़ूनी। (२) बादी।

ख़ूनी बवासीर।

अगर सुर्ख़ रंगके मस्से होकर ख़ून पड़ता हो, तो उसे "ख़ूनी बवासीर" कहते हैं। अगर पीड़ा, खाज और सूजन ज़ियादा हो, तो उसे "बादी बवासीर" कहते हैं। दस्त की क़ब्ज़ियत, इसका प्रधान लक्षण है।

होमियोपैथी मत।

अनेक लोगों का विश्वास है कि, निकम्मे बैठे रहने या दस्तक़ब्ज़ होने से बवासीर होती है। इस में गुदा के ऊपर या भीतर मस्से हो जाते हैं। उन में से कभी-कभी ख़ून निकलता है। इस रक्तस्राव या ख़ून गिरने के लिये कोई समय नियत नहीं है; जब चाहे गिरने लगता है।